स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी पत्रकारिता में भाषा प्रयोग के विविध रूपों का अध्ययन

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी० फिल् की
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

निर्देशक
डा. शैल पाण्डेय (रीडर)

अनुसंधित्सु
विमला मिश्रा

हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

2002 ई०

शोध कार्य का प्रारूप

विषय - "स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी पत्रकारिता में भाषा प्रयोग के विविध रूपों का अध्ययन"

भूमिका :-

(1) प्रथम अध्याय– हिन्दी पत्रकारिता और स्वतत्रता –

(1) अभिव्यक्ति की स्वतत्रता (आजादी का बीज–वपन काल)

(2) 1857 की क्रान्ति और पत्रकारिता

(3) 'पयामें–आजादी' की भूमिका

(4) भारतेन्दु युग

(5) बग–भग आन्दोलन

(6) तिलक युग

(7) गॉधी युग

(8) गुप्त प्रकाशन (रण-भेरी)

(2). द्वितीय अध्याय– स्वातत्रयोत्तर भारत मे हिन्दी पत्रकारिता का स्वरूप –

(क) कालगत– दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक।

(ख) विषयगत– राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, बाल–साहित्य, नारी–विषयक, फिल्म, अपराध, खेल, धर्म, शिक्षा, रोजगार, नेत्रहीनो (ब्रेल) के लिए, विज्ञान, सरकारी नीति, स्वास्थ्य, शोध, कृषि और साहित्यिक पत्रिकाए– साहित्यकी विधाए– कविता, नाटक, सस्मरण, साक्षात्कार, डायरी, पुस्तक–परिचय, कहानी, उपन्यास, आलोचना लेख।

(3). तृतीय अध्याय – पत्रकारिता और भाषा का सम्बन्ध –

दैनिक समाचार पत्रो की भाषा के विविध रूप –

(1) राजनीतिक और सामाजिक समाचारो की भाषा

(2) खेल-जगत के समाचारो की भाषा

(3) बाजार-भाव समाचारो की भाषा

(4) सपादकीय-लेख (पृष्ठ) की भाषा

(5) कार्टूनो की भाषा

(6) पाठको के पत्रो की भाषा

(7) साप्ताहिक-विशेषाको की भाषा

(8) साहित्यिक-खड की भाषा

(9) फिल्म-जगत के समाचारो की भाषा

(10) लेखो (फीचर) की भाषा

(11) समीक्षा की भाषा

(12) साप्ताहिक भाविष्य की भाषा

<u>समाचार पत्रो की भाषा की विशेषताएं–</u>

(1) विशुद्धता पर बल

(2) जनोन्मुखता

(3) प्रयोगधर्मिता

(4) अनुदित भाषा

(5) शिथिल एव अव्यवस्थित भाषा

(6) विविध भाषा रूपो का प्रयोग

(4). चतुर्थ अध्याय– विज्ञापन की भाषा –

(1) विज्ञापन की परिभाषा तथा अर्थ

(2) विज्ञापन का स्वरूप

(3) जनसचार मे विज्ञापन की भूमिका

(4) विज्ञापन की सरचना

(5) विज्ञापन कापी

(6) विज्ञापन और पत्रकारिता का सम्बन्ध

(7) विज्ञापन के गुण

(8) विज्ञापन के प्रकार

(9) विज्ञापन के कार्य

(10) विज्ञापन और समाचार मे अन्तर

(11) हिन्दी विज्ञापन और उनकी भाषा

(5) पंचम अध्याय– स्वातंत्र्योत्तर भारत मे सचार माध्यम और भाषा –

(क) परम्परागत सचार माध्यम–

(1) मौखिक प्रचार

(2) लिखित प्रचार

(3) मेला

(4) नाटक (नुक्कड नाटक, नौटकी, तमाशा)

(5) कठपुतली

(ख) गैर परम्परागत (आधुनिक) संचार माध्यम

(1) समाचार पत्र

(2) रेडियो (आकाशवाणी)

(3) टी वी (दूरदर्शन)

(4) टेलीफोन (दूरभाष)

(5) कम्प्यूटर (इंटरनेट, स्कैन-सेवा)

(6) वीडियो पत्रिका

(7) फैक्स

(8) पुस्तके

(9) फिल्म

(10) वृत्तचित्र

(11) प्रदर्शनी

(12) विभिन्न माध्यमो द्वारा विज्ञापन

उपसंहार–

सदर्भ ग्रन्थ सूची

भूमिका

'पत्रकारिता' बचपन से ही मुझे आकर्षित करती रही। स्नातकोत्तर कक्षाओ मे अध्ययन करते समय ही मेरे कुछ लेख समाचारपत्रो मे प्रकाशित हुए, जिससे पत्रकारिता के प्रति मेरे मन मे उत्साह बना रहा। मेरे मन मे यह इच्छा दबी हुयी थी कि यदि मुझे शोध करने का अवसर प्राप्त हुआ, तो मेरा विषय पत्रकारिता सम्बन्धी ही होगा। मैने अपनी इच्छा गुरूजी डा0 शैल पाण्डेल को बतायी और मुझे यह विषय "स्वातत्र्योत्तर हिदी पत्रकारिता मे भाषा प्रयोग के विविध रूपो का अध्ययन" (इस विषय मे 1947 से 1997 तक का काल लिया गया है) प्रदान किया गया, जिससे मेरी इच्छा पूर्ण हुई।

हिदी पत्रकारिता को शोध का विषय चुनने का दो प्रमुख कारण था, प्रथम पत्रकारिता मे मेरी रूचि, और दूसरा दिन–प्रतिदिन इस विषय का महत्व बढने के बावजूद हिदी पत्रकारिता मे विशेष शोध कार्य का अभाव। स्वतत्रता का लम्बा अन्तराल होने के बावजूद हिदी पत्रकारिता पर गिनी चुनी पुस्तके ही उपलब्ध है– जिनमे प्रमुख है– हिदी पत्रकारिता (डा0 कृष्ण बिहारी मिश्र), हिदी पत्रकारिता विविध आयाम (स0 डा0 वेदप्रताप वैदिक), हिदी पत्रकारिता . विविध परिदृश्य (सजीव भानावत), आधुनिक पत्रकारिता (डा0 अर्जुन तिवारी) साहित्यिक पत्रकारिता (डा0 राम मोहन पठक), समकालीन पत्रकारिता (स0 राजकिशोर), समाचार पत्रो की भाषा (डा0 माणिक मृगेश)।

पत्रकारिता की इन पुस्तकें मे हिदी पत्रकारिता का इतिहास, हिदी पत्रकारिता के रूप, तकनीकी और व्यावसायिक पक्ष और साहित्यिक पत्रकारिता के अन्तर्गत स्वतत्रता पूर्व साहित्यिक पत्रकारिता का वर्णन है।

स्वातत्र्योत्तर साहित्यिक पत्रकारिता, पत्रकारिता का स्वरूप, भाषा प्रयोग के विविध रूप, विज्ञापन का महत्व, विज्ञापन की भाषा और जनसचार माध्यमो के महत्व आदि विषयो को दृष्टि मे रखते हुए मैंने प्रस्तुत शोध कार्य किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पांच अध्यायो मे विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय **'हिंदी पत्रकारिता और स्वतंत्रता'** मे भारत मे समाचार पत्र के प्रकाशन, अन्य भाषाओ मे समाचार पत्रो का प्रकाशन और हिदी के प्रथम समाचार 'उदन्त मार्तण्ड' के प्रकाशन की स्थितियो पर प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही किस प्रकार हिदी पत्रकारिता प्रारम्भ से ही आजादी के आन्दोलन जुडी रही। सभी राजनीतिक नेता, क्रान्तिकारी किसी न किसी पत्र–पत्रिका से जुडे हुए थे। आजादी के प्रति इतना गहरा लगाव था कि पत्रकारिता का उद्देश्य ही आजादी बन गया था। विभिन दमनकारी कानूनो, आर्थिक दण्डो, कारावास आदि के बावजूद हिदी पत्रकारिता विकसित होती रही, और अपने लक्ष्य 'आजादी' को प्राप्त करने मे सफल रही।

प्रस्तुत शोध–प्रबध के द्वितीय अध्याय **'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप'** मे स्वातत्र्योत्तर हिंदी पत्रकारिता मे समाचार पत्र–पत्रिकाओ का प्रकाशन अवधि और विषय वस्तु के आधार पर विभाजन किया गया है। प्रथम विभाजन कालगत मे दैनिक साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक मे विभाजित किया गया है, और विषय वस्तु के आधार पर राजनीतिक आर्थिक सामाजिक बाल, नारी, अपराध, फिल्म, कृषि, नेत्रहीनो की पत्रिका, विज्ञान, धार्मिक, स्वास्थ्य, खेल, साहित्यिक आदि भागों मे विभाजित किया है। इसी के अन्तर्गत साहित्यिक पत्रकारिता का स्वतंत्रता पूर्व और स्वातत्र्योत्तर साहित्यिक पत्रकारिता के स्वरूप का विवेचन किया गया है। साहित्यिक पत्रिकाओ मे प्रकाशित विभिन्न

विधाओ – कविता, नाटक, सस्मरण, साक्षात्कार, डायरी, पुस्तक–समीक्षा, कहानी, उपन्यास, आलोचना, लेख के स्वरूप का विवेचन किया गया है।

शोध–प्रबन्ध के तृतीय अध्याय **'हिंदी पत्रकारिता और भाषा का सम्बन्ध'** मे पत्रकारिता की भाषा से सम्बन्ध का विवेचन करते हुए दैनिक समाचार पत्रो की भाषा के विविध रूपो का विवेचन किया गया है। आज की पत्रकारिता मे दैनिक पत्रो की भाषा मे ही क्षण–क्षण परिवर्तन होता रहता है। पत्रकारिता सम्बधी सभी समस्याओ का सामना सर्व प्रथम दैनिक पत्रों के पत्रकार ही करते हैं।

शोध प्रबन्ध के चतुर्थ अध्याय **"विज्ञापन की भाषा"** मे हिदी विज्ञापन की परिभाषा अर्थ, विज्ञापन का स्वरूप, जनसचार मे विज्ञापन की भूमिका, विज्ञापन की सरचना, विज्ञापन कापी, विज्ञापन और पत्रकारिता का सम्बन्ध, विज्ञापन की भाषा के गुण, विज्ञापन के प्रकार, विज्ञापन के कार्य, विज्ञापन और समाचार मे अन्तर हिदी विज्ञापन और उनकी भाषा की विशेषता का विवेचन किया गया हैं।

शोध–प्रबन्ध के पचम अध्याय "स्वातत्र्योत्तर भारत में संचार माध्यम और भाषा" मे स्वातत्र्योत्तर भारत मे परम्परागत संचार माध्यम और गैर परम्परागत (आधुनिक) सचार माध्यमो और उनकी भाषा के स्वरूप का विवेचन किया गया है।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध के पूर्ण होने मे मेरी गुरू डा0 शैल पाण्डेय जी का स्नेह और विद्वता पूर्ण निर्देशन का अविस्मरणीय योगदान रहा है तथा मैं विभाग के प्रो0 डा0 सत्यप्रकाश मिश्र जी की विशेष आभारी हूं जिन्होंने समय–समय पर

अपने बहुमूल्य सुझावो से मेरा मार्ग दर्शन किया। इसके साथ मैं हिदी साहित्य सम्मेलन सग्रहालय के सभी कर्मचारियो की भी आभारी हूँ, जहा से शोध कार्य मे पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। मैं अपने मित्रो, स्वजनो की आभारी हूँ, जिन्होने हर प्रकार से सहयोग कर, मेरा उत्साह वर्द्धन किया।

विमला मिश्रा

विमला मिश्रा

प्रथम अध्याय

हिन्दी पत्रकारिता और स्वतंत्रता -

(1) अभिव्यक्ति की स्वतत्रता (आजादी का बीज–वपन काल)

(2) 1857 की क्रान्ति और पत्रकारिता

(3) 'पयामे–आजादी' की भूमिका

(4) भारतेन्दु युग

(5) बग–भग आन्दोलन

(6) तिलक युग

(7) गॉधी युग

(8) गुप्त प्रकाशन (रण भेरी)

प्रथम अध्याय

हिन्दी पत्रकारिता और स्वतंत्रताः–

हिन्दी पत्रकारिता और स्वतत्रता (आजादी आन्दोलन) एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। हिन्दी के पहले पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' के प्रकाशन के पूर्व बगाल मे नवजागरण के जनक 'राजा राम मोहन राय' ने पत्र 'बंगदूत' से भारतीय पत्रकारिता का शुभारम्भ किया, जिसे हिन्दी भाषी क्षेत्र मे प्रसारित करने का दायित्व पूर्ण जिम्मेदारी से हिन्दी 'नवजागरण' के जनक 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' ने पूरा किया। 30 मई सन् 1826 ई॰ का दिन हिन्दी पत्रकारिता के लिए स्वर्णिम दिन के रूप मे सदैव स्मरणीय रहेगा, जब कलकत्ता मे प॰ 'जुगल किशोर' 'शुक्ल' के सम्पादन मे 'उदन्त मार्तण्ड' नामक साप्ताहिक हिन्दी का पहला समाचार पत्र प्रकाशित हुआ। यद्यपि इस पत्र को लगभग डेढ वर्ष की अल्पायु ही प्राप्त हुई, तथापि यह पत्र हिन्दी पत्रकारिता के लिए प्रभात की पहली किरण के समान सिद्ध हुआ। इसके बाद सरकारी विरोध के बावजूद हिन्दी समाचार पत्रो की कभी न खत्म होने वाली परम्परा की शुरूआत हुई, जिसकी गगोत्री के समान क्षीण धारा ने मैदान मे आकर विशाल गगा का रूप धारण कर लिया।

हिन्दी समाचार पत्र के पूर्व अंग्रेजी के 'बगाल–गजट' (जेम्स आगस्टस हिक्की) और 'बगदूत' (बगला) 'मिरातुल–अखबार' (स॰ राजाराम मोहन राय) मे हिन्दी भाषी क्षेत्र की भावनाओ को अभिव्यक्ति नहीं प्राप्त थी, इस कमी को महसूस कर प॰ जुगल किशोर शुक्ल ने 'उदन्त मार्तण्ड' के प्रकाशन का बीडा उठाया, जिसने ज्ञान के प्रकाश को हिन्दी क्षेत्र में फैलाया, जिससे स्वतत्रता आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार करने मे सहायता मिली। 1

---

1. पत्रकारिता के विविध परिदृश्य, संजीव भानावत पृष्ठ 46

(1) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता – (आजादी का बीज–वपन काल):–

सामन्तवादी तानाशाही परिवेश और अग्रेजो के निरकुश शासन के बीच समाचार पत्र का प्रकाशन एक नूतन घटना थी। अभिव्यक्ति की स्वतत्रता से परिचित कराने मे समाचार पत्र अहम भूमिका निभाते है। "किसी भी राष्ट्र की आजादी एव उसकी अखण्डता, प्रभुसत्ता तथा सार्वभौमिकता को बनाये रखने की प्राथमिक शर्त है, विचार अभिव्यक्ति की स्वतत्रता। चाहे वह फ्रास की राज्यक्रान्ति हो अथवा भारत की आजादी की लडाई, सभी मे लेखको, विचारको, पत्रकारो तथा साहित्यकारो ने अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वाह किया है। देश की चेतना को झकृत करने, निराश हृदयो मे आशा का सचार करने तथा जड व मृतप्राय भावनाओ मे क्रान्ति बीज अकुरित करने मे पत्र–पत्रिकाओ की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है।"(1)

पत्रकारिता के महत्व को 'अकबर इलाहाबादी' के इस शेर से अच्छी तरह समझा जा सकता है–.

"खीचो न कमानो को, न तलवार निकालो
जब तोप मुकाबिल हो, तो अखबार निकालो" 2

भारत मे ब्रिटिश सरकार का शासन स्थापित होने के साथ ही ब्रिटिश सरकार इस खतरे के प्रति सचेत थी, जो समाचार–पत्रो की स्वतत्रता को विभिन्न दमनकारी कानूनो के द्वारा प्रतिबधित करने का प्रयास करती रही। किन्तु ऐसे सभी कानून आजादी के सैलाब को दबाने के बजाय, उसे बढाने में ही सहायक रहे।

यह भारतीय पत्रकारो की अदम्य जिजीविषा एव समर्पित आस्था का ही परिणाम था कि ब्रिटिश सरकार की दमनपूर्ण नीति, सरकारी सरक्षण तथा प्रोत्साहन का अभाव, आर्थिक संकट, सीमित साधन, अल्प ग्राहक आदि विभिन्न समस्याओ से जूझते हुए भी उन्होने पत्रकारिता को एक स्वस्थ दिशा मे गति प्रदान की।

1.2. पत्रकारिता के विविध परिदृश्य, संजीव भानावत पृष्ठ 46

देशभक्ति, जनजागरण के महान उद्देश्यो के लिए समर्पित तत्कालीन पत्रकारिता का इतिहास वास्तव मे आजादी के आन्दोलन का इतिहास है। स्वाधीनता सग्राम मे विभिन्न पत्र–पत्रिकाओ ने प्राणवायु का सचार किया।

भारतीय नवजागरण के जनक 'राजाराम मोहन राय' ने पीडित पराजित भारतीयो के लिए सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सास्कृतिक लक्ष्यो की प्राप्ति मे स्वतत्र प्रेस के महत्व को पहचाना। उन्होने 'बगदूत' (बगला), मिरातुल अखबार (फारसी), सवाद कौमुदी, आदि पत्रो का प्रकाशन कर भारतीय पत्रकारिता का शुभारम्भ किया। इन पत्रो के प्रकाशन के पीछे उनकी मूल भावना थी "मेरा उद्देश्य मात्र इतना ही है, कि जनता के सामने ऐसे बौद्धिक निबन्ध उपस्थित करू, जो उनके अनुभव को बढाए और सामाजिक प्रगति मे सहायक हो। मै अपने शासको को उनकी प्रजा की परिस्थितियो का सही परिचय देना चाहता हू, और प्रजा को उनके शासको द्वारा स्थापित विधि–व्यवस्था से परिचित कराना चाहता हू, ताकि शासक जनता को अधिक से अधिक सुविधा देने का अवसर पा सके और जनता उन उपायो से अवगत हो सके, जिनके द्वारा शासको से सुरक्षा पाई जा सके, और अपनी मागे पूरी कराई जा सके।"(1)

'राजा राममोहन राय' का तत्कालीन ब्रिटिश सरकार की सद्भावनापूर्ण बातो के प्रति विश्वास था। उनका विचार था कि पत्र–पत्रिकाएं जनता और सत्ता के बीच सेतु का कार्य करती है। जनमानस की इच्छाओ, रूचि–अरूचि को जानने समझने का यह एक सशक्त माध्यम है। समाचार पत्रो के महत्व मे महात्मा गाधी की धारणा थी कि "समाचार पत्र का पहला उद्देश्य जनता की वाछनीय भावनाओं को जागृत करना और दूसरा उददेश्य सार्वजनिक दोषो को निर्भयता पूर्वक प्रगट करना है।"(2)

पत्रकारिता के इसी महत्व को लक्ष्य करके इन्द्र विद्या–वाचस्पति ने इसे वर्तमान

1.2 पत्रकारिता के विविध परिदृश्य, सजीव भानावत पृष्ठ 47,48

युग का सबसे अधिक 'प्रभावशाली आविष्कार' माना है।(1)

सत्यदेव विद्यालकार ने इसे 'पाचवा वेद' की सज्ञा प्रदान की है।(2)

पाश्चात्य विचारको ने भी पत्रकारिता के इस महत्व को स्वीकार किया है। बर्क की दृष्टि मे पत्रकारिता यदि चौथी सत्ता है, तो आस्कर वाइल्ड के मत से यह ही 'एकमात्र रियासत है।'(3)

देश के स्वाधीनता सग्राम मे पत्रकारिता के योगदान को सन् 1857 ई॰ के प्रथम स्वतत्रता सग्राम को दृष्टि मे रखना अनिवार्य है। क्योंकि हमारी आजादी की लडाई की ठोस बुनियाद तभी रखी गयी। असफलता को अलग रख कर देखे तो स्पष्ट होता है कि क्रमश किस प्रकार पत्रकारिता ने सुप्त जनमानस को 'आजादी' जैसे विचारो से परिचित कराया, और उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तैयार किया।

(2) 1857 की क्रान्ति और पत्रकारिता:–

भारत के स्वाधीनता आन्दोलन का सिहावलोकन करने से स्पष्ट हो जाता है, कि यह आन्दोलन किसी अल्प समयान्तराल मे शुरू होने और समाप्त हो जाने वाला आन्दोलन नहीं था। बल्कि यह अग्रेजी सत्ता के स्थापित होने के साथ ही शुरू हो गया था, जो सर्वाधिक प्रचण्ड रूप मे 1857 की क्रान्ति के रूप मे फूटा और ब्रिटिश हुकूमत को हिलाकर रख दिया। आजादी के आन्दोलन के साथ ही तत्कालीन भारतीय पत्रकारिता अनेक संकटों से जूझते हुए आजादी की लौ प्रज्जवलित करने में लगी रही। निरन्तर सरकारी विरोध और सीमित ससाधनों के साथ उच्च आदर्शों के प्रति समर्पित पत्रकार भी अपनी स्वाधीनता, निष्पक्षता तथा वस्तुनिष्ठता को कायम रखने मे सफल रहे।

इस बात मे अतिशयोक्ति नही होगी यदि कहा जाए "तत्कालीन सपादको और पत्रकारों का एक पैर जेल मे तो एक पैर अखबार के दफ्तर मे रहता था।"(4)

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी मन्मथनाथ गुप्त ने इस स्थिति का विश्लेषण करते हुए

---

1 इन्द्र विद्या वाचस्पति–पत्रकारिता के अनुभव पृष्ठ 82

2 सत्यदेव विद्यालकार–समाचार पत्र की सुची की प्रस्तावना पृष्ठ– 6

3.4 पत्रकारिता के विविध परिदृश्य, सजीव भानावत पृष्ठ 47,48

लिखा "सच बात तो यह है कि उस युग मे पत्रकारिता और देश सेवा एक ही सिक्के के दो पहलू थे। या यो कहिए कि इन्ही दोनो आखो से हम खून के आंसू रोते थे। इस दृष्टि से देखा जाए तो स्वतत्रता सग्राम मे पत्रकार, लेखको का जो भाग था, स्वतत्रता संग्राम के किसी भी इतिहास मे उसका पूरा दिग्दर्शन नही कराया गया, और उस युग के (1857–1947) पत्रकारो की त्याग तपस्या और सूझबूझ को योग्य श्रेय नही दिया गया। प्रारम्भिक युग मे पत्रकार–लेखको ने ही क्रान्ति की आग फूक कर शुरू की, ओदी, बुरी तरह धुआ देकर आसू लाने वाली लकडिया जलाकर संग्राम का अलाव जलाया। लकडिया इस बुरी तरह कच्ची और गीली थी कि आग जलाने वालो की आंखे फूट–फूट गईं, फिर भी यज्ञ की लकडिया जलने से चिडचिडाकर इकार करती थी। कवियो ने गीत गा–गा कर देशभक्ति की अग्नि को उत्तेजित करना चाहा, पर लोग इस तरह मुर्दा बन चुके थे कि शब्द शुरू मे बेकार साबित हुए। लगा कि आग नहीं जलेगी, कभी मृत लहरो मे लहू नही लहरायेगा, पर धीरे–धीरे दृश्य बदला। जगह–जगह चिगारिया दिखाई देने लगी और इस प्रकार एक दिन स्वाधीनता के सूर्य का उदय हुआ।"(1)

इस कथन से सिद्ध होता है कि प्रारम्भिक सपादको तथा पत्रकारो को आम जनता का भी अपेक्षित सहयोग नही मिला, किन्तु कलम के सिपाही इस विषम परिस्थिति से नहीं घबराए। सरकार द्वारा दण्ड, पत्र पर भारी जुर्माना, मुकदमा चलाने अथवा जेल भेजने की कार्यवाही का भय भी आजादी के दिवानो के बुलन्द हौंसलो को कम नहीं कर सका। मन मे आजादी का जोश, दिल मे देशभक्ति का जज्बा लिए आजादी के ये सिपाही जन–जन की भावनाओ को 'पूर्ण स्वराज' के लिए आन्दोलित करते रहें। पं॰ लक्ष्मण नारायण गर्दे का कथन उचित ही है "अनेक कठिनाइयो मे भी हमे आगे बढने के लिए प्रेरित करने वाली एक ही चीज थी, वह थी हमारी स्पिरिट। हमारे समय के अधिकाश पत्रकार इस क्षेत्र मे केवल इसलिए आए कि वे देश की कुछ सेवा करना चाहते थे।"(2)

1,2, पत्रकारिता के विविध परिदृश्य, सजीव भानावत पृष्ठ 47,49

राष्ट्र निर्माण, लोककल्याण और जनरजन इन पत्रो के मुख्य उद्देश्य थे। इसके अतिरिक्त जनमत को प्रदर्शित करना, जनमत तैयार करना तथा जनमत का मार्ग निर्देशन करना भी इनके कर्तव्यो मे शामिल था। स्वतत्रता पूर्व की पत्र–पत्रिकाये अपने इन उद्देश्यो के सम्पादन मे पूर्ण सफल रही। इस समय प्रकाशित होने वाले पत्रो ने स्वतत्रता का शखनाद करते हुए, क्रान्ति की वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार की। साथ ही इनसे हिन्दी के प्रचार–प्रसार को भी बल मिला।

सन् 1826 से 1857 ई॰ तक के काल मे अनेक पत्र प्रकाशित हुए। इनमें प्रमुख थे 'बनारस अखबार' (काशी 1845 ई॰), 'मार्तण्ड' (कलकत्ता 1846), 'जगदी भास्कर' (कलकत्ता 1848), 'मालवा अखबार' (इन्दौर 1845), 'सुधाकर' (बनारस 1850), 'बुद्धि प्रकाश' (आगरा 1857), 'सर्वहित कारक' (आगरा 1852), 'समाचार पत्र सुधावर्षण' (कलकत्ता 1854), 'ग्वालियर गजट' (ग्वालियर 1856) आदि।(1)

(3) पयामें–आजादी की भूमिकाः–

प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन के नेता अजीमुल्ला खॉ ने 8 फरवरी सन् 1857 ई॰ को दिल्ली से 'पयामें आजादी' नामक क्रान्ति कारी पत्र का प्रकाशन किया। पहले यह पत्र उर्दू मे निकलता था, किन्तु शीघ्र ही हिन्दी मे निकलने लगा। यह एक ऐसे तेजस्वी पत्र था जिसने अपनी ओजस्विनी वाणी से जनता मे स्वतत्रता के प्रदीप्त स्वर फूके। अल्प समय मे ऐसी जलन पैदा कर दी जिससे ब्रिटिश सरकार घबरा उठी, तथा उसने इस पत्र को बन्द कराने के कोई कसर नही छोडी जिस व्यक्ति के पास इस पत्र की कोई प्रति मिल जाती, तो उसे अनेक यातनाएं दी जाती थी। इसकी सारी प्रतियो को जब्त करने का विशेष अभियान तत्कालीन सरकार ने चलाया।(2)

आजादी का नारा बुलन्द करने वाले इस पत्र ने तत्कालीन स्थितियों से लिखा और सरकारी दमन का कडा विरोध किया। 8 अप्रैल सन् 1857 ई॰ को युवा क्रान्ति

1,2, हिदी पत्रकारिता के विविध परिदृश्य, सजीव मानावत पृष्ठ 49,50

कारी 'मगल पाण्डेय' को फासी दी गई। परिणाम स्वरूप एक सशक्त जन–आन्दोलन ब्रिटिश सरकार के खिलाफ उठ खडा हुआ। सैनिको तथा आजादी के दिवानो की टोलिया ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ निकल पडी। ऐसे समय मे 'पयामें–आजादी' ने अपने सम्पादकीय मे लिखा–

"बरेली और मुरादाबाद की सैनिक पलटनो के सेनापतियो का दिल्ली की सेना की ओर से हार्दिक आलिगन। भाइयो! दिल्ली मे फिरगियों के साथ आजादी की जग हो रही है, खुदा की दुआ से हमने उन्हे पहली शिकस्त दी है, उससे वे इतना घबरा गये हैं जितना कि वे पहले ऐसी दस शिकस्तों से भी न घबराते। बेशुमार हिन्दुस्तानी बहादुरी के साथ दिल्ली मे आकर जमा हो रहे है। ऐसे मौके पर आपका आना लाजिमी है। आप अगर वहा खाना खा रहे हो तो हाथ यहां आकर धोइये। हमारा बादशाह आपका इस्तकबाल करेगा। हमारे कान इस तरह आपकी ओर लगे है, जिस तरह रोजेदारो के कान मुअज्जिन के अजान की तरफ लगे रहते है, हम आपकी आवाज सुनने के लिए बेताब है। हमारी आंखें आपके दीदार की प्यासी है बिना आपकी आमद के गुलाब के पौधे मे फूल नही खिल सकते।(1)

पयामे–आजादी के बाद अनेक पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित होती रही। इनमें प्रमुख है– 'प्रजा हितैषी' (आगरा 1861), 'ज्ञान प्रदायिनी पत्रिका' (लाहौर 1866), 'अल्मोडा अखबार' (1871), 'बिहार बन्धु' तथा 'हिन्दी दिप्ति प्रकाशन' (कलकत्ता 1872), 'सदादर्श' (दिल्ली 1874), 'आर्यमित्र' (काशी 1878), 'भारत मित्र' (कलकत्ता 1878), 'सारसुधा निधि' (1879), 'उचित वक्ता' (कलकत्ता 1880), 'हिन्दी प्रदीप' (प्रयाग 1878), 'आर्य दर्पण' (शाहजहापुर 1878), 'मित्र विलास' (1878), 'सज्जन कीर्ति सुध ाकर' (उदयपुर 1879–80) आदि।(2)

इन पत्रों में 'भारत मित्र' 'सारसुधानिधि' 'उचित वक्ता' ऐसे पत्र थे, जिन्होने

1,2, पत्रकारिता के विविध परिदृश्य, सजीव भानावत पृष्ठ 51

एक स्वर से जातीय प्रतिष्ठा का उद्बोधन करते हुए खडी बोली के विकास और राष्ट्रीय स्तर पर उसे मान्यता दिलाने मे महत्वपूर्ण कार्य किया। 'भारत मित्र' ने स्पष्ट रूप से यह घोषणा की कि "समाचार पत्र प्रजा का प्रतिनिधि स्वरूप होता है।"(1) अधिकांश पत्र इसी उद्देश्य के प्रति समर्पित थे।

कलकत्ता के दूसरे तेजस्वी पत्र 'सार सुधानिधि' मे 'आनंदवन' ने निबन्ध शीर्षक 'हिन्दी भाषा के समाचार पत्र सपादको की वर्तमान दशा मे लिखा " समाचारपत्रो के प्रचारित और विदित होने का प्रधान और मुख्य कारण यही है कि वह पिष्टपेषण के प्रकरण से स्थानपूर्ति करने की अपेक्षा देशपरक विषयो से विभूषित किया जावे, और गवर्नमेन्ट को अन्याय–न्याय विवेचना से वचित न रखे और जो बात नीति विरूद्ध हो, उसे गवर्नमेन्ट के सम्मुख उपस्थित कर देवें, जिससे अन्याय का संचार और बुराई का अकुर न फैलने पावें।" 2

भारत के सौभाग्य को अपना सौभाग्य तथा भारत के दुर्भाग्य को अपना दुर्भाग्य समझने का अहसास करने वाले 'उचित वक्ता' के सपादक प. दुर्गा प्रसाद मिश्र ने तत्कालीन पत्रकारो को कर्तव्यबोध कराते हुए कहा " देशी सपादको सावधान! कही जेल का नाम सुनकर कर्तव्यविमूढ मत हो जाना, धर्म की रक्षा करते हुए यदि गवर्नमेन्ट के सत्परामर्श से जेल जाना पडे तो क्या चिन्ता है, इससे मानहानि नही होती है। हाकिमों के जिन अन्याय आचरणो से गवर्नमेन्ट पर सर्वसाधारण की अश्रद्धा हो सकती है, उनका यथार्थ प्रतिवाद करने मे जेल तो क्या? दीपान्तरित भी होना पडे, तो क्या बडी बात है।"(3)

1857 के पूर्व पत्रकारिता मे देशसेवा की भावना तो थी, किन्तु उस समय पत्रकारों का ध्यान कपनी के शासन की अच्छाई–बुराई के अवलोकन पर ही था। किन्तु सन् 1857के बाद के पत्रो ने स्पष्ट रूप से स्वतत्रता का बिगुल बजा दिया।

1, भारतमित्र 17 मई 1878 ई0

2, सारसुधानिधि 13 जनवरी 1878 वर्ष दो अक सत्रह

3, सारसुधानिधि वर्ष दो अक पच्चीस

इन्होने जनशक्ति को नेतृत्व प्रदान करते हुए, नवीन सास्कृतिक आन्दोलन का भी सूत्रपात किया।

(4) <u>भारतेन्दु युग</u>:–

भारतेन्दु ने हिन्दी पत्रकारिता को नयी दिशा प्रदान की। राजनैतिक चेतना क्रमश सामान्य जनता की प्रतिक्रिया होती थी। जातीय उन्नति की प्रेरणा से पत्रकारिता की नीव निर्मित हुई। साम्राज्यवादी शिकजे से देश को मुक्त कराने के लिए, देश का दुर्भाग्य दूर करने के लिए, इस युग के पत्रकारो को बहुकोणीय मोर्चो पर सघर्ष करना पडा। भारतेन्दु ने लगभग पच्चीस पत्र पत्रिकाओ के प्रकाशन मे प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से योग दिया। कुछ प्रमुख पत्रिकाए ये हैं जिन्होने इस युग को प्रतिबिम्बित किया–

'कवि वचन सुधा' (काशी 1867), 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' (काशी 1879), 'हिन्दी प्रदीप' (प्रयाग1878), 'उचित वक्ता' (कलकत्ता 1878), 'भारत मित्र' (कलकत्ता 1878), सारसुनिधि (कलकत्ता 1979) 'आनद कादम्बिनी' (मिर्जापुर 1881), 'देवनागरी प्रचारक' (1882), 'हिन्दुस्तान' (कालाकांकर 1885), 'ब्राहमण' (कानपुर 1883), 'हिन्दी बगवासी' (कलकत्ता 1890), साहित्य–सुधानिधि (1894), 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' (1894), सरस्वती (1900) आदि। 1

इन पत्र–पत्रिकाओ मे ब्रिटिश सरकार की कडी आलोचना के साथ साथ राजनैतिक–सामाजिक जीवन मे व्याप्त भ्रष्टाचार एवं विसगतियो पर भी व्यंग्य होते थे। तत्कालीन भारत की स्थिति पर दुख प्रकट करते हुए 'भारतेन्दु' ने कहा–

"अब जह देखहु वह दुखहिं दिखाई
हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई।" 2

स्वदेशी आन्दोलन को प्रारम्भ करने का श्रेय 'भारतेन्दु हरिश्चन्द' को है। 23

1,2, हिदी पत्रकारिता के विविध परिदृश्य, सजीव भानावत पृष्ठ 52

मार्च सन् 1874 को 'कवि वचन सुधा' के माध्यम से उन्होने देश की जनता से देशहित के लिए 'स्वदेशी' वस्त्र पहनने का आहवान किया–

"हम लोग सर्वान्तवासी सर्वत्र स्थल मे वर्तमान सर्वदृष्टता और नित्य सत्य परमेश्वर को साक्षी देकर यह नियम मानते है, और लिखते है कि हम लोग आज के दिन से कोई विलायती कपडा नही पहनेगे और जो कपडा पहिले से मोल ले चुके है और आज की मिति तक हमारे पास है उसके जीर्ण हो जाने तक काम मे लायेगे, पर नवीन मोल लेकर किसी भी भाति का विलायती कपडा न पहिरेगे, हिन्दुस्तान का ही कपडा पहिरेगे। हम आशा रखते है कि इसको बहुत ही क्या प्राय: सब लोग स्वीकार करेगे और अपना नाम इस श्रेणी मे होने के लिए श्रीयुत् बाबू हरिश्चन्द्र को अपनी मनीषा प्रकाशित करेगे, और सब देश हितैषी इस उपाय के वृद्धि में अवश्य उद्योग करेगे।"(1)

डा 'राम विलास शर्मा' ने राष्ट्रीय आन्दोलन मे 'भारतेन्दु' के इस योगदान का मूल्याकन करते हुए कहा है कि "काग्रेस ने अभी 'स्वदेशी' आन्दोलन विधि पूर्वक न आरभ किया था, न बग आन्दोलन ने जन्म लिया था। केवल हिन्दी मे भारतेन्दु ने 'स्वदेशी' आन्दोलन का सूत्रपात बहुत पहले कर दिया था।"(2)

प 'बालकृष्ण भट्ट' का 'हिन्दी प्रदीप' राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रमुख पत्र था। ब्रिटिश सरकार की 'भाषा–प्रेस कर' आदि नीतियों पर इसने जमकर प्रहार किया। इस पत्र की कथित भडकाने वाले उग्र विचार धारा को प्रतिबधित करने का सरकार ने भरपूर प्रयास किया। सन् 1910 ई में प. 'माधवशुक्ल' की एक कविता "जरा सोचो तो यारो ये बम क्या है।" कविता के प्रकाशन पर इसे सरकारी कोप का भाजन बनना पडा, और इस पत्र का प्रकाशन सदा के लिए बन्द हो गया। समकालीन कुछ पत्रों की नरम नीति (भारतबन्धु) आदि का भी इसने घोर विरोध किया, तथा जनशक्ति को

1, प्रत्रकारिता के विविध परिदृश्य, संजीव भानावत पृष्ठ 52,53
2, भारतेन्दु हरिश्चन्द – डा0 राम विलास शर्मा

सगठित होने की प्रेरणा दी। तत्कालीन सामाजिक कुरीतियो पर साहसपूर्वक अपने विचार प्रकट करते हुए हिन्दी भाषा तथा साहित्य के उन्नयन का भी श्रेय इस पत्र को है।(1)

प॰ 'दुर्गा प्रसाद मिश्र' ने 'उचित वक्ता' के माध्यम से जनचेतना को जागृत करने का बीडा उठाया!.ब्रिटेन की सरकार की छत्र–छाया मे तत्कालीन भारत की कथित प्रगति का विश्लेषण करते हुए भारतीयों को दासता के चगुल से मुक्त होने को उकसाया "पहिली उन्नति और अबकी उन्नति मे अन्तर इतना है कि वह स्वाधीन भारत की उन्नति थी!.उस उन्नति मे उन्नतिमना स्वाधीनता प्रिय भारत सन्तानो का गौरव था, और यह पराधीन भारत की उन्नति हो रही है!.इस उन्नति मे पदानत निवीर्य हम भारत कुल तिलको की अगौरव के सहित गर्दन नीची होती जाती है!."(2)

पराधीनता की गहरी पीडा उस समय के पत्रकारो और सम्पादकों को था!. परतत्र भारत के सुख भी दुखदायक हैं, किन्तु स्वतत्र भारत के दुख भी प्रिय है!. महाकवि तुलसीदास ने पराधीनता की पीडा पर कहा था "पराधीन सपनेहुं सुख नाही" राष्ट्र निर्माण की पहली शर्त है 'पूर्ण स्वराज'!.इससे कम पर किसी प्रकार का समझौता नहीं!.

'प्रताप नारायण मिश्र' का पत्र 'ब्राह्मण' भी इन्ही पद चिन्हो पर चल रहा था!. ब्रिटिश सरकार के खिलाफ अपनी आवाज बुलन्द करने की प्रेरणा एव प्रोत्साहन वह भारतीय जन–चेतना को देता रहा। यद्यपि इस पत्र का जीवन दस वर्ष का ही रहा, लेकिन इसने अल्प समय मे ही पर्याप्त लोकप्रियता अर्जित कर ली थी। मिश्र जी की भारतेन्दु के प्रति अगाध श्रद्धा थी। यही कारण है कि वे अपने पत्र मे 'श्री गणेशाय! नम' के स्थान पर 'श्री हरिश्चन्द्राय! नम' लिखा करते थे। 'हिन्दी' 'हिन्दू' तथा 'हिन्दुस्तान' की गरिमा एव प्रतिष्ठा के उन्नायक पत्रो मे 'ब्राह्मण' का विशिष्ट स्थान है।(3)

1,2,3, हिंदी पत्रकारिता के विविध परिदृश्य, सजीव भानावत पृष्ठ 52,53,54

कालाकाकर से सन् 1885 ई॰ मे हिन्दी दैनिक 'हिन्दोस्तान' का प्रकाशन 'राजा रामपाल सिह' द्वारा किया गया। प॰ 'मदन मोहन मालवीय' इसके प्रथम सपादक थे। इनके अतिरिक्त 'प्रताप नारायण मिश्र', 'बालमुकुन्द गुप्त', 'गोपालराम गहमरी' जैसे वरिष्ठ पत्रकारो का सहयोग पाकर इस पत्र ने पत्रकारिता जगत मे जहा नये प्रतिमान स्थापित किए, वही भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को गतिशील बनाया। इस प्रकार भारतेन्दु युग के पत्र और पत्रकार जीवन्त भारतीय चेतना के प्रति पूरी तरह सजग रहे, तथा राष्ट्रीय गौरव और परम्पराओ एव साहित्यिक चेतना के जागरण के अग्रदूत बन कर आए।(1)

हिन्दी पत्रकारिता ही नहीं, पूर्ववर्ती भारतीय पत्रकारिता का आदर्श, उद्देश्य एक ही था। उनक`पीछे एक ही प्रेरणा थी – 'शुद्ध राष्ट्रीय प्रेरणा'। उस युग के जागरूक विद्याव्रती के सामने साम्राज्यशाही तोप खडी थी, जिसका मुकाबला वे अपने पत्रो की उदग्र मुद्रा से कर रहे थे। उनका एकान्त उद्देश्य था 'देशोद्धार' की भूमिका रचना, नयी रोशनी से गणदेवता को मुक्ति की राह दिखाना जोखिम से घिरी जिम्मेदारी थी। जिसे 'लाला लाजपत राय', 'अरविन्द घोष', 'कस्तुरीरगा आयगर', 'ब्रह्म बाधव उपाध्याय', 'महामना मदनमोहन मालवीय', 'महात्मा गाधी', 'प॰ दुर्गा प्रसाद मिश्र', 'सदानन्द मिश्र', बालमुकुन्द गुप्त', 'सखाराम गणेश देउस्कर', बाबूराव विष्णु पराडकर', 'रामानन्द चटर्जी', 'लक्ष्मण नारायण गर्दे', 'माखन लाल चतुर्वेदी', तथा 'गणेश शकर विद्यार्थी', जैसे मनीषी पत्रकारों ने पूरा किया।(2)

बंग–भंग आन्दोलनः–

अपनी शक्ति और सत्ता बनाए रखने के लिए भारत मे ब्रिटिश सरकार ने साम, दाम, दण्ड और भेद सभी नीतियो का सहारा लिया। इनमें 'फूट डालो' और 'राज करो' की नीति सबसे मुख्य थी। जुलाई सन् 1905 मे बगाल–विभाजन की घोषणा की गई। इसका उद्देश्य भारतीयो के उत्साह को नष्ट करना तथा राष्ट्रीय आन्दोलन

---

1. हिदी पत्रकारिता के विविध परिदृश्य, संजीव भानावत पृष्ठ 53,54
2. समकालीन पत्रकारिता, सं0 राजकिशोर पृष्ठ 14

पर रोक लगाना था। तत्कालीन सरकार के गृह सचिव ने एक गुप्त दस्तावेज मे लिखा था "सयुक्त बगाल एक शक्ति है।" बगाल–विभाजन होने पर वह अलग–अलग रास्तो मे बट जायेगा।—–—– हमारा एक मुख्य उद्देश्य है, हमारे विरोध मे सगठित शक्ति को विभाजित करना और उसे कमजोर बनाना।(1)

सरकार की इस कार्यवाही ने आग मे घी का कार्य किया, और बंग–भग जो कि एक क्षेत्रीय प्रश्न था, को लेकर भीषण राष्ट्रीय आन्दोलन उठ खडा हुआ। भारतीय पत्र–पत्रिकाओ ने भी बग–भग का कडा विरोध करते हुए, इसे राष्ट्रीय हितो पर कुठाराघात की सज्ञा दी। सरकार की इस कार्यवाही का विरोध करते हुए श्री 'बालमुकुन्द गुप्त' ने 21 अक्टूबर 1905 ई० के भारत मित्र' के अक मे 'बंग–विच्छेद' शीर्षक निबन्ध मे लिखा कि बग–भग के कारण भारतीय जनता और निकट आई तथा एकता के सूत्र मे बधने लगी।

"आपके शासन काल मे बग–विच्छेद इस देश के लिए अन्तिम विषाद और आपके लिए अन्तिम हर्ष है—–—–—– यह बग–विच्छेद बग का विच्छेद नहीं, बग निवासी इससे विच्छिन्न नहीं हुए, वरच और युक्त हो गए। जिन्होने गत 16 अक्टूबर का दृश्य देखा है, वह समझ सकते है कि बग देश का भारतवर्ष मे ही नही पृथ्वी भर मे वह अपूर्व दृश्य था, आर्य सतान उस दिन अपने प्राचीन देश मे विचरण करती थी। बग–भूमि ऋषि–मुनियो के समय की आर्य भूमि बनी हुई थी। किसी अपूर्व शक्ति ने उसको उस दिन एक राखी से बाध दिया था। बहुत काल के पश्चात भारत सतान को होश हुआ कि भारत की मिट्टी वदना के योग्य है। इसी से वह एक स्वर से 'वन्देमातरम्' कह कर चिल्ला उठे। बगाल के टुकड़े नहीं हुए, वरच भारत के अन्यान्न टुकडे भी बग देश से आकर चिपटे जाते है।(2)

बंग–भग आन्दोलन की प्रेरणा से भी अनेक पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित होने लगी।

1,2, हिंदी प्रत्रकारिता के विविध परिदृश्य, संजीव भानावत पृष्ठ 54,55

'सध्या', 'युगान्तर', वदेमातरम्' (अग्रेजी) 'नवशक्ति' आदि। पत्र–पत्रिकाए अपनी उग्र राष्ट्रीयता कारण विशेष लोकप्रिय होने लगी। 'ब्रह्म बांधव' उपाध्याय, 'भूपेन्द्रनाथ दत्त', 'विपिनचन्द्र पाल', हेमेन्द्र प्रसाद' तथा महर्षि 'अरविन्द' इन पत्रो के माध्यम से जन आन्दोलनो के प्रणेता बने।

'युगान्तर' ने जहा 'पूर्ण स्वतत्रता' का नारा दिया। वही महर्षि अरविन्द ने अपने पत्र 'वन्देमातरम्' मे ब्रिटिश सरकार को यह बता दिया कि 'भारत भारतीयो' के लिए है। श्री उपेन्द्रनाथ ने उस समय की स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा "सन् 1906 की सर्दियो के दिन थे किन्तु इधर सरगर्मी खूब थी। थोडे दिनो से 'सध्या' मे खूब चटपटा मसाला भरा रहता था। अरविन्द बाबू भी राष्ट्रीय शिक्षण के हेतु अपनी बडौदे की नौकरी छोड आये थे। विपिन बाबू ने भी पुरानी काग्रेस से नाता तोड लिया था, ऐसा महसूस होता था मानो सारा देश किसी नई चीज का इतजार कर रहा है।(1)

तिलक युगः–

बीसवी शताब्दी के प्रारम्भिक दो दशको की पत्रकारिता में महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देता है। इस काल मे प्रकाशित पत्रो ने खुलकर पूरी शक्ति के साथ 'क्रान्ति' और 'बगावत' की वकालत की। यह युग हिसा और आतक का युग था। इस युग मे प्रकशित होने वाले प्रमुख पत्र थे 'देवनागर' (कलकत्ता 1907), 'नृसिह' (कलकत्ता 1907), विश्वमित्र (कलकत्ता 1916), 'स्वदेश' (गोरखपुर 1919) आदि।(2)

इस युग की राजनीति के रगमच पर 'लोकमान्य तिलक' प्रभावी थे। 'स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।' तिलक का यह नारा जन–जन के मन–मस्तिष्क पर हावी हो गया था। देश की युवा पीढी 'पूर्ण स्वराज' के इस आन्दोलन मे तिलक के साथ थी। देश के इन नौजवान क्रान्तिकारियो के हृदय मे हिलोरे मारती 'राष्ट्रप्रेम'

1,2, हिंदी पत्रकारिता के विविध परिदृश्य, संजीव भानावत पृष्ठ 54,55

तथा 'कर्तव्य निष्ठा' की भावना को तत्कालीन पत्रो ने बखूबी प्रतिबिम्बित किया। स्वाधीनता आन्दोलन मे तिलक की सक्रियता से सारा वातावरण जोश उमग और उत्साह से भर गया। निष्क्रियता के स्थान पर कर्मठता का सचार होने लगा। 'केसरी' और 'मराठा' जैसे पत्र रूपी दो सशक्त हथियार तिलक के पास थे, जिसका उपयोग उन्होने स्वतत्रता के दीप को जन–जन तक पहुचाने के लिए किया। राजनैतिक अधि ाकारियो के प्रति चाह उत्पन्न करने का श्रेय इन पत्रो को है। असहयोग, कानून भग, विद्रोह, बहिष्कार आदि की भावना तिलक ने प्रचारित की। 'केसरी' का स्वर अधिक उग्र था। कहा जाता है कि 'मराठा' 'केसरी' का नरम सस्करण था। 'केसरी' उकसाता था 'मराठा' समझाता था। केवल सप्तक का भेद था राग एक ही था।(1) इनमे प्रकाशित लेखो का अनुवाद भी कुछ अन्य पत्र प्रकाशित करते थे।

आर सी मजूमदार ने तिलक के योगदान का उल्लेख करते हुए लिखा है– "भारत मे राजनीतिदर्शन को केवल तिलक ने स्वर्ग से धरती पर उतारा, विधानसभा तथा काग्रेस के मण्डप से उतार कर उसे सडक और बाजारो मे पहुंचाया।(2)

राष्ट्रीय जन–जागरण को व्यापकता देने के लिए 'केसरी' का हिन्दी सस्करण भी प्रकाशित किया जाने लगा। सन् 1903 ई० में नागपुर से 'हिन्दी केसरी' का प्रकाशन शुरू हुआ। सन् 1920 तक नागपुर से प्रकाशित होते रहने के बाद यह सन् 1945 तक काशी से प्रकाशित होता रहा। 'केसरी' मे तिलक के प्रकाशित लेखो का हिन्दी अनुवाद 'हिन्दी केसरी' मे छपते थे। सप्ताह भर पुराने लेखो के अनुवाद प्रकशित होने के बावजूद हिन्दी जगत मे इस पत्र का स्वागत किया गया। गरम दल के प्रामाणिक पत्र के रूप मे अपना स्थान बनाने वाले इस पत्र ने निष्पक्ष संपादन तथा निर्भीक आलोचना के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किया। इन पत्र त्रयी ('मराठा', 'केसरी', 'हिन्दी–केसरी') ने स्वाधीनता–आन्दोलन मे जो अहम भूमिका का निर्वाह किया, वह चिर स्मरणीय रहेगा।

1,2. हिदी प्रत्रकारिता कृष्ण बिहारी मिश्र पृष्ठ 265

तिलक का युग हिसा एव आतक की राजनीति के शुरूआत का युग था। "स्वाध
ीनता भीख मागने से नही मिलेगी – उसे तो अपने प्राणो पर खेल कर हमे प्राप्त करना होगा।" 'बंकिम चन्द्र चटर्जी', महर्षि अरविन्द घोष' तथा 'तिलक' ने इसे 'ध
र्मयुद्ध' घोषित कर दिया, बस फिर क्या था। क्रान्ति कारियो और सरकार के बीच जबरर्दस्त सघर्ष आरम्भ हो गया। लन्दन मे कर्जन वायली की हत्या करने वाले मदनलाल ढीगरा ने अपने इस कृत्य के औचित्य को सिद्ध करते हुए अत्यन्त मार्मिक शब्दो मे 'मा भारती' के प्रति अपने उद्गार व्यक्त किए "मेरा विश्वास है कि सगीनो की मदद से कोई जाति किसी जाति को परतत्र करती है, तब वह परतत्र जाति उस जाति से एक स्थायी युद्ध की दशा रहती है। और चूकि हमे बन्दूक नहीं दी गई है, इसलिए मैने अपना तमचा निकाला और शत्रु पर अचानक हमला किया। एक हिन्दू होने के नाते मेरा विश्वास है कि मेरे देश का अपमान करना, साक्षात ईश्वर का अपमान करना है। मेरे देश की सेवा श्री कृष्ण की सेवा है। मेरे जैसा निर्धन और· मतिमन्द पुत्र माता की आराधना के लिए अपने रक्त के अतिरिक्त क्या दे सकता है? आज मै अपना वही रक्त अपनी माता की बलिवेदी पर चढा रहा हू।"

"इस समय भारतवासियो को केवल वही एक शिक्षा ग्रहण करनी है कि मरना कैसे चाहिए और वह शिक्षा हम स्वयं मरकर दे सकते हैं, इसलिए मैं मरता हू।"(1)

ढीगरा के से उद्गार तत्कालीन भारतीयो की जिजीविषा तथा स्वतंत्रता प्राप्ति की अदम्य इच्छा के प्रमाण हैं। 'गीता' और 'पिस्तौल' हाथ मे लेकर अनेक वीर मा भारती की सेवा मे सर्वस्व अर्पित करने निकल पडे थे। तत्कालीन पत्रों मे ये भावनाएं प्रमुखता से मुखरित हुई है।

सन् 1907 ई मे 'अम्बिका प्रसाद बाजपेयी' के सपादन–प्रकाशन मे निकला पत्र 'नृसिह' ऐसा ही पत्र था। इस शब्द का विशिष्ट अर्थ है जिसके उद्देश्य तथा समग्र

1, हिंदी पत्रकारिता, कृष्ण बिहारी मिश्र पृष्ठ 266

वैशिष्ट्य मे तिलक युग मुखर है। 'नृसिंह' एक व्यापक अर्थवाची शब्द है। 'नृसिंह' एक नाम है न्याय और औचित्य के रक्षक का, नृसिहावतार का एक बडा प्रायोजन था, अधर्म का, अन्याय का, अनौचित्य का निरसन तथा धर्म और सत्य की प्रतिष्ठा का, इस वृहद उद्देश्य के कारण नृसिहवतार सभव हुआ। 1

'नृसिह' ने तिलक के विचारों का पूर्ण समर्थन किया। 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।' इस भावना के भी प्रचार प्रसार मे अपनी पूरी शक्ति लगा दी। 'स्वराज की आवश्यकता' नामक लेख मे उसने लिखा "स्वराज की आवश्यकता भारतवासियो को इसलिए है कि विदेशी सरकार उनके अभाव अभियोगो को समझने में असमर्थ है। यदि आज यहा स्वराज होता तो लाखो हिन्दुस्तानी दुर्भिक्ष के कारण दाने–दाने को तरस कर प्राण न गवाते। स्वराज के अभाव से ही प्रतिवर्ष 45 करोड रूपये इस दरिद्र देश से इग्लैण्ड चले जाते है, और इनके बदले भारत मे एक कानी कौडी तक नही आती। जहा पाच करोड मनुष्यो का साल भर मे एक समय भी पेट भरकर भोजन नही मिलता, जिसके पास जाडे में रात को ओढने के लिए कम्बल तक नही है। जहा के करोडो किसान अरहर, उडद, चना और मूग बोते है, पर उसके स्वाद से नितांत अनभिज्ञ रहते है, जिन्हें टैक्स देने के लिए बाध्य होकर अनाज बेचना पडता है। जहां के शासक शासितो से सहानुभूति नही रखते, उस देश के विपत्तियो की तुलना किस देश से हो सकती है। ऐसी स्थिति मे स्वराज के बिना भारत की गति ही नही है। जिस प्रकार रोगी को औषधि की, भूखे को अन्न की, और दरिद्र को धन की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार भारत को स्वराज की आवश्यकता है। भारतवासियो के लिए दो ही मार्ग है। चाहे वे स्वराज लाभ कर अपनी मनुष्यता बनाये रखे अथवा जगली मनुष्यो की भाति पशुओं की श्रेणी मे सम्मिलित हो जाए। दोनो ही बातें भारत वासियो के अधीन है।"2

'नृसिंह' ने देश की दुर्दशा के चित्रण के साथ ही देशवासियो के स्वाभिमान को

1,2, हिदी पत्रकारिता कृष्ण बिहारी मिश्र पृष्ठ 272;273

जागृत करने के लिए भी प्रयास किया। "आओ समस्त देशवासियो हम लोग उपनिवेश और उसके पिट्ठू इग्लैण्ड की वस्तुओ का बहिष्कार करे। जिससे उन्हे जान पडे कि हिन्दुस्तानी निरे मुर्दे नही है, हम लोग दिखा दे कि हम आत्माभिमानी है, और तुम्हे तुम्हारे पाप कर्मों का फल चखाने को बद्धपरिकर है। मद्रास ने इस विषय का श्री गणेश किया है जो प्रान्त या प्रदेश इस समय अपने कर्तव्य से च्युत होगा, उसका नाम सदा के लिए कलकित हो जायेगा। 1

इलाहाबाद से 'शान्ति नारायण' के सम्पादन मे प्रकाशित होने वाला पत्र 'स्वराज्य' भी अपनी उग्रवादी विचारधारा के कारण सरकारी कोप का भाजन बना। शहीद 'खुदीराम बोस' पर एक कविता प्रकाशित करने के अपराध मे संपादक 'श्री शाति नारायण' को साढे तीन वर्ष की कैद तथा एक हजार रूपये के जुर्माने के साथ भुगतनी पडी। उनके बाद जिसने भी सपादक का पद सभाला, उन्होने 'शांति नारायण' के उद्देश्यो और लक्ष्यो को जिदा रखा। यही कारण है कि सरकारी दमन चक्र का उन्हे शिकार होना पडा। 'रामदास सुरलिया', 'होती लाल शर्मा', 'रामहरि', लद्धाराम कपूर आदि ऐसे नाम है जिन्हें सरकारी दमन का शिकार होना पडा। 'स्वराज' का 1857 पर विशेषाक मे प्रकाशित कविता मे यह आशा व्यक्त की गयी कि "अब मातृभूमि के दुख के लिए दूर हुए, विदेशी शासन का डका बज गया, राष्ट्रीय अपमान का अवसान होने को है, आजादी की हवा चल रही है, बूढे बच्चे सब चाह रहे है, स्वतंत्रता। 2

स्वतंत्रता का उद्घोष करने वाले इस पत्र के लिए सपादक का एक विज्ञापन इस प्रकार प्रकाशित हुआ– चाहिए 'स्वराज' के लिए एक सपादक

वेतन – दो सूखी रोटिया, एक गिलास ठडा पानी और हर संपादकीय के लिए दस साल की जेल। 3

इस विज्ञापन से स्पष्ट है कि सपादक का कार्य कितना जोखिम भरा था साथ

---

1. हिंदी पत्रकारिता, कृष्ण बिहारी मिश्र, पृष्ठ 273

2,3. हिंदी पत्रकारिता, विविध परिदृश्य, सजीव भानावत, पृष्ठ 61

ही स्वतत्रता प्राप्ति के लिए अप्रतिम जोश भी झलक रहा है।

राष्ट्रीय गौरव का गुणगान करने वाला एक और पत्र इस समय सामने आया वह था 'नागरी प्रचारक'। 15 फरवरी 1907 के एक अक मे स्वदेशी आन्दोलन पर व्यक्त विचार "इस भारत वर्ष मे कौन ऐसा विचारवान और शिक्षित है जो इसके पक्ष मे नही है, उसे भारत माता का कपूत और जो इसके पक्ष मे हो उन्हे सपूत कहना चाहिए। 1

राष्ट्रीय जागृति के क्षेत्र मे उल्लेखनीय योगदान प्रयाग से 1907 मे प॰ मदनमोहन मालवीय के सपादन मे प्रकाशित 'अभ्युदय' नामक साप्ताहिक का था। निर्भीकता, राष्ट्रोत्थान, सहिष्णुता, सद्भावना, समाचार पत्रो की स्वतत्रता तथा समाजिक सुधार 'अभ्युदय' की मूल नीतिया थीं। सन् 1918 ई॰ मे 'अभ्युदय' दैनिक हो गया। सरदार भगत सिह की फासी के बाद 'फांसी अक' निकाल कर इस पत्र ने साहस का परिचय दिया।

सन् 1903 मे 'कर्मयोगी' का प्रकाशन प्रयाग से हुआ। मात्र नौ माह प्रकाशित होने पर भी इसने पत्रकारिता जगत में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया। इसके सपादक प॰ सुन्दरलाल थे। यह साप्ताहिक अति उग्र और क्रान्तिकारी विचारो का समर्थक था। ब्रिटिश सरकार और अफसरो की दृष्टि में 'कर्मयोगी' पढना भारी अपराध था। अनेक व्यक्तियो को अपनी नौकरी से सिर्फ इसलिए हाथ धोना पडा कि वे 'कर्मयोगी' के पाठक थे। उन्ही मे एक थे 'प्रताप' के जन्मदाता और सपादक 'गणेश शंकर विद्यार्थी', कर्मयोगी की भाषा कालान्तर मे 'प्रताप' का आदर्श बनी।2

सन् 1913 मे कानपुर से साप्ताहिक 'प्रताप' का प्रकाशन महत्वपूर्ण घटना है। 'प्रताप' के प्रथम सपादक 'गणेश शकर विद्यार्थी' और व्यवस्थापक थे नारायण प्रसाद

1,2, हिदी पत्रकारिता ,विविध परिदृश्य, संजीव भानावत, पृष्ठ 61

अरोडा। गणेश शकर विद्यार्थी मे प्रबल आत्मविश्वास तथा अनवरत कार्य करने की अपूर्व क्षमता थी। 'प्रताप' ने ब्रिटिश शासन को बता दिया कि जनता को कुछ बोलने का अधिकार है। वह अधिकार अगर सरकार नही देती है तो उसके विरूद्ध सघर्ष करने का भी अधिकार है। तब 'प्रताप' और जन–आन्दोलन पर्याय बन गए। मामूली पीले कागज पर प्रकाशित इस पत्र मे स्तभो की भरमार थी– 'गोल–मोल कारिणी सभा की रिर्पोट', देशी 'रियासते', 'हास्यविनोद', 'राष्ट्रीय कविताए', 'चिट्ठी' और नही छपेगे इसके स्थायी स्तभ थे। 1

'प्रताप' ही ऐसा एकमात्र पत्र था जिसने चिट्ठियों के माध्यम से समाचार और शिकायत छापने की परिपाटी का श्री गणेश किया। जो चिट्ठिया नहीं प्रकाशित की जाती थी उनके लेखक के नाम व पते कारण सहित 'नही छपेगे' स्तभ के नीचे छापे जाते थे। सभवत ऐसा करने वाला प्रथम और अन्तिम पत्र 'प्रताप' ही था। अपने समाचारो और टिप्पणी के कारण 'प्रताप' का अनेक देशी रियासतो में प्रवेश निषिद्ध था। मुकदमे की धमकी और डराने–धमकाने के बावजूद 'प्रताप' अपने लेखको तथा सवाददाताओ का नाम बताने से सदैव इकार करता रहा। ब्रिटिश सरकार के सम्मुख 'प्रताप' ने कभी समर्पण नही किया। क्योकि उसने झुकना, रूकना और बिकना तो कभी सीखा ही नही था। प्रत्येक वर्ष दशहरे पर 'प्रताप' ने राष्ट्रीय अक निकाल कर विशेषाक निकालने की परिपाटी डाली। महाराष्ट्र मे जो स्थान लोकमान्य तिलक के 'केसरी' का था वही स्थान हिन्द जगत मे विद्यार्थी जी के 'प्रताप' का था। 2

23 मार्च 1982 को भगत सिह की पुण्य तिथि पर भगत सिह के विषय मे अप्रकाशित तथ्यो के एक सग्रह का (लेखक श्री के.के. खुल्लर) विमोचन हुआ। श्री खुल्लर का कहना है कि उन्होने अपने अनुसधान और पुराने दस्तावेजो के आधार पर सिद्ध किया कि भगत सिह अच्छे लेखक और पत्रकार भी थे जहा वह हिन्दी दैनिक 'वीर अर्जुन' और उर्दू दैनिक 'प्रताप' के प्रतिनिधि रहे। वहां उन्होने अपना एक पत्र

1,2, हिदी पत्रकारिता ,विविध परिदृश्य, संजीव भानावत, पृष्ठ 62,63

'कीर्ति' भी निकाला था, पहले पंजाबी मे और फिर उर्दू मे 'अमृतसर' से। एक अन्य विद्वान ने भगत सिह को 'प्रताप' का सहायक सपादक भी बताया है। 1

साप्ताहिक 'स्वदेश' का प्रकाशन सन् 1919 मे गोरखपुर से हुआ। इस पत्र को भी सरकारी कोप तथा दमन का सामना करना पडा, किन्तु इसके सस्थापक तथा सपादक प० दशरथ प्रसाद द्विवेदी इसे सन् 1939 तक प्रकाशित करते रहे। इस पत्र का लक्ष्य था–

"स्वर्गालय के लिए आत्मबलि हम न करेगे।
जिस 'स्वदेश' मे जिए, उसी पर सदा मरेगें।।"

स्वाधीनता आन्दोलन को सम्पूर्ण उत्तर–प्रदेश अचल मे प्रसारित करने की दिशा मे 'स्वदेश' ने विशेष योगदान दिया। इसके सपादन मे सहयोग देने तथा उग्रराष्ट्रीय विचारो से ओत–प्रोत लेख लिखने के लिए पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र को एक वर्ष के कारावास की सजा दी गई। सपादक श्री 'द्विवेदी' को भी राष्ट्रीय विचारो के कारण जेल यात्राए करनी पडी। 'स्वदेश' पत्र की लोकप्रियता इतनी व्यापक थी कि विदेशो मे रह रहे भारतीय भी इसे पढने के लिए मगाया करते थे। 2

गांधी युगः–

सन् 1920 के बाद भारतीय राजनीति मे फिर एक परिवर्तन दिखाई देने लगा। दक्षिण अफ्रीका मे भारतीयो के अधिकारो की लडाई में सफलता प्राप्त कर 1914 में भारत आने पर 'सत्याग्रही' नाम से एक पृष्ठ के बुलेटिन महात्मा गाधी ने निकालना शुरू किया। यह मुख्यत अग्रेजी मे तथा अशत. हिन्दी मे था। पत्र मे उन्होने लिखा "हम इस बात का कोई यकीन नहीं दिला सकते कि अखबार नियमित रूप से निकलता रहेगा, क्योकि सपादक के किसी भी क्षण गिरफ्तार हो जाने की सम्भावना है किन्तु हम इस बात की कोशिश जरूर करेगे कि एक सम्पादक की गिरफ्तारी के

1,2, हिदी पत्रकारिता ,विविध परिदृश्य, सजीव भानावत, पृष्ठ 63,64

बाद दूसरा सपादक इसकी जिम्मेदारी लेता जाए। इसे हम यथा सभव तब तक चलाते रहेगे, जब तक रौलट एक्ट वापस नहीं ले लिया जाता। 1

जलियावाला बाग हत्याकाड की घटना ने भारत वासियो को हिलाकर रख दिया था। 'हार्निमेन' जैसे वरिष्ठ सपादक को देश निकाले की सजा दी जा चुकी थी। ब्रिटिश सरकार हर तरह से प्रेस को नियत्रित करने का प्रयास कर रही थी। ऐसे समय मे कुछ समृद्ध गुजरातियो के सहयोग से प्रकाशित साप्ताहिक 'यग इण्डिया' का सपादन गाधी जी ने सभाला। शीघ्र ही इसका गुजराती संस्करण (नवजीवन जुलाई 1919 में) भी प्रकाशित होने लगा। 'शकर लाल बैकर', 'महादेव भाई', 'जे सी कुमारप्पा' जैसे व्यक्तियो का सहयोग गांधी जी को मिला। इसी सहयोग का परिणाम था कि 'हिन्दी नवजीवन' भी प्रकाशित होने लगा। कालान्तर मे गाधी जी ने 'यग इण्डिया', 'नवजीवन' और 'हिन्दी नवजीवन' का नाम 'हरिजन' रख दिया। गाधी जी के अछूतोद्धार तथा अस्पृश्यता–विरोधी नीति का यह परिणाम था। 2

गाधी जी इन पत्रो के माध्यम से एक सजग पत्रकार के रूप मे भारतीय जनमानस पर छा गए। गाधी जी के व्यक्तित्व ने जनता पर जादू सा कर दिया था उनकी एक आवाज पर देश के कर्मठ और स्वतत्रता प्रेमी लोग मर मिटने को तैयार हो गए। उन्होने सामाजिक कुरितियो और दूषित परम्पराओं के विरोध मे आवाज उठाई, वही भारत माता की परतत्रता की बेडियो को तोडने के लिए देश मे चल रहे आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया तथा सत्याग्रह असहयोग और भारत छोडो जैसे आन्दोलनो को नेतृत्व प्रदान किया। 3

इस युग के कुछ प्रमुख पत्र थे– 'आज' (बनारस 1920), 'स्वतंत्र' (कलकत्ता 1920), 'कर्मवीर' (जबलपुर, खडवा 1920), 'सैनिक' (आगरा 1925), 'महारथी' (दिल्ली 1925), 'सघर्ष' (1935), 'विप्लव' (लखनऊ 1938), 'नवजीवन' (1939), प्रजामडल

1,2,3, हिदी पत्रकारिता ,विविध परिदृश्य, संजीव भानावत, पृष्ठ 64,65

पत्रिका (इदौर 1940), 'जीवन' (ग्वालियर 1940), 'ससार' (काशी 1947), आदि। 1

5 सितम्बर सन् 1920 से 'आज' का प्रकाशन एक ऐतिहासिक घटना है। 'आज' के संपादक बाबूराव विष्णु पराडकर जी ने 'आज' के प्रथम अक मे अपने सपादकीय मे अपने उद्देश्य की चर्चा करते हुए लिखा ' हमारा उद्देश्य अपने देश के लिए सर्वप्रकार से स्वातत्र्य उपार्जन है। हम हर बात मे स्वतत्र होना चाहते है। हमारा लक्ष्य है कि हम अपने देश के गौरव को बताए, अपने देशवासियो मे स्वाभिमान का सचार करे। उनको ऐसा बनाये कि भारतीय होने का उन्हे अभिमान हो, सकोच नही। वह अभिमान स्वतत्रता देवी की उपासना करने से मिलता है। इस प्रकार देश मे स्वतत्रता की अलख जगाते हुए 'आज' ने राष्ट्रीय आन्दोलन की चेतना को अधिक वेगवान बनाया। 2

'अम्बिका प्रसाद बाजपेयी' ने 4 अगस्त सन 1920 को कलकत्ता से 'स्वतत्र' नामक पत्र का प्रकाशन हुआ किया, जो 'गाधी युग' का अन्य तेजस्वी पत्र था गाधी जी के व्याख्यानो और भाषणो को इसमे प्रमुखता से छापा जाता था। राजनैतिक, व्यापारिक तथा साहित्यिक पत्रकारिता का व्यापक स्वरूप इसमे अत्यत प्रखरता के साथ उभरकर आया। 3

सन 1925 मे दिल्ली से रामचन्द्र शर्मा ने 'महारथी' मासिक का प्रकाशन शुरू किया। बिना डिक्लेरेशन के दैनिक पत्र के रूप में 'महारथी' को प्रकाशित करने का साहस भी इस पत्र के सम्पादको ने किया। लगभग नौ माह तक 'महारथी' दैनिक पत्र के रूप मे प्रकाशित होता रहा। यह पत्र भी अपने उग्र विचारो के कारण लोकप्रिय रहा। 'लाला लाजपतराय' की स्मृति मे 20 नवम्बर 1930 को 'महारथी' मे प्रकाशित एक लेख के कारण सपादक 'रामचन्द्र को नौ माह की सजा सुनाई गई।4

1,2,3,4 हिदी पत्रकारिता ,विविध परिदृश्य, संजीव भानावत, पृष्ठ 64,65,68

गाधी युग मे राजनैतिक पत्रकारिता से अलग साहित्यिक पत्रकारिता का अस्तित्व उभरने लगा था। अनेक साहित्यिक पत्रो का प्रारम्भ इस युग मे हुआ। 'मतवाला', 'सुधा', 'चाद', 'माधुरी', 'हस', 'विशाल भारत' आदि पत्रो ने इस युग की साहित्यिक चेतना को रेखाकित किया ही, साथ ही राजनैतिक परिवेश को भी अभिव्यक्ति प्रदान की। 'सरस्वती' पत्रिका काफी पहले ही अपनी साहित्यिक पहचान बना चुकी थी।

देश का शोषण करने वालो को फटकारते हुए तथा देश द्रोहियो को उनके कर्मो का फल भोगना पडेगा, इस विश्वास के साथ एक सपादकीय मे 'मतवाला ने' लिखा– "महात्मा जी समझाते–समझाते हार गए, लाला जी लेक्चर देते–देते थक गए, मालवीय जी का उद्देश्य निष्फल हो गया, नेहरू जी की नाको में दम हो गया, दास युक्ति तर्क खाक में मिल गया। कोटि–कोटि दरिद्रो का करूण क्रन्दन अरण्यरोदन हो गया, हजारो नवयुवक कातर प्रार्थना करके, सत्याग्रह करके, पिकेटिग करके हताश हो गए, परन्तु गोरो की काली जोके अपने भाईयो का रक्त चूसने से बाज न आईं। देश कहते–कहते थक गया, परन्तु इन रक्त वाहिनी मोरियो का प्रखर प्रवाह न रोक सका। सारा देश खद्दर–खद्दर चिल्ला रहा है–––देश रसातल की राह ले, जाति का सत्यानाश हो जाए, धर्म धरती मे धस जाए, मनुष्यत्व की नानी मर जाए, परन्तु ये अभागे देश द्रोही अपने स्वार्थ से तिल भर भी नही डिगेगे, खुदा जाने विदेशियो से इनका कौन सा गहरा रिश्ता कायम हो गया है।–––देश की जागृति निष्फल नही जाती। गरीबो की पुकार सुनकर भगवान का आसन डोल जाता है। भारत उठेगा, कोटि–कोटि दरिद्रो का रक्त पीकर अकडने वाले देश द्रोहियो को उनके कर्मो का फल भोगना पडेगा।" 1

मार्च 1930 को मुंशी 'प्रेमचन्द्र' ने 'हस' का प्रकाशन शुरू किया। हंस भी गांध ी जी के विचारो से प्रभावित था। इसके प्रथम अक मे 'हसवाणी' के अन्तर्गत 'हस

---

1. हिंदी पत्रकारिता ,विविध परिदृश्य, संजीव भानावत, पृष्ठ 69

के उद्देश्यो की चर्चा 'प्रेमचन्द' ने इस प्रकार की—"मगर स्वाधीनता मन की एक वृति है, इस वृति का जागना ही स्वाधीन हो जाना है। अब तक इस विचार ने जन्म ही न लिया था। हमारी चेतना इतनी मद, शिथिल और निर्जिव हो गई थी कि उसमे ऐसी महान कल्पना का आविर्भाव ही न हो सका था, पर भारत के कर्णधार महात्मा गाधी ने इस विचार की सृष्टि कर दी। अब वह बढेगा, फूले—फलेगा, अब से पहले हमने उद्धार के जो उपाय सोचे वह व्यर्थ सिद्ध हुए, हालाकि उनके आरम्भ मे तो सत्ताधारियो की ओर से ऐसा ही विरोध हुआ था। इसी भाति इस सग्राम में भी एक दिन हम विजयी होगे। वह दिन देर से आयेगा या जल्द, यह हमारे पराक्रम बुद्धि और साहस पर मनुहसर है। हमारा धर्म है कि उस दिन को जल्द से जल्द लाने के लिए तपस्या करते रहे। यही 'हस' का ध्येय होगा, और इसी ध्येय के अनुकूल उसकी नीति होगी। 1

सन् 1920 मे जबलपुर से 'कर्मवीर' साप्ताहिक का प्रकाशन हुआ। यह पत्र प॰ माखनलाल चतुर्वेदी' का था। माधव राव तथा छेदीलाल ठाकुर इसके संपादक थे। कुछ समय बाद (1925) कर्मवीर का प्रकाशन खडवा से होने लगा। 'कर्मवीर' जन्म से ही सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियो का केन्द्र रहा। इसने राजनीति मे गरमदल का सर्मथन करते हुए स्वतत्रता की अखड ज्योति को अधिक दीप्त किया।2

श्री गणेश शकर विद्यार्थी के शिष्य श्री 'कृष्ण दत्त पालीवाल' ने आगरा से 'सैनिक' साप्ताहिक का प्रकाशन शुरू किया। सन् 1925 ई॰ मे यह दैनिक हो गया। 'यथा नाम तथा गुण' कहावत को चरितार्थ करते हुए इस पत्र ने सैनिक के समान ही साहस शौर्य और पराक्रम एव सूझबूझ का परिचय दिया। उत्तर प्रदेश के जनजीवन को स्वाधीनता आन्दोलन के प्रति सजग और प्रेरित करने मे इस पत्र की उल्लेखनीय भूमिका रही। 3

1,2,3, हिदी प्रत्रकारिता ,विविध परिदृश्य, सजीव भानावत, पृष्ठ 69,70

'यशपाल' का 'विप्लव' भी विप्लवकारी पत्र था। यशपाल की क्रान्तिकारी कहानियो और लेखो ने ब्रिटिश साम्राज्य व्यवस्था की दिवारे हिला दी। अक्टूबर 1938 को लखनऊ से प्रकाशित इस पत्र का प्रकाशन ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा अधिक जमानत मागे जाने के कारण जून 1940 मे स्थगित कर दिया गया। इसके बाद 'विप्लव–ट्रेक्टो' नाम से इसका प्रकाशन शुरू किया गया किन्तु सरकार ने जून 1941 मे इस पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया। पत्र का मुख्य उद्देश्य इसके मुख्यपृष्ठ पर प्रकाशित रहता था–

"तुम करो शाति समता प्रसार
'विप्लव'! गा अपना अनल गान"। 1

सन् 1936 ई॰ मे नई दिल्ली से 'दैनिक हिन्दुस्तान' का प्रकाशन शुरू हुआ। इस दैनिक ने भी स्वतत्रता आन्दोलन की मशाल को जलाए रखा। सन् 1942 मे इससे छ हजार रूपये की जमानत मागी गयी। 2

गुप्त प्रकाशन – ('रणभेरी'):–

स्वतत्रता सग्राम के इस आन्दोलन मे तत्कालीन पत्रो ने जिस दायित्व बोध का परिचय दिया, वह प्रशसनीय है। यहा उन गुप्त प्रकाशनो की चर्चा है जिनके द्वारा गुप्त रूप से जनता को आजादी की लडाई मे भाग लेने की प्रेरणा दी गई, इनमे 'रणभेरी' महत्वपूर्ण है।

'आज' तथा 'ज्ञान' से सन् 1930 मे दो–दो हजार रूपये की जमानत मागी गई। जमानत न देने की स्थिति मे प्रेस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। इसके बाद 'आज' का प्रकाशन साइक्लोस्टाइल करके किया गया। साइक्लोस्टाइल पर भी प्रतिबन्ध लगा दिए जाने पर 'रणभेरी' का प्रकाशन गुप्त रूप से किया जाने लगा। कई अंक तो पराडकर जी ने स्वय अपने हाथ से लिखकर निकाले। 'रणभेरी' के दैनिक

1,2. हिदी प्रत्रकारिता ,विविध परिदृश्य, सजीव भानावत, पृष्ठ 69,70

सस्करण दो पृष्ठो के तथा साप्ताहिक रविवारीय सस्करण चार पृष्ठो के होते थे। सपादक 'सीताराम' प्रकाशक पुलिस सुपरिटेडेट कोतवाली बनारस का नाम पत्र पर अकित रहता था। सन् 1932 मे 'रणभेरी' का प्रकाशन 'हैण्डप्रेस' के द्वारा करने का प्रयास किया गया। सन् 1942 मे 'रणभेरी' के प्रेस पर छापा मार कर अनेक लोगो को गिरफ्तार किया गया। इन सब कठिनाइयो के बावजूद 'रणभेरी' अपने लक्ष्यो मे काफी हद तक सफल रही। 1

राष्ट्र के गौरव की प्रतिष्ठा और स्वतत्रता प्राप्ति तत्कालीन समाचार पत्रो का मुख्य उद्देश्य था। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए लेखको, पत्रकारो, सपादको ने देश निर्वासन, कारावास, अर्थदण्ड, घर– परिवार के प्रति मोह का त्याग सभी कुछ स्वीकार किया, किन्तु राष्ट्र के सम्मान और गौरव पर कोई आच नही आने दिया। 'अमृत बाजार पत्रिका' के सपादक मोतीलाल घोष ने अमृत बाजार पत्रिका के सम्पादन का आत्मीयता पूर्ण प्रस्ताव तिलक जी को दिया। जिसे लोकमान्य तिलक के जातीय स्वाभिमान ने अस्वीकार कर दिया था। 25 सितम्बर 1897 को अपने पत्र मे तिलक जी ने लिखा "सत्य का समर्थन और राष्ट्रीय आर्दश की रक्षा करने के अपराध मे यदि पूना के बदले अडमान रहना पडे, तो वह श्रेयकर है। यदि मुझे सजा हुई तो देशवासियो की जो सहानुभूति मुझे प्राप्त होगी वह मुझे बल देगी।" 2

इतने लम्बे संघर्ष और बलिदान के बाद स्वतत्रता का सूर्य उदय हुआ।

1, पराडकर जी और हिदी पत्रकारिता–लक्ष्मी शंकर व्यास पृष्ठ 95

2, समकालीन पत्रकारिता, स0 राजकिशोर पृष्ठ 16

द्वितीय अध्याय

"स्वातंत्रयोत्तर भारत में हिन्दी पत्रकारिता का स्वरूप"

(क). **कालगत**— दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक।

(ख). **विषयगत**— राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, बाल—साहित्य, नारी—विषयक, फिल्म, अपराध, खेल, धर्म, शिक्षा, रोजगार, नेत्रहीनो (ब्रेल) के लिए, विज्ञान, सरकारी नीति, स्वास्थ्य, शोध, कृषि और साहित्यिक पत्रिकाए—

साहित्यकी विधाएं— कविता, नाटक, सस्मरण, साक्षात्कार, डायरी, पुस्तक—परिचय, कहानी, उपन्यास, आलोचना लेख।

द्वितीय अध्याय

स्वातंत्र्योत्तर भारत में हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जनजीवन और पत्रकारिता

लम्बे थका देने वाले और अन्तत निराश कर देने वाले रक्त–रंजित विभाजन के बाद सन् 1947 ई0 में देश को आजादी मिल गयी। स्वतत्रता के स्वर्णिम किरणो से नहाये भारतीय जनमानस मे असंख्य सपने जन्म ले चुके थे। वह विचार–जिसे भारतीय नेताओ ने एक स्वर्गलोक की तरह जनता के मानस मे उतार दिया था वह था 'स्वराज'। कल तक जो न प्राप्त होने वाला दिव्य लोक जैसा था, वह आज जनता के द्वार पर आकर खडा हो गया।

" भारत के स्वाधीन होने के साथ ही भारतीय जीवन मे नए मसूबे फुदकने लगे।" समकालीन भारतीय साहित्य मे स्वतत्रता की संध्या के पूर्व और 15 अगस्त सन् 1947 ई0 के बाद आह्लादकारी मनोभावों की प्रचुर अभिव्यजना हुई है। 1

आजादी के बाद भारतीय जनता के मनोभावो की अभिव्यक्ति हिदी साहित्य मे विभिन्न पत्र–पत्रिकाओ के माध्यम से हो रही थीं। जनता के मनोभावो मे परिवर्तन आश्चर्यजनक थें। यदि स्वतत्रता के बाद के भारतीय जीवन की सामाजिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करे तो कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त होते है।

---

1 स्वातत्र्योत्तर हिन्दी कहानी का विकास – पृष्ठ 36

आजादी प्राप्त होते ही ऐसा लगता था कि भारतीय जीवन का एक अध्याय बद हो गया और जीवन के नए आयाम सामने आने लगे। जीवन के अनेक खट्टे–मीठे अनुभव अभिव्यक्त होने के लिए पक्षी की तरह पख फडफडाने लगे। आजादी के साथ प्राप्त विभाजन का गहरा जख्म जनमानस के अन्तर्मन को मथ रहा था कि आजादी और विभाजन से देश को क्या मिला। विभाजन जिन समस्याओ के समाधान के लिए स्वीकार किया गया था उनमे जरा भी परिवर्तन नही आया।

देश का विभाजन जैसे देश की जनता की 'दुखती रग' बन गया। विशेषकर वह वर्ग जिसने इस पीडा के दश को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भोगा था। विभाजन की पीडा इतनी गहरी थी कि उसकी कसक आज तक लोग नही भूले हैं। एक पाकिस्तानी लेखिका की कहानी 'यह पुरवाई तो नहीं' (1) इस बात की ओर सकेत करती है कि देश के विभाजन के परिणामस्वरूप थोडे दिनो के लिए भारत और पाकिस्तान की सीमाओ पर 'जगल–राज' जैसी स्थिति उत्पन्न हो गयी थी।

स्वाधीनता के बाद जनमानस में आये परिवर्तनो मे मनोवैज्ञानिक परिवर्तन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह परिवर्तन कई स्तरो पर हुआ। स्वतत्रता सघर्ष को सफल होते देख जनता के मन मे यह आशा बधी कि स्वाधीनता के बाद देश की सामाजिक, अर्थिक, राजनैतिक आदि व्यवस्थाओ मे आमूल – चूल परिवर्तन होगे और " सुराज " आयेगा।

जमीदारी प्रथा के उन्मूलन जैसे कदमों के कारण भारतीय जनसामान्य के दलित और पिछडे समुदाय ने सदियो के सामन्ती बधन से मुक्ति प्राप्त की,

---

1 स्वातत्रोत्तर हिन्दी कहानी का विकास – पृष्ठ 39

ओर आर्थिक स्वराज्य के मुक्त आकाश मे सास लिया। साथ ही पचायती राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत ऐसा लगा कि 'ग्राम स्वराज्य' का सपना साकार होगा।

"पचवर्षीय योजनाओ ने आर्थिक स्वावलम्बन के सुनहले सपने लोगो की आखो मे भर दिए।" (1)

आजादी के बाद मोहक सपनो मे खोए मध्यवर्ग को एक के बाद एक कई झटके सहने पडे, मध्यवर्ग का मोह भग हो गया। पचवर्षीय योजनाओ के कारण बडे कारखाने, बाध तथा अन्य योजनाएं बनी और इनका क्रियान्वयन किया जाने लगा, जिससे गाव की जनता को शहरो में रोजगार प्राप्त हुआ और शहरो मे जनसख्या का दबाव बढने लगा। शहरो मे आवास की समस्या उत्पन्न हुई। देश के दूरदराज इलाको मे नयी–नयी खदानो का पता चला, जिससे इन क्षेत्रो मे उद्योगो की स्थापना हुई। इन इलाको मे रहने वाली जनजातिया शहरीकरण के प्रभाव मे आयी और उनके एकाकी जीवन शैली मे परिवर्तन आना शुरू हुआ।

सन् 1962 भारतीय जीवन का महत्वपूर्ण वर्ष है। यही वर्ष था जब नेहरू का आदर्शवाद, समाजवाद, पचशील जैसे सिद्धान्त एक–एक कर धराशायी हो गये। 'हिंदी–चीनी भाई–भाई' का नारा लगाने वाले भारतीय चीन के हाथों बुरी तरह पराजित हुए। इस पराजय ने स्वप्न मे खोए भारतीय जनमानस को झकझोर कर जगा दिया। पूरा भारत एक हो गया, भारत मे इतनी एकता कभी नही आयी थी जितना आजादी के बाद 1962 मे आयी। यही वह समय था, जब जनमानस की इस जागृति के कारण सचार माध्यमो विशेषकर दैनिक अखबारों, पत्रिकाओ मे एक नयी चेतना, ताजगी और एक नया सकल्प प्रगट

---

1 स्वातत्रोत्तर हिन्दी कहानी का विकास– पृष्ठ 38

हुआ विशेषकर अग्रेजी पत्रकारिता के समकक्ष हिदी पत्रकारिता मे। उसका क्षितिज व्यापक हुआ, उनकी दृष्टि गहरी हुई, उनको एक सस्कार मिला। हिन्दी पत्रिकाओ की सभावना को नयी पहचान मिली। 1965 ई0 मे पाकिस्तानी आक्रमण का जबर्दस्त जवाब एक सामन्य से दिखने वाले आदमी 'लाल बहादुर शास्त्री' ने दिया। गाजीपुर के किसान के बेटे अब्दुल हमीद खॉ ने अपनी शहादत से 1965 मे हिन्दी भाषी क्षेत्र का गौरव बढा दिया। (1)

हिदी पत्रकारिता के क्षेत्र का दिन प्रतिदिन विस्तार होता जा रहा था। उसमे राजनीति और समाज के मूलभूत सिद्धान्तो का विवेचन, भाषा साहित्य और सस्कृति के नए आयाम, भारत की दशा का मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया। इसी बीच शुरू हुआ बागला देश मुक्ति आन्दोलन और जेपी (जयप्रकाश नारायण) का जनजागरण अभियान। इन सभी परिवर्तनो को पूर्ण दायित्व के साथ प्रतिबिम्बित किया, हिदी पत्रकारिता ने। और तभी एक जोरदार झटका लगा, जयप्रकाश गिरफ्तार कर लिए गये। देश मे आपातकाल लागू कर दिया गया और पत्र पत्रिकाओ पर सख्ती से सेंसर शिप लागू किया गया। यह एक ऐसा आघात था जिसने पत्रकारिता जगत को सज्ञा शून्य कर दिया। आपस मे बातचीत करना भी खतरे से भरा लगता था। हर दूसरा व्यक्ति सरकार का जासूस जैसा लगता था। (1)

1977 मे आपातकाल हटा लिया गया। पत्रकारिता जगत में जडता खत्म हुयी। आम आदमी जो रेडियो पर ही निर्भर हो गया था उसे अचानक सूचना के विश्वसनीय स्त्रोत प्राप्त हुए। पत्र–पत्रिकाओ के सम्मान में अत्यधिक वृद्धि हुई। आपातकाल के दौरान हुए अत्याचारों का परदाफाश पत्रकारो ने किया, चुनाव हुए और अपराजेय मानी जाने वाली इदिरा काग्रेस बुरी तरह पराजित

---

1 समकालीन पत्रकारिता स0 राजकिशोर – पृष्ठ 33

हुयी। इस पराजय मे पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान था। एक सामान्य सा व्यक्ति समझा जाने वाला पत्रकार जनता की दृष्टि मे नायक बन गया। यह समय पत्रकारिता के विकास का चरम था। इसी मे पत्रकारो के पतन के कारण भी निहित थे। अब पत्रकारो को सत्ता का निर्माता माना जाने लगा, सत्ता सुख का कुछ लाभ उसे भी मिलने लगा। बदले में उसे सच न बोलने की कीमत चुकानी पडी।

सत्ता सुख के लोभ के कारण पत्रकार एक ओर सच न बोलने के लिए विवश हुए, वही अखबार की बिक्री बढाने के लिए नग्नता की सीमा तक सच्चाई बयान करने लगे, बिना यह सोचे समझे कि इस सच्चाई से कितना नुकसान हो रहा है। किसी महिला के साथ दुर्व्यहार की घटना चित्र नाम पता के साथ इस आशय से प्रकाशित की जाती है कि मानो वह महिला दुष्चरित्र थी उसके साथ ऐसा होना ही था। यह स्थिति पत्रकारिता के मूल्यो के लिए घातक थी। जब पत्रकार समाचार के साथ अपने विचार भी थोपने लगे और कोई भी इस स्थिति के विरूद्ध आवाज नही उठाता।

भारतीय समाज अनेकता का सुन्दर उदाहरण है, किन्तु इस सुन्दरता को विकृत करने का काम राजनीति ने किया है तो पत्रकारिता भी इस कार्य मे पीछे नही रही। चुनाव के समय क्षेत्र विशेष के अखबारों में जातीय समीकरण का विश्लेषण देखने योग्य होता है। कोई पत्र लिखता है कि अमुक इलाके मे कुर्मी, अहीर, और भूमिहारो का बाहुल्य हैं तो वहा पर इन्हीं जातियों का प्रत्याशी विजयी हो सकता है। तो दूसरा पत्र लिखता है कि उस इलाके मे ब्राह्मण प्रत्याशी जीत सकता है। इन जातीय विश्लेषणों में कोई भी पत्र यह नही लिखता है कि भारतीय मतदाता परिपक्व है वह इन जातीय समीकरणो

मे नही आने वाला, वही प्रत्याशी विजयी होगा जो जनता का विश्वास जीतने मे सफल होगा।

लोकतत्र का चौथा–स्तभ कही जाने पत्रकारिता ने अभिव्यक्ति की स्वतत्रता के लिए सघर्ष किया, वही इसके द्वारा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को विकृत भी किया गया। सनसनी पैदा करने के लिए पत्रकार उस सीमा तक चले जाते है जो जनहित के विरूद्ध है। और दुख इस बात का होता है कि यह सब जनहित के नाम पर किया जाता है। पत्रकार उन्ही खबरो को प्रकाशित करने मे रूचि लेते है जिन्हे पढने में जनता को मजा आता है। ग्राम प्रधान द्वारा किया गया गबन उसकी दृष्टि मे अधिंक महत्वपूर्ण नही है। यदि ग्राम–प्रधान किसी गरीब महिला के साथ दुर्व्यवहार करता है तो यह घटना तुरन्त महत्वपूर्ण बन जाती है इसलिए नही कि उसे महिला के साथ सहानुभूति है, बल्कि इसलिए कि यह एक चटपटा मसालेदार समाचार है उसके पत्र के लिए।

तस्वीर के कुछ अधेरे पहलू होने के बावजूद हिदी पत्रकारिता निराश नही करती। इलेक्ट्रानिक मीडिया और आर्थिक रूप से मजबूत अग्रेजी पत्रकारिता के मुकाबले मे हिन्दी पत्रकारिता डटी हैं और मजबूत भी होती जा रही है। कुछ समय के लिए यह लगा था कि सचार माध्यमो के प्रवाह मे हिन्दी समाचार पत्र–पत्रिकाए टिक पायेगी या नही, किन्तु यह भय सही सिद्ध नही हुआ हिन्दी समाचार पत्र न केवल जीवित हैं बल्कि इनकी प्रसार सख्या मे भी वृद्धि हुई है। साथ ही मजबूत प्रसार संख्या वाले पत्र और पत्रिकाए एक–एक कर बन्द होती गयी 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक–हिदुस्तान', 'माया' नवभारत टाइम्स के लखनऊ, पटना सस्करण आदि। वही 'इण्डिया टुडे' जो पाक्षिक पत्रिका थी

साप्ताहिक मे परिवर्तित हो हिन्दी की सर्वाधिक विश्वसनीय पत्रिका के रूप मे उभरी है। प्रतिस्पर्द्धा के दौड मे 'हिदी पत्रकारिता' अब पीछे नही है। अत हिदी पत्रकारिता सफलता की नित नयी ऊचाइयो को छूने को तत्पर हैं।

(क) कालगत विभाजन

हिन्दी के प्रथम पत्र 'उदन्त मार्तण्ड'का प्रकाशन 'हिन्दुस्तानियो के हित के हेतु ही हुआ था। हिन्दी पत्रकारिता की यह आदि प्रतिज्ञा है। (1)

पत्रकारिता वह दर्पण है जिसमे हम अपने समाज की प्रतिक्षण बदलती तस्वीर देखते है। समाचार–पत्र वही दर्शाते हैं, जो समाज मे घट रहा है। प्रतिक्षण परिवर्तन के कारण पत्रकारिता मे नित नए शब्द बनाए जाते हैं, परिभाषाए सामने आती है, और नवीन मूल्यो से परिचय होता है। यहॉ तक कि समाचार लाने के लिए पत्रकार किसी भी हद तक जा सकते है इसका नवीनतम उदाहरण 'तहलका' प्रकरण है। 'तहलका' की कार्य शैली पर पर प्रश्नचिह्न लगाया गया।

स्वतत्रता के पश्चात हिन्दी समाचार पत्रो के गुण और सख्या मे अप्रत्याशित वृद्धि हुई है, किन्तु हिन्दी भाषी क्षेत्र की विशालता को देखते हुए यह परिमाण अधिक नही कहा जा सकता।

हिन्दी की प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं को प्रकाशन अवधि, के आधार पर निम्न उपविभागो मे विभाजित किया जा सकता है– (1)

---

1 समकालीन पत्रकारिता मूल्याकन और मुददे, स0 राजकिशोर पृष्ठ 13

(1) **दैनिक समाचार पत्र** :–

ये पत्र प्रतिदिन प्रकाशित होते है, पत्रकारिता की भाषा मे कहा जाए तो इनकी आयु मात्र एक दिन होती है। प्रमुख हिन्दी दैनिक पत्र निम्न है :– ''नवभारत टाइम्स '' (नइ दिल्ली), '' हिन्दुस्तान ' (नई दिल्ली), स्वतत्र भारत (लखनऊ), ' नई दिल्ली' (इन्दौर), ' अमर किरण ' (दुर्ग), 'राष्ट्रीय सहारा' (लखनऊ), दैनिक जागरण (वाराणसी–इला0) 'नवजीवन' (लखनऊ), 'आज' (वाराणसी), 'विश्वमित्र' (कलकत्ता), 'सन्मार्ग' (कलकत्ता) 'जनसत्ता' (नई दिल्ली), ' अमर उजाला' (आगरा), ' अमृत प्रभात' (इलाहाबाद), ' आर्यावर्त' (पटना), ' पंजाब केशरी', वीर अर्जुन (दिल्ली), 'राजस्थान पत्रिका ' 'जनवार्ता' 'दैनिक भास्कर' आदि।

(2) **साप्ताहिक पत्र** –

अनेक महत्वपूर्ण साप्ताहिक जिनका प्रकाशन अब बन्द हो चुका है, और कुछ पाक्षिक साप्ताहिक हो गये । महत्वपूर्ण पत्रिकाओ के नाम है – ''साप्ताहिक हिन्दुस्तान'' (बन्द दिल्ली), धर्मयुग (बन्द बम्बई), ' दिनमान' (बन्द), 'रविवार' (बन्द कलकत्ता), 'गाण्डीव', इण्डिया टुडे (पहले पाक्षिक अब साप्ताहिक)।

(3) **पाक्षिक पत्र** –

'माया' (इलाहाबाद), 'वामा' (दिल्ली), 'पॉच जन्य' 'राष्ट्रधर्म', 'सरिता', 'मुक्ता' (पारिवारिक पत्रिका दिल्ली), ' चपक' 'सुमन सौरभ' (बच्चों और किशोरो की पत्रिका)।

(4) **मासिक पत्र** –

'कल्पना' (बन्द), 'अजन्ता' (बन्द), 'माध्यम', 'सर्वोत्तम' (डाइजेस्ट), 'यूनेस्को

दूत' (हिन्दी निदेशालय), ' नवनीत' (डाइजेस्ट), ज्ञानोदय (बन्द) 'पहल' कादम्बिनी (दिल्ली) 'आजकल' 'योजना' (केन्द्र सरकार), 'आन्ध्र प्रदेश' (आन्ध्र प्रदेश सरकार), 'जनसाहित्य' 'सप्तसिन्धु' 'सारिका' 'कहानी' 'कहानीबार', सचेतना', 'निहारिका' 'साहित्य सदेश, 'समीक्षा' 'हस' (दिल्ली), 'गगा' (दिल्ली), कल्याण (गोरखपुर), 'कथादेश' ।

(5) <u>त्रैमासिक – पत्र</u> –

'देवनागर ' (हिन्दी परिषद, बन्द), ' भाषा' (केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय), 'अनुवाद', (1) 'निरोगधाम' (स्वास्थ्य पत्रिका)।

विभिन्न समाचार–पत्र पत्रिकाओं के उल्लेख के पश्चात भाषा पर क्रमबद्ध सक्षिप्त विवेचन किया जाएगा। कुछ प्रमुख दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, पत्रिकाओ के भाषा रूपो पर विचार किया जा रहा है।

<u>दैनिक समाचार पत्रो की भाषा</u> –

दैनिक समाचार पत्रों का प्रकाशन प्रतिदिन होता है, तथा यह अधिक से अधिक पाठको तक अपनी बात पहुचाने का प्रयास करते हैं। दैनिक पत्रो का समाचार की प्रमुखता निर्धारित करने के मुख्य मापदण्ड निम्न हैं–

(1) राष्ट्रीय समाचार (2) स्थानीय समाचार (3) अन्तर्राष्ट्रीय समाचार
(4) सम्पादकीय टिप्पणी (5) जनपदो के समाचार

(1) **<u>राष्ट्रीय समाचार</u>–**

राष्ट्रीय समाचार प्राप्ति का मुख्य माध्यम विभिन्न समाचार एजेसियां तथा वरिष्ठ संवाददाता होते हैं। जो लगभग सभी प्रमुख समाचार पत्रो को एक साथ

---

1 पत्र पत्रिकाओ की सूची के लिए–हिन्दी साहित्य का इतिहास डा0 नगेन्द

टेलीप्रिंटर के माध्यम से समाचार प्रेषित करते है। ये एजेन्सिया हैं– 'पी0 टी0 आई0' (P T I), 'यू0 एन0 आई0' (U N I), 'वार्ता', 'भाषा'।

समाचार पत्रों के राष्ट्रीय समाचारो की भाषा की दो मुख्य विशेषताए सामने आती है–

(1) मानक हिन्दी का प्रयोग

(2) अनुवादित भाषा का प्रयोग

इन समाचारो के पाठक सामान्यत पूरे देश मे पाये जाते है। इन समाचारो मे मानक हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। किसी भी विवाद से बचने के लिए भाषा प्रयोग मे सावधानी बरती जाती है। समाचारो पत्रो की मानक भाषा के कुछ उदाहरण–

शीर्षकः–

"वामपक्षी कम्युनिस्ट गृहयुद्ध द्वारा चीन की सहायता करने को उत्सुक"

नई दिल्ली। केन्द्रीय गृहमत्री श्री गुलजारी लाल नदा ने आज अपने देशव्यापी रेडियो भाषण मे कहा कि सरकार को इस बात पर यकीन करने का यथेष्ट कारण है कि भारत मे वामपक्षी कम्यूनिस्ट पार्टी का संगठन चीन की प्रेरणा से हुआ है। (स्वतत्र भारत 2 जनवरी 1965)

शीर्षकः–

"तिब्बतियों से दुर्व्यवहार की जांच होगी"

नई दिल्ली, 20 दिसम्बर (एजेन्सिया)

उच्चतम न्यायालय ने आज दिल्ली पुलिस द्वारा तिब्बंती लडकियो से दुर्व्यवहार करने के आरोप की न्यायिक जाच का आदेश दिया। चीनी प्रधानमत्री

ली–फग के दौरे का विरोध करने के कारण पुलिस ने इन महिलाओ को 15 दिसम्बर को गिरफ्तार किया था।

(नवभारत टाइम्स 21 दिसम्बर, नई दिल्ली 1991)

विभिन्न वर्षो अन्तराल के समाचारो की भाषा की देखने से स्पष्ट हो जाता है कि समाचार पत्रो की भाषा का मुख्य स्वरूप सूचनात्मक है। कम से कम शब्दो मे अधिक से अधिक सूचना पाठकों तक प्रेषित करना इन समाचार पत्रो का मुख्य उद्‌देश्य है। इसी उद्‌देश्य के कारण समाचार पत्रो मे कभी–कभी नए–नए शब्द गढे जाते रहे हैं जो समाचार के आकर्षण को बढाने के साथ–साथ कालान्तर मे समाचार की भाषा के लिए रूढि बन जाते है जैसे– 'घुसपैठिया', 'कारसेवक', मंदडिया', तेजडिया', 'बिकवाली', 'सूचकाक' आदि।

समाचार पत्र सकर भाषा का भी प्रयोग करते हैं। अग्रेजी–हिन्दी तथा प्रचलित अरबी, फारसी के शब्द, सस्कृत पद्धति की सधियों–समासो जैसे– काग्रेसाध्यक्ष, मैट्रिकेत्तर, कम्यूनिस्टत्तेर (नवभारत टाइम्स, बम्बई), परगनाधि ाकारी, थानान्तर्गत (नवभारत टाइम्स बम्बई), थानाध्यक्ष (देवदूत प्रयाग), गैर डिग्री धारी (राजस्थान पत्रिका जयपुर), बैटरीचालित (हिन्दुस्तान दिल्ली), आदि। (1)

परसर्गो के विविध अर्थो मे प्रयोग मुद्रण वर्णो एवं यंत्रो, समाचार पत्रो के कालम के स्थान तथा पत्र की साज सज्जा के अनुरूप भाषा में यथेष्ट परिवर्तन, जनता को आकर्षित करने के लिए भाषा का चमत्कारिक एव सम्मोहक शैलीगत प्रयोग,विविध अर्थो मे प्रयुक्त रूढ शब्दावली , नवीन वस्तुओ, आविष्कारो एव आन्दोलनो के लिए नए–नए शब्दों की रचना, राजनीतिक प्रतिबद्धता के अनुरूप, घटनाओ की व्याख्या और वर्णन शैली, प्रादेशिकता और स्थानीय रग का मिश्रण आदि समाचार पत्रो की भाषा की कतिपय प्रमुख प्रवृतियॉ हैं। 1

---

1 हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम, डा0 वेद प्रताप वैदिक प्र0स0 पृष्ठ 499

2 स्थानीय समाचार –

समाचार पत्र जिस शहर से प्रकाशित होता है वहॉ के समाचार को विशेष वरीयता दी जाती है एक या दो पृष्ठ स्थानीय समाचारो के लिए सुरक्षित रहता हैं, इन समाचारो की भाषा स्थानीय भाषा से प्रभावित होती है। स्थानीय समाचारो मे शैक्षणिक, सास्कृतिक गतिविधियॉ, अपराध, दुर्घटना आदि से सम्बद्ध समाचार होते हैं।

3 अन्तर्राष्ट्रीय समाचार –

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार मुख्यत विदेशी समाचार एजेन्सियो व सवाददाताओ द्वारा दिए जाते है जिनका हिन्दी मे अनुवाद किया जाता है, जिससे इन समाचारों की भाषा मुख्यत सूचनापरक ही होती है।

4 सम्पादकीय टिप्पणी –

दैनिक समाचार पत्रो की दिशा तय करने तथा नीति को व्यक्त करने का मुख्य माध्यम सपादकीय पृष्ठ होता है। इस पृष्ठ मे प्रकाशित सामग्री से समाचार पत्र के स्तर का अनुमान लगाया जा सकता है कभी–कभी कुछ सपादकीय देश की दिशा ही बदल देते हैं सपादकीय पृष्ठ मे सपादक यथासभव अपनी विद्वता प्रदर्शित करने के साथ इस बात का भी ध्यान रखता है कि उसकी बात आम आदमी की समझ मे आ जाए। इसलिए वह विद्वतापूर्ण भाषा के साथ बोधगम्य भाषा का प्रगोग करता है।

सपादकीय पृष्ठ मे अन्य दो या तीन लेख, पाठको के पत्र, एक अन्य स्तम्भ। इस पूरे पृष्ठ की भाषा मे अन्य पृष्ठो की अपेक्षा गम्भीरता अधिक होती है।

---

1 हिन्दी पत्रकारिता का विविध आयाम, डा0 वेद प्रताप वैदिक प्र0स0 पृष्ठ 499

जनपदों के समाचार –

इन समाचारो को प्रेषित करने वाले अल्प शिक्षित ग्रामीण सवादाता होते हैं ये अपनी टूटी–फूटी भाषा मे समाचार लिख कर भेजते हैं। जिसे सपादकीय विभाग काट–छॉट कर प्रकाशित कर देता है। फिर भी इन समाचारों मे त्रुटियो की बहुलता होती है और अक्सर वही स्थानीय समस्याओ का उल्लेख रहता है उदाहरण –

" वार्ड नं0 16 में गंदगी का साम्राज्य"

(बरेली व्यूरों) पूरनपुर (पीलीभीत) नगरपालिका का पूरा नगर कूडे के ढेर से ढलाव घर बन गया है। जिसमे मो0 गणेश गज के वार्ड नं0 16 में गंदगी का इतना भीषण साम्राज्य है कि लोगो का निकलना दूभर हो गया हैं।

(स्वतत्र भारत 12 नवम्बर 1996)

वर्तमान युग मे भाषा के स्वरूप को प्रभावित करने, परिवर्तित और विकसित करने मे समाचार पत्रो की भूमिका महत्वपूर्ण है, ऐसी स्थिति मे जब कि हिन्दी एक भाषा के रूप मे प्रतिष्ठित हो चुकी है, मासिक अथवा अल्प दीर्घावधि, नियतकालिक पत्रो द्वारा इसके स्वरूप विकास की संभावना उतनी नही है जितनी दैनिक समाचार पत्रो द्वारा। दैनिक पत्रो की तत्कालिक प्रवृति के कारण "अखबार या पत्रकारिता को जल्दबाली मे लिखा गया साहित्य" कहा गया है, इसके अतिरिक्त पूरा समाचार पत्र एक लेखनी का परिणाम नही होता है। अर्द्धशिक्षित ग्रामीण सवाददाता से लेकर प्रधान सपादक तक अपनी लेखनी की कला दिखाने में लगे रहते हैं, जिससे समाचार पत्र की भाषा में विविधता आ जाती है हिन्दी दैनिक पत्रो के समक्ष अनेक भाषा सम्बन्धी समस्यायें है जैसे – अंग्रेजी मे प्राप्त समाचारो का अनुवाद, टाइप में फैलाव के कारण प्राप्त समाचारो का सक्षेपीकरण, अचलो मे हिन्दी भाषा के विविध क्षेत्रीय

रूप, वर्तनीगत वैविध्य आदि।

एक ओर जहॉ अग्रेजी पत्रो की तुलना मे हिन्दी पत्रो की कुछ सीमाए है वही दूसरी ओर हिन्दी पत्रो के कुछ विशेषाधिकार भी हे, हिन्दी के समाचार पत्र लोकप्रिय होते है तथा समाज के सभी वर्गो द्वारा पढे जाते है। वे जीवन के राजनीतिक, सामाजिक, सास्कृतिक, व्यावसायिक, खेलकूद एव चलचित्र आदि सभी पक्षो को प्रस्तुत करते है तथा औसत भारतीय परिवार के सभी सदस्यो अर्द्धशिक्षित, और शिक्षित तथा बच्चो, महिलाओ और वयस्को के लिए पठनीय सामग्री प्रस्तुत करते हैं, अत हिन्दी पत्रकार विविध स्तभो मे भाषा के स्वरूप रचना के समय सभी वर्गो की ओर दृष्टि रखता है वर्तमान जीवन की नव्यतम स्थितियों को सबसे पहले लिखित रूप मे पाठको तक पहॅुचाने का उत्तरदायित्व दैनिक समाचार पत्रो का है। किसी घटना या स्थिति विशेष का सामना सर्वप्रथम समाचार पत्र ही करते हैं, इसके लिए उन्हें अनेक बार प्रचलित पद्धति से हटना पडता है, तथा व्याकरणिक मान्यताओ का उल्लघन भी करना पडता है। ऐसा वे स्वय को अपने पाठको की बौद्धिक क्षमता और अवधारणा शाक्ति के अनुरूप बनाए रखने के लिए करते है कभी किसी नई और जटिल पद्धति को लोकप्रिय बनाने की जिम्मेदारी समाचार पत्रों पर आ पडती है। ऐसे अनेक कारणो से उनकी भाषा मे व्यापकता, सर्वजन सुलभता, प्रयोगधर्मिता और लचीलापन होता है जो उसे एक विशिष्टता प्रदान करता है। भाषा शास्त्रियो ने सकेत किया है कि प्रयोग क्षेत्रों के अनुसार भाषा एक विशिष्ट स्वरूप धारण कर लेती है, अथवा प्रचलित शब्दावली में से ही चुन लेती है इस स्वरूप और शब्दावली के कारण ही विशिष्ट क्षेत्र की भाषा सामान्य भाषा और साहित्यिक भाषा से अलग प्रतीत होने लगती है, पत्रकारिक भाषा की भी यही स्थिति है। (1)

---

1 हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम डा0 वेद प्रताप वैदिक प्र0स0 पृष्ठ 499

समाचार पत्रो मे प्रयुक्त भाषा का स्वरूप विशिष्ट है अवश्य, परन्तु यह विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भाषा की तरह विशिष्ट नही है, जिसका जनता से कोई सम्बन्ध नही होता, समाचार पत्रो की भाषा साहित्यिक नही होती, किन्तु यह एकदम सडक छाप या बाजारू भाषा भी नही होती, यह इन दोनों के मध्य की भाषा है, समाचार पत्रो द्वारा प्रयुक्त भाषा का प्रभाव क्षेत्र व्यापक है। फलत सामान्य लोक व्यवहार मे वही भाषा चलती है जिसे दैनिक समाचार पत्र चलाते हैं।

साप्ताहिक (पाक्षिक) पत्रों की भाषा –

दैनिक समाचार पत्रो की भाषा की अपेक्षा साप्ताहिक और पाक्षिक पत्रो की भाषा मे अनगढ भाषा का अभाव होता है। पर्याप्त समय होने के कारण सपादक मण्डल समाचार विश्लेषण, आलोचना, कहानी, उपन्यास (अश), कविता, खेल–जगत, फिल्म–जगत, बाल–जगत, महिला–जगत, स्वास्थ्य चर्चा, यात्रा–वृतान्त जैसे नियमित स्तभो को बडे जतन से सवारकर प्रकाशित करने का प्रयास करता है, साप्ताहिक या पाक्षिक पत्रो मे स्तभो के अनुसार भाषा मे विविधता होती है। महिला–जगत स्तभ मे महिलाओ के मनोविज्ञान को ध्यान मे रखकर वैसी ही भाषा का प्रयोग किया जाता है। यदि बच्चो से सम्बन्धित स्तंभ हो तो बच्चो की ही भाषा और उनसे तादात्म्य बनाने के लिए किसी काल्पनिक भैया या दीदी का नाम सम्बोधित किया जाता है। जिसे लिखने वाला सपादक मण्डल का ही कोई सदस्य होता है। अपने विभिन्न स्तभो के कारण कुछ साप्ताहिक अत्यन्त लोकप्रिय हुए जैसे "धर्मयुग" साप्ताहिक हिन्दुस्तान और इण्डिया टुडे आदि।

---

1 हिन्दी पत्रकारिता के विविध आयाम, डा0 वेद प्रताप वैदिक प्र0स0 पृष्ठ 499

मासिक पत्रों की भाषा –

इन पत्रो का पाठक समाज का एक विशेष वर्ग होता है। जो इन पत्रो को विशेष रूचि या उद्देश्य के लिए पढता है। इन पत्रो मे भी कुछ स्थायी स्तभ वही होते है जो साप्ताहिको मे होते हैं। मासिक पत्र मुख्यत. साहित्यिक होते हैं। जिनका उद्देश्य साहित्य की विभिन्न विधाओ को प्रोत्साहन देना होता है, "हस" "कादम्बिनी" " आजकल" "सारिका" आदि पत्रिकाएं साहित्य सेवा मे मे योगदान कर रही है। इनकी भाषा मे मानकता का गुण पाया जाता है। क्योकि इसके लेखक और पाठक दोनो गहरे साहित्यिक बोध से युक्त होते हैं।

मासिक पत्रो की भाषा का एक उदाहरण "आजकल" का भावी रूप क्या होगा? इन प्रश्न का उत्तर एक ही हो सकता है, और वह यह कि "आजकल" राष्ट्रीय थाती का साथ कभी नही छोडेगा, वर्तमान इसे सदैव प्रिय रहेगा, और भविष्य के वातायन मे झाकने की बात भी वह कभी नहीं भुलाऐगा। सस्कृति और कला, पुरातत्व और इतिहास, नृशास्त्र और लोकवार्ता साहित्य और जीवन, सामाजिक जागरण और आर्थिक प्रगति, शस्य श्यामला वसुधा का आर्शीवाद और पावन नदियो का सदेश, राष्ट्र के पशु पक्षी, पुष्प वनस्पति और राष्ट्र के अनेक जनपदो की लोक सस्कृति यह सब सदैव "आजकल" को प्रिय रहेगें।" (1)

त्रैमासिक (अर्द्धवार्षिक, वार्षिक) पत्रों की भाषा

त्रैमासिक (अर्द्धवार्षिक, वार्षिक), इन पत्रो की भाषा में समरूपता पाई

---

1 'आजकल' सपादकीय मार्च 1948

जाती है। क्षेत्र विशेष से प्रकाशित होने के बावजूद इनमें क्षेत्रीयता का अभाव तथा राष्ट्रीयता की छाप होती है। इन पत्रो के पाठक पूरे देश मे फैले होने के कारण ये पत्र पूरे देश के वैविध्य को समेटने का प्रयत्न करते हैं।

(ख) **विषयगत विभाजन –**

पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित विषयवस्तु के आधार पर इन पत्र पत्रिकाओ का निम्न वर्गो मे विभाजन किया जा सकता है–

(1) **राजनीतिक पत्र–पत्रिकाएं –**

पत्रकारिता और राजनीति एक दूसरे की पूरक हैं, बिना राजनीतिक समाचारो, लेखो, टिप्पणियो के पत्रकारिता अधूरी रहती हैं। सभी दैनिक समाचार पत्रो मे राजनीतिक समाचारो का आधिक्य रहता है। राजनीतिक विषयो पर गुरू गम्भीर टिप्पणी करने वाले पत्र और पत्रिकाए निम्न हैं –

1 नवभारत टाइम्स	2. जनसत्ता	3 अमर उजाला
4 आज	5 दैनिक जागरण	6 राजस्थान पत्रिका
7 पजाब केसरी	8 नई दुनिया (सभी दैनिक पत्र)	

पत्रिकाएँ –

1 दिनमान	2 रविवार,	3. ब्लिट्ज,	4 माया
5 इण्टिया टुडे	6 पांचजय	7 गाण्डीव	

2. **अर्थ व्यवस्था सम्बन्धीं पत्रिकाएं –**

अर्थ, व्यापार, उद्योग सम्बन्धी जानकारी देने के लिए पत्रिकाओ का प्रकाशन किया जाता है। प्रमुख पत्रिकाए हैं – खादी ग्रामोद्योग (बम्बई), व्यापार

(बम्बई) दलाल स्ट्रीट (बम्बई), सम्पदा (नई दिल्ली), आर्थिक चेतना पत्र (नई दिल्ली), आर्थिक जगत (कलकत्ता), उत्पादकता (कानपुर) तथा उद्यम (नागपुर)।

3 **<u>सामाजिक पत्र – पत्रिकाएं –</u>**

राजनीति और समाज समाचार पत्र–पत्रिकाओ का मुख्य विषय होते हैं, राजनीति से अधिक सामाजिक विषयो को वरीयता देने वाली पत्रिकाए हैं – "सरिता" 'मुक्ता' 'सर्वोत्तम' (डाइजेस्ट),।

4 **<u>बाल – साहित्य विषयक पत्रिकांए–</u>**

बच्चो के मन मस्तिष्क को ध्यान मे रख साहित्य प्रकाशित करने वाली पत्रिकाए बाल पत्रिकाए कहलाती हैं। प्रमुख बाल पत्रिकाए हैं – "नन्दन" 'चपक' 'बाल – भारती', 'पराग' (प्रकाशन बन्द), 'चदामामा' 'मधु मुस्कान' 'लोटपोट' 'नन्हे सम्राट' 'सुमन सौरभ' बाल हस, बाल सखा, चुन्नु मुन्नु (अन्तिम तीन का प्रकाशनबन्द)

पत्र–पत्रिकाओ के अतिरिक्त विभिन्न प्रकाशनों द्वारा कामिक्सों की श्रृखला मे प्रकाशित विषयवस्तु एक अलग शोध का विषय हो सकती है, इन कामिक्सो को 'बाल साहित्य' के अन्तर्गत रखा जाय या नही, इस विषय पर गम्भीर विचार विमर्श आवश्यकता है।

5 **<u>नारी–विषयक पत्रिकाए–</u>**

महिलाओं की रूचियो और आवश्यकताओ को दृष्टि मे रखकर कई पत्रिकाओ का प्रकाशन हो रहा हैं। उनमे मुख्य पत्रिकाए निम्न हैं– 'वामा', 'गृहशोभा', 'मनोरमा', 'मेरी सहेली' आदि।

6 **फिल्म–विषयक पत्रिकाए–**

फिल्मो से सम्बन्धित गतिविधियो, समाचारो और मनोरजक कहानियो का प्रकाशन इन पत्रिकाओ की मुख्य विषय वस्तु है। मुख्य फिल्मी पत्रिकाए हैं– 'मायापुरी', 'माधुरी फिल्म फेयर', 'फिल्मी दुनिया', 'फिल्मी कलिया', आदि।

7 **अपराध–विषयक पत्रिकाएं–**

समाज मे घट रहे विभिन्न अपराधो से सम्बन्धित कहानियो को रोचक ढग से प्रस्तुत करने वाली कई पत्रिकाए प्रकाशित हो रही है, इनमे मुख्य हैं– 'सच्ची कहानिया', 'मनोहर कहानिया', 'नूतन कहानिया', 'सत्यकथा', आदि।

8 **खेल–विषयक पत्रिकाए–**

आधुनिक समय मे खेलो की ओर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है। जिससे स्वतत्र रूप से खेल सम्बन्धी जानकारी देने के लिए खेल सम्बन्धी पत्रिकाए प्रकाशित होने लगी है, प्रमुख पत्रिकाए हैं– 'किकेट सम्राट', 'खेल खिलाडी', 'भारतीय कुश्ती', 'खेल समाचार', 'खेल भारती आदि।

9 **धर्म–विषयक पत्रिकाए–**

धर्म और दर्शन सम्बन्धी जिज्ञासा का समाधान इन पत्रिकाओ का मुख्य उद्देश्य हैं, प्रमुख पत्रिकाए हैं– 'कल्याण', 'अखण्ड ज्योति'।

10 **शिक्षा–प्रसार विषयक पत्रिकाए–**

सरकारी शिक्षा नीति के प्रचार प्रसार हेतु इन पत्रिकाओ का प्रकाशन

किया जाता है प्रमुख पत्रिकाए है– नया शिक्षक (बीकानेर), प्रौढ–शिक्षा (नई दिल्ली), नई शिक्षा (जयपुर), भारतीय शिक्षा (लखनऊ), सचार–माध्यम (दिल्ली), ।

11 <u>**रोजगार–विषयक पत्रिकाए**</u>–

रोजगार विषयक समाचार मार्गदर्शन और सम्बन्धित परीक्षाओं के विषय मे सूचना उपलब्ध कराना, इन पत्रिकाओ का विषय होता है। प्रमुख पत्रिकाए है–'प्रतियोगिता दर्पण', 'प्रतियोगिता किरण', 'क्रानिकल', 'यूथ कम्पटीशन टाइम्स', 'परीक्षा–मथन', 'रोजगार–समाचार', आदि।

12 <u>**नेत्रहीनों के लिए पत्रिका**</u>–

नेत्रहीन बच्चो को शिक्षा सम्बन्धी ज्ञान देने के लिए ब्रेल–लिपि मे पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है जिनका नाम है– नयनरश्मि (त्रैमासिक), शिशु आलोक।

13 <u>**विज्ञान–विषयक पत्रिकाए**</u>–

विज्ञान जगत मे हो रहे नित नूतन आविष्कारो के बारे मे सूचना देने के लिए इन पत्रिकाओ का प्रकाशन किया जाता हैं। प्रमुख पत्रिकाए हैं– 'विज्ञान प्रगति', 'आविष्कार', 'सायफन', 'विज्ञान ज्योति', 'विज्ञान–कला', 'वैज्ञानिक चकमक विज्ञान', 'विज्ञान वैचारिका', 'विज्ञान डाइजेस्ट'।

14 <u>**सरकारी नीति विषयक पत्रिकाए**</u>–

केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारो की नीतियो, योजनाओं को जनसामान्य तक प्रचारित करने के लिए इन पत्रिकाओ का प्रकाशन किया जाता

हैं। प्रमुख पत्रिकाए है– 'योजना' (केन्द्र सरकार), 'कुरूक्षेत्र (केन्द्र सरकार), समाजकल्याण (केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड), उत्तर प्रदेश सदेश (उत्तर प्रदेश सरकार), आध्र प्रदेश (आध्र प्रदेश सरकार), मध्य प्रदेश सदेश (म0प्र0), श्रमिकवार्ता (प0 बगाल), जागृति (पजाब), शिविश (राजस्थान), हरियाणा समाचार (हरियाणा), बिहार समाचार (बिहार), सहकारिता (उ0प्र0)।

15 **स्वास्थ्य–विषयक पत्रिका**–

जनसामान्य के स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओ, व भ्रमो का निवारण तथा स्वास्थ्य विषयक नूतन जानकारी देना इन पत्रिकाओ का मुख्य उद्देश्य होता हैं। प्रमुख पत्रिका है– 'निरोगधाम', स्वास्थ्य जीवन, चिकित्सक (दिल्ली), आयुर्वेदिक सम्मेलन पत्रिका (नई दिल्ली), धन्वतरी (अलीगढ), आरोग्य (गोरखपुर) आपका–स्वास्थ्य (वाराणसी), तथा केयर।

16 **शोध–विषयक पत्रिकाएं**–

विश्वविद्यालयो में हो रहे शोध कार्य से सम्बधित शोध परक लेखो का प्रकाशन इन पत्रिकाओ मे होता है। प्रमुख शोध पत्रिकाएं हैं– 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' (वाराणसी), 'सम्मेलन पत्रिका' (प्रयाग), 'हिंदी अनुशीलन', हिदुस्तानी आदि।

17. **कृषि पत्रिकाएं**–

कृषि के क्षेत्र मे हो रहे नये अनुसन्धानो, भूमि सुधार आदि के सम्बन्ध मे जानकारी देने के लिए इन पत्रिकाओ का प्रकाशन किया जाता है प्रमुख पत्रिकाए हैं– कृषि सुधार, उन्नत कृषि, आधुनिक कृषि दर्शन, कृषक क्रान्ति, किसान सदेश, किसान पचायत, किसान मित्र, गांव ग्रामीण दुनिया, भू भारती,

चौपाल तथा उद्यान जगत।

18 **साहित्यिक पत्रिकाए**–

हिदी साहित्य को नई गति और दिशा देने मे साहित्यिक पत्रिकाओ का अविस्मरणीय योगदान रहा है। नये साहित्यकारो का परिचय साहित्य जगत से कराने मे पत्रिकाए अहम भूमिका निभाती है।

साहित्य की रचना और प्रेषणीयता का आधार मानसिक वृतिया और जीवन की सहज अनुभूतिया हैं। साहित्य का मूल्य जीवन के मूल्यो से भिन्न नही होता और साहित्यिक अनुभूतिया जीवन की अनुभूतियो से कही अलग या विशिष्ट नही होती। पत्रकारिता का भी जीवन मूल्यो से सीधा सम्बन्ध हैं। जिन जीवन मूल्यो की स्थापना साहित्य मे की जाती हैं, उन्हे पत्रकारिता व्यावहारिक आयाम देती हैं। (1)

स्वतत्रता से पूर्व पत्रकारिता मे साहित्यिक पत्रकारिता जैसा कोई विभाजन नही था, सभी पत्र साहित्यिक थे, सभी पत्रकार साहित्यकार। अपनी अलग पहचान रखते हुए भी दोनो एक दूसरे से जुडे हुए थे। जब पत्रकारिता और साहित्य की तुलना की जाती है तो सदैव यह कहा जाता हैं कि "साहित्यकार की पकड सूक्ष्म होती हैं। वही दूसरी ओर पत्रकार अपने इर्द–गिर्द जो कुछ देखता है उसका स्थूल वर्णन कर देता है। पत्रकार जो कुछ लिखता है, उसके तात्कालिक प्रभाव से ही उसका लक्ष्य सिद्ध हो जाता है, जबकि साहित्य मे आम बातो को शाश्वत तथ्यो एव मूल्यो से जोडने की कोशिश की जाती है। इसके लिए एक विशेष प्रकार की रचनात्मक शक्ति की आवश्यकता होती है, जिसमें यह शक्ति होती है और जो सामान्य तथ्यो को भी शाश्वत सत्य से जोडकर

---

1 साहित्यिक पत्रकारिता, डा0 राममोहन पाठक पृष्ठ 1

उन्हे स्थायी अस्तित्व प्रदान करता है, वही साहित्यकार है। पत्रकार के लिए यह शर्त आवश्यक नही होती। उसके लेखन मे तत्कालिक प्रभाव ही मुख्य होता है। श्रेष्ठ स्तर के साहित्य मे सामयिक सस्पर्श होता है, उसकी बहुलता नहीं होती।"(1)

, साहित्यिक पत्रकारिता का आरम्भ भारतेन्दु रिश्चद की पत्र–पत्रिकाओ के द्वारा ही हो गया था "भारतेन्दु का अधिकाश साहित्य पत्रकारिता का साहित्य है। जिसमे तात्कालिक प्रभाव प्रमुख है। इसलिए उसमे उन शाश्वत मूल्यो की कमी है जो साहित्य को युग सीमा से मुक्त करने वाला और उसे युग–युग को आलोक देने की शक्ति से सम्पन्न करने वाला अनिवार्य तत्व है। अर्थात् भारतेन्दु युग का साहित्य शाश्वत मानव मूल्यो और मानवीय संवेदना की कलात्मक भूमि से उदासीन होकर युग धर्म के प्रति अधिक सचेत था, इसलिए वह युग विशेषकर साहित्य होकर रह गया, युग–युग का साहित्य न हो सका। कहना न होगा कि यह धारणा उन कलावादियो की हैं, जो शाश्वत सत्य की चिंता मे युग–धर्म से आख मूद लेते है, यह पलायन की दिशा है। (2)

पत्रकारिता ने हिदी गद्य को रूप और स्थिरता प्रदान किया। हिदी साहित्य की जातीय भूमिका का निर्माण करने मे भी समाचार पत्रो का योगदान सराहनीय हैं। हिदी की साहित्यिक पत्रकारिता ने कितने ही दिग्गज रचनाकारो को जन्म दिया है। 'मतवाला' का प्रकाशन हिदी पत्रकारिता मे साहित्यिक पक्ष के अभ्यूदय का सकेत था। इसी पत्र ने हिदी साहित्य को 'निराला' जैसा कवि दिया। महाकवि जयशकर प्रसाद की प्रारम्भिक रचनाए 'इदु' मासिक मे प्रकाशित हुई थी, और उपन्यास सम्राट 'प्रेमचद' मूलत पत्रकार थे।

गांधी युग की पत्रकारिता के साथ ही हिंदी मे साहित्यिक पत्रकारिता की

1, साहित्यिक पत्रकारिता, डा0 राम मोहन पाठक पृष्ठ 16

2 हिदी पत्रकारिता, कृष्ण बिहारी मिश्र पृष्ठ 4

कहानी शुरू होती है। 'सरस्वती' के अलावा 'माधुरी', 'सुधा', 'मतवाला', 'हस', 'विशाल भारत' आदि पत्र–पत्रिकाओ का प्रकाशन भी गाधी युग मे हुआ। (1) इस युग की पत्रकारिता की सबसे बडी उपलब्धि हैं, आधुनिक काव्य की स्वच्छन्द–धारा। मतवाला के माध्यम से हिदी के सर्वश्रेष्ठ स्वच्छन्दतावादी कवि पडित सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का नाम प्रकाशित हुआ। 'मतवाला' मण्डल के ही प्रमुख सदस्य थे आचार्य शिवपूजन सहाय, जो प्रथम श्रेणी के गद्यकार थे। (2)

स्वतत्रता पूर्व साहित्यिक पत्रकारिता मे योगदान देने वाली प्रमुख पत्रिकाओ का परिचय इस प्रकार हैं।

सरस्वती (1900)–

सन् 1900 में इण्डियन प्रेस के अध्यक्ष श्री चिन्तामणि घोष ने मासिक पत्रिका 'सरस्वती' का प्रकाशन शुरू किया। इस पत्रिका को काशी नागरी प्रचारिणी सभा का अनुमोदन भी प्राप्त था। इसका सम्पादन काशी से होता था।

'सरस्वती' हिदी की पहली सार्वजनिक साहित्यिक पत्रिका थीं। यह अपनी छपाई चित्रो तथा नियमित प्रकाशन के कारण शीघ्र ही हिदी जगत मे लोकप्रिय हो गयी। इसके सपादक मण्डल मे सर्वश्री 'राधा कृष्ण दास', 'कार्तिक प्रसाद खत्री', 'जगन्नाथ दास रत्नाकर', 'किशोरी लाल गोस्वामी' और 'श्यामसुन्दर दास' थे। सन् 1903 में पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' के सपादन का भार स्वीकार किया। (1)

नए लेखको और कवियो को प्रोत्साहन देने का काम आचार्य द्विवेदी ने 'सरस्वती' के माध्यम से किया। वे नए लेखकों को स्वय विषय देते थे उनसे

1. साहित्यिक पत्रकारिता, डॉ0 राम मोहन पाठक पृष्ठ 19
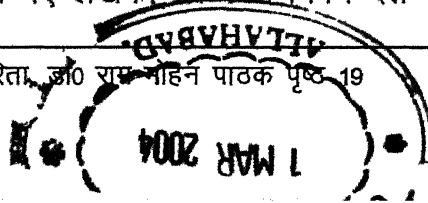
लिखवाते थे, फिर उसका यथोचित सशोधन कर छापते थे। लगभग बीस वर्ष तक 'सरस्वती' पत्रिका का सपादन कर अपनी विद्वता श्रमशीलता और कार्यक्षमता से हिदी साहित्य और हिदी पत्रकारिता के स्तर को उन्नत किया।

'इंदु' मासिक (1909)–

सन् 1909 ई0 मे श्री अम्बिका प्रसाद गुप्त ने काशी से मासिक पत्रिका 'इदु' का प्रकाशन प्रारम्भ किया। 'इदु' का नाम हिदी साहित्य और हिदी पत्रिकाओ मे चिर–स्मरणीय रहेगा। इस पत्रिका के माध्यम से ही महाकवि जयशकर प्रसाद ने अपनी प्रारभिक प्रतिभा का विकास दस वर्ष तक किया। इस पत्रिका के मुख पृष्ठ पर लिखा रहता था–

"सुखद सुशीतल राशि वरषि सुधा शिव भाल से।
चहुँ दिशि कला प्रकाशि 'इदु' सकल मगल करै।।" (1)

चॉद–

यह पत्रिका इलाहाबाद से प्रकाशित होती थी। इसका सम्पादन महादेवी वर्मा ने किया। चॉद का 'फासी अक' काफी चर्चित रहा।

'हंस' मासिक (1930–31)–

प्रेमचद जी ने 1930–31 ई0 मे काशी से 'हस' नामक मासिक पत्र निकाला। प्रेमचद जी मुख्य रूप से कथा लेखक थे। अत' 'हस' मुख्यतया तत्कालीन हिदी कथा साहित्य का प्रतिनिधि पत्र हो गया। यद्यपि इसमे कविता, एकाकी, आलोचना और निबन्ध आदि विधाओ का भी नियमित प्रकाशन होता था। साहित्य के विविध रूपो का सुन्दर सामंजस्य 'हस' मे रहता था। 'हस' द्वारा

1, साहित्यिक पत्रकारिता, डा0 राम मोहन पाठक पृष्ठ 38

प्रेमचद जी ने हिदी कथा साहित्य को बहुत ऊचे धरातलपर पहुचा दिया। अनेक कहानी लेखको को उन्होने बनाया, सजाया, सवारा और फिर साहित्य के क्षेत्र मे उतारा।

'हस' मे प्रेमचद के योगदान की चर्चा करते हुए बाबूराव विष्णु पराडकर ने लिखा–"———"प्रेमचद ने हिदी साहित्य को जनता का साहित्य बना दिया। उसके निर्मल जीवन मे जनवर्ग के प्रतिबिम्ब हैं। प्रेमचन्द के विचार वर्गों को उठाने और मिलाने के भगीरथ प्रयत्न के द्योतक हैं। स्वय प्रेमचद जनता के प्रतीक है, पर उनका यह उज्ज्वल प्रतीक तब तक रहेगा, जब तक हिदी रहेगी और उसके बोलने वाले रहेंगे। (1)

जागरण (1932)–

आलोचना प्रधान शुद्ध साहित्यिक और सचित्र पाक्षिक 'जागरण' फरवरी 1932 ई0 मे काशी से निकला। 'जागरण' शुद्ध साहित्यिक पत्र था। साहित्यिक दलबन्दी और ईर्ष्या द्वेष को मिटाकर साहित्य–ससार मे पारस्परिक बन्धुत्व और सौहार्द की स्थापना करना इसका प्रमुख लक्ष्य था। इसके प्रथम सपादक थे 'शिवपूजन सहाय, सहाय जी के पश्चात सपादन भार सभाला 'प्रेमचद' जी ने। 'प्रेमचन्द' जी के सपादन में 'जागरण' के रूप में और अधिक निखार आया। (2)

माधुरी (1922)–

'माधुरी' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन लखनऊ से 30 जुलाई 1922 को शुरू हुआ। प्रारम्भ मे इसके सपादक थे श्री दुलारेलाल भार्गव और रूपनारायन पाण्डेय।

1,2 साहित्यिक पत्रकारिता, डा0 राम मोहन पाठक पृष्ठ 44, 60

कुछ समय तक प्रेमचद और पडित कृष्ण बिहारी ने 'माधुरी' का सपादन किया था। श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' तथा श्री शिवपूजन सहाय ने भी 'माधुरी' मे काम किया था। 'माधुरी' प्रधानत साहित्यिक मासिक पत्रिका थी। रीतिकालीन अनेक कवियो पर इसमे महत्त्वपूर्ण लेख निकले हैं। इसके अनेक साहित्यिक विशेषाक प्रसिद्ध है। हिदी ससार मे 'माधुरी' का विशेष स्थान हैं। इसका प्रकाशन नवल किशोर प्रेस से होता था। (1)

स्वातंत्र्योत्तर साहित्यिक पत्रकारिता–

स्वतत्रता के कुछ वर्ष बाद हिदी पत्रकारो की जो पीढी तैयार हुई उनमे कर्तव्य बोध से अधिक अधिकार बोध का भाव था। स्वय को बुद्धिजीवी कहने वाला पत्रकार सुविधा भोगी हो गया। अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए वह जनहित को हथियार बनाने लगा। उन्ही दिनो प्रगतिशील पत्रकारिता के नाम पर कुछ साहित्यकार सामने आए। उन्होने साहित्यिक जडता को तोडने का प्रयास किया। 'संगम' साप्ताहिक के सपादक इलाचन्द जोशी 'टाइम्स आफ इण्डिया' द्वारा प्रकाशित नए हिदी साप्ताहिक 'धर्मयुग' के प्रथम सपादक बनकर बम्बई पहुच गए। उन्ही दिनो दिल्ली से भी एक नया साप्ताहिक 'साप्ताहिक–हिदुस्तान' प्रकाशित हुआ। सरकार की ओर से मासिक पत्रिका 'आजकल' शुरू किया गया। (2)

यही वह युग हैं जब हिदी मे लघुपत्रिकाओ का उदय हुआ और हिदी पत्रकारिता व्यावसायिक पत्रकारिता और लघु पत्रिका नाम के दो खेमो मे बट गयी। प्रमुख लघु पत्रिकाए थी – 'नये पत्ते', 'विहान', 'नयी कविता', 'प्रतीक', 'कल्पना', 'नया साहित्य', 'नयापथ', आदि। समाज की जीर्ण–शीर्ण व्यवस्था को चुनौती देने का स्वर इन पत्रिकाओ मे नही उभर पाया। 'निकष', 'हस', और

---

1 साहित्यिक पत्रकारिता, डा0 राम मोहन पाठक पृष्ठ ,66

2 साहित्यिक पत्रकारिता, डा0 राम मोहन पाठक पृष्ठ 111

'सकेत' जैसी पत्रिकाए भी सामाजिक बदलाव मे कोई उल्लेखनीय भूमिका न अदा कर सकी। परिणाम यह हुआ कि 'धर्मयुग' और 'साप्ताहिक हिदुस्तान' जैसी व्यावसायिक पत्रिकाए ही लोगो के आकर्षण का केन्द्र बन गयी। (1)

सन् 1960 तक हिदी पत्रिकाए, व्यावसायिक स्तर पर काफी मजबूत और पाठको मे लोकप्रिय हो चुकी थी। इन पत्रिकाओ मे वे लोग भी लिख रहे थे जो घोर व्यक्तिवादी थे, और वे लोग भी जो वामपथी सिद्धान्तो मे आस्था रखते थे। लघु पत्रिकाए उस समय तक अपना कोई स्वरूप स्थिर नही कर पायी थी। अधिकांश लघु पत्रिकाओ मे कविताओ को बहुलता होती थी, और आधुनिकता के नाम पर मानसिक विलास ही दिखाई देता था, स्वानुभूत सत्यो के चित्रण मे ही लघु पत्रिकाओ से जुडे लेखको ने अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ ली थी। परिणाम यह हुआ है कि इन पत्रिकाओ मे एक ही बात बार – बार छपने लगी। लेखक तेजी से व्यावसायिक पत्रिकाओ की ओर झुकने लगे। (2)

व्यावसायिक पत्रकारिता के प्रति लेखक के मोह भग का पहला परिचय ' रमेश बक्षी' ने दिया, जब वे 'ज्ञानोदय' के सपादक की कुर्सी से उठकर दिल्ली आ गये और उन्होने घोषित किया कि वह अब 'लघुपत्रिका' के क्षेत्र मे ही कार्य करेगे। बक्षी ने अपनी बात को निबाहते हुए न केवल लघु पत्रिका के रूप मे 'आवेश' का प्रकाशन किया बल्कि 1969 ई0 में दिल्ली मे पहली 'लघु पत्रिका प्रदर्शनी' का आयोजन भी किया। इस प्रदर्शनी ने इस सत्य को भी उजागर किया कि हिंदी मे कुल मिला कर 128 लघु पत्रिकाए प्रकाशित हो रही हैं। (अब इनकी सख्या काफी बढ चुकी है।) जिस बडी संख्या में लेखक, पत्रकार, चित्रकार, मूर्तिकार, रगकर्मी प्रदर्शनी देखने आए उससे यह स्पष्ट हुआ कि लघु पत्रिकाओ को कितने बडे क्षेत्र में अपनत्व प्राप्त है। (3)

---

1 साहित्यिक पत्रकारिता, डा0 राम मोहन पाठक पृष्ठ 111

2,3 हिदी पत्रकारिता, विविध आयाम, साहित्यिक लघु पत्रिकाए डा0 धर्मेन्द्र गुप्त पृष्ठ 304

''निकेत' (लघु पत्रिका) के प्रथम अक मे प्रतिबद्ध साहित्य का 'घोषणा–पत्र' प्रकाशित किया गया जिसमे कहा गया कि ''हम महसूस करते हैं कि पिछली चौथाई सदी मे सस्थापित प्रगतिशील लेखक अपनी कृतियो को साहित्य का स्तर तो नही दे सकें, उन रचनाओ को समसामायिक यथार्थ से भी नही जोड सके। उनकी रचनाए अगर उन्हे रचना माना जा सके, समसामयिक समाज के सडन और जनमानस की छटपटाहट मे से किसी भी यथार्थ के प्रति अधी रही और सृजनात्मक अधता के कारण ही समसामयिक सघर्ष के जटिल यथार्थ के सामने वे स्वागत भाषण से अधिक कुछ भी सिद्ध न हो सकी। चौथाई सदी के इन तथाकथित प्रतिबद्ध लेखको ने आम तौर पर साहित्यिक परिवेश मे अपनी गैर–साहित्यिकता को कधे पर लादा, गैर–प्रगतिशील साहित्य का व्यवसाय जीवित रखा। नतीजा यह हुआ कि कधे पर लादा गया, गैर–प्रगतिशील बीता हुआ, समसामयिक यथार्थ से कटा हुआ तथाकथित बडो का साहित्य स्वय प्रगतिशीलता से भी ज्यादा कद्दावर हो गया। नतीजा यह भी हुआ कि प्रगतिशील लेखक पराश्रयी 'पैरासाइट' हो गया, समाज का टुकडखोर हो गया और अपने कधों पर लदे गैर–प्रगतिशील बडो द्वारा बटोरे जाने वाले स्वार्थों से नीचे गिरते अशों मे स्वय व्यस्त हो गया। एक और नतीजा यह भी हुआ कि 'व्यवसाय' जीवित रहा विकसित होता रहा। प्रगतिशील साहित्य की सृजन प्रक्रिया मर गयी।

——— प्रगतिशील साहित्यिक आन्दोलन स्वयं रूढि या सगठन नहीं हैं। यह सगठनात्मक प्रक्रिया भी नही है और आदेशतत्र भी नही, बल्कि यह आन्दोलन आदमी द्वारा अपना इतिहास रचने के सघर्ष की एक निरन्तर विकासमान परिभाषा हैं। (1)

फिर सिलसिला शुरू हुआ लघु पत्रिकाओ के मजाक उडाने का। 'दिनमान'

---

1 साहित्यिक पत्रकारिता, डा0 राम मोहन पाठक पृष्ठ 112

साप्ताहिक ने लघु पत्रिकाओ की जमकर खिल्ली उडाई। किन्तु लघु पत्रिकाओ के मिजाज मे परिवर्तन आया। 'दिनमान' ने लिखा "एक चीज साफ दिखायी देती है, जो राहत देती है और जिसका पूरी तरह स्वागत किया जाना चाहिए वह है छोटी पत्रिकाओ के मिजाज मे परिवर्तन। छोटी पत्रिकाए 'स्त्री की योनि' से निकलकर एक स्वस्थ धरातल पर आ गयी है, मिजाज का यह परिवर्तन कही एक नए फैशन की वजह से तो नही हैं, इसके प्रति स्वय लेखको और इन पत्रिकाओ को सतर्क रहना होगा। (1)

स्वातत्र्योत्तर भारत मे साहित्यिक पत्रिकाओ की बाढ सी आ गयी। जिनमे प्रमुख पत्रिकाए है– धर्मयुग, कल्पना, ज्ञानोदय, अजता, नटरग (नाट्य विद्या सम्बधी), आजकल, सचेतना, सारिका, अक्षरा, गगनाचल कादम्बिनी, कहानी, नईकविता, नए पत्ते, आलोचना, साक्षात्कार, वागर्थ, भाषा, दस्तावेज, निकष, पहल, पूर्वग्रह, प्रतिमान, युगचेतना, लहर, कृति, प्रतीक, नया प्रतीक, कखग, (2) अभिप्राय, वर्तमान साहित्य, हस, इण्डिया टुडे की साहित्य वार्षिकी आदि।

प्रेमचन्द की पत्रिका 'हस' को पुर्नजीवित करने का दावा करते हुए राजेन्द्र यादव ने 'हस' का प्रकाशन शुरू किया। 'हस' ने हिदी साहित्य मे एक नए विवाद को जन्म दिया, यह विवाद है सवर्ण साहित्य और दलित साहित्य। दलित साहित्य के समर्थको और लेखको ने दलित साहित्यकार नामक एक नया खेमा बना लिया और कहा जाने लगा कि दलितो के बारे में एक दलित ही अच्छे ढग से लिख सकता है। सर्वण के लेखन मे वह प्रामाणिकता नही आ सकती, क्यो कि वह उन दंशो और पीडाओ को महसूस नहीं कर सकता, जो स्वय दलित लेखक कर सकता है। इस विषय पर हिन्दी साहित्यकारो मे गभीर मतभेद हैं।

---

1 (दिनमान 18 अगस्त 1974) साहित्यिक पत्रकारिता, डा0 राम मोहन पाठक पृष्ठ 12

2, हिदी पत्रकारिता, विविध आयाम, साहित्यिक लघु पत्रिकाए डा0 धर्मेन्द्र गुप्त पृष्ठ 304

साहित्यिक पत्रकारिता का इतिहास हिदी पत्रकारिता के साथ ही आरम्भ हुआ और जब तक हिदी पत्रकारिता रहेगी तब तक साहित्यिक पत्रकारिता का भी अस्तित्व बना रहेगा।

हिदी पत्रिकाओ में प्राय सभी प्रमुख हिदी साहित्य की विधाओ का प्रकाशन होता रहा है। प्रमुख विधाये है –

कविता	नाटक
सस्मरण	साक्षात्कार
डायरी	पुस्तक परिचय
कहानी	उपन्यास
आलोचना	लेख

कविताः–

स्वातत्र्योत्तर हिन्दी साहित्यक पत्रकारिता मे 'नयी कविता' (1953) पत्रिका के प्रकाशन से हिन्दी कविता को एक नया नाम और दिशा प्राप्त हुयी। 'नयी कविता' सज्ञा पत्रिका से व्यापक परिप्रेक्ष्य मे परिणत हो गयी जिसमें कविता ही नही वरन पूरे युग की रचना प्रवृत्तिया व्यजित होती है, जिन्हे समष्टि रूप मे 'नव लेखन' भी कहा गया। इस युग के कवियों की प्रतिभा कविता से कही अधिक अन्य विधाओ मे भी व्यजित हुयी है। इस युग का कवि एक साथ उपन्यास कार, नाटककार, निबन्ध लेखक भी है, किन्तु इन सबके केन्द्र मे कविता ही रही है, इसका कारण यह है कि कविता की भाषा सबसे अधिक

सर्जनात्मक होती है, और इसी माने मे कविता सबसे अधिक सर्जनात्मक साहित्य हैं। (1)

नयी कविता मे मनुष्य और उसके समग्र अनुभव को पकडने का यत्न हुआ है। यो मनुष्य को उसकी सपूर्णता मे देखने और समझने की प्रतिज्ञा हर नये वैज्ञानिक और रचना आन्दोलन ने की है। आधुनिक हिन्दी कवि भी कहता है कि जातीय वर्ण, सस्कृति समाज, से 'मूल व्यक्ति' को फिर से चाल कर निकाला जाए। (2)

नयी कविता का साहित्य पहली बार स्वाधीन और प्रजातात्रिक देश मे रचा गया यहॉ केवल वीर और श्रृगांर जैसे रसो मे जीवन सीमित नही रह गया, वरना छोटे–छोटे समझे जाने वाले अनुभव कणो की प्रासगिकता पहचानी गयी।

नयी कविता की प्रतिक्रिया मे 'युवा लेखन' नामक नयी काव्य धारा का विकास हुआ। युवालेखन कविता की एक उपधारा है, " अकविता" इस काव्य धारा की कविताओं का आकलन करने पर स्पष्ट होता है कि "इस कविता (अकविता) लेखको की मुख्य दृष्टि यौन जीवन के प्रचलित और स्वीकृत रूपो पर है, और यह कि वे इन रूपो से पूरी तरह असंतुष्ट हैं। (3)

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कवियों में प्रमुख हैं -

अज्ञेय, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिह, भवानी प्रसाद मिश्र, गिरिजा कुमार माथुर, धर्मवीर भारती, कुंवर नारायण, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, विजय देव नारायण साही, रघुवीर सहाय, त्रिलोचन, केदार नाथ सिह, लक्ष्मीकात वर्मा,

---

123 हिदी साहित्य और सवेदना का विकास, डा0 रामस्वरूप चतुर्वेदी पृष्ठ 276,277,317

जगदीश गुप्त, विपिन कुमार अग्रवाल, नरेश मेहता, श्री कान्त वर्मा, धूमिल, राजकमल, मलयज, अजित कुमार, अशोक बाजपेयी, कैलाश बाजपेयी, लीलाधर जगूडी, मगलेश डबराल, अरूण कमल, राजेश जोशी, असद जैदी आदि।

कविता–

हिदी पत्र–पत्रिकाओ ने साहित्य की समृद्धि मे बहुमूल्य योगदान दिया है। 'पत्रकारिता' जो पूर्णतया गद्य पर निर्भर है, इसके बावजूद 'कविता' का महत्व कम नही हुआ है। सभी पत्र–पत्रिकाए अपने विशेषाको मे कविताए प्रकाशित करती है,

कुछ उदाहरण–

कविता – कौन है पीठासीन?

कवि – जगदीश गुप्त

क्या उसे खबर नही है (1)

प्रति क्षण जो होता है

देश परिवेश मे

क्रूरताए, हत्याए

उग्रकर्मी बर्बरताएं

अप्रत्याशित

कैसे बदल जाता है

घटनाचक्र

होकर निरापद, कौन रचता है

षडयत्र।

---

1 इण्डिया टुडे, साहित्य वार्षिकी , 1994, पृष्ठ 188

जाने अनजाने, बिके विज्ञापनो मे

विष बोते हैं समाचार

प्रतिदिन कितनी भाषाओ मे

छपते हैं अखबार

अधा है पीठासीन

बहरा है पीठासीन

लगडा है पीठासीन

उतारो इसे पीठ से

पीठ पर लदा है

जाने कब से?

कवि—अजित कुमार

काश

काश हम ऐसा जीवन जिए

मृत्यु का हो जो अस्वीकार

मृत्यु जब आ ही जाए पास

सहज हो उसका अगीकार

न तो हम उस पर इतराए

न ही हम इससे कतराए

गुथे हो उन दोनों के बीच

मुक्त हो उन दोनो के साथ

हाथ पर हाथ, हाथ मे हाथ

काश, हम ऐसा जीवन जिए। (1)

---

1 इण्डिया टुडे, साहित्य वार्षिकी , 1994, पृष्ठ 188

कवि–मंगलेश डबराल–

दिल्ली में एक दिन

उस छोटे से शहर मे एक सुबह

या शाम या किसी छुट्टी के दिन

मैंने देखा पेडो की जडे

मजबूती से धरती को पकडे हुए है

हवा थी

जिसके चलने मे अब भी

एक रहस्य बचा था

सुनसान सडक पर

अचानक कोई प्रगट हो सकता था

आ सकती थी किसी दोस्त की आवाज

कुछ ही देर बाद

इस छोटे से शहर मे आया

शोर कालिख पसीने और लालच

का बडा शहर। (1)

गजल–

एहतराम इस्लाम

सच को सच कहता तो कौन ?

गैज का सूरज था सर पर, सच को सच कहता तो कौन

दश्त ही जाता समुदर, सच को सच कहता तो कौन

---

1 इण्डिया टुडे, साहित्य वार्षिकी , 1994, पृष्ठ 192

उम्र सोने का निवाला हो कि लोहे का चना

फैसला छूटा था खुद पर, सच को सच कहता तो कौन (1)

त्रिलोचन

एक सानेट

ताज्जुब है मुझको त्रिलोचन कैसे इतना

अच्छा लिखने लगा? धरातल उसके स्वर का

तिब्बत के पठार सा ऊचा अब है। जितना

ही गुनता हू इस पर कुछ रहस्य अदर का

मुझे भासने लगता है। यह उसके बस का

काम नही है। होगा कोई और खिलाडी

जिसका यह सब खेल है, मुझे तो अब चस्का

लगा रहस्योद्घाटन का है। खूब अगाडी

और पिछाडी देखभाल कर बात कहूंगा

मैने तो रहस्य अब तक कितनो के खोले

है। न इस नई धारा मे निरूपाय बहूगा

मेरे आगे बडो–बडो के धीरज डोले

एक फिसड्डी आकर अपनी धाक जमाए

देख नही सकता हू मै यो ही मुह बाएं (2)

---

1 इण्डिया टुडे, साहित्य वार्षिकी 1994 पृष्ठ ,223

2 आजकल, स्वर्ण जयती अक पृष्ठ 9

नरेश मेहता–

'स्मरण रहे वह बात'

स्मरण हैं वह बात

जो तुम्हे मैने कही उस रात

मुझको जिदगी के सकल सकल्पो विकल्पो के बीच

होगी खीचनी सौमित्र की सी रेख

वही दिन,

आ रहा है, आ गया है प्राण।

देखो खोल आधी औ बगूले पख अपने

नयन मे अगार, भस्मीभूत करने

उसी दिन की नील परछाई गगन पर गिर रही है,

उसी दिन के मोरपखी झावरे रग अग

जलती जून की इस दोपहर से हो गए है। (1)

'धर्मवीर भारती'

पराजित पीढी का गीत

हम सबके दामन पर दाग

हम सबकी आत्मा मे झूठ

हम सबके माथे पर शर्म

हम सबके हाथो मे टूटी तलवारो की मूठ।

हम थे सैनिक अपराजेय

पर हम थे बेबस लाचार

यह था कठपुतलो का खेल

---

1 आजकल, स्वर्ण जयती अक पृष्ठ 53

ऊपर था लोहा पर, लकडी के थे सब हथियार।

दो हमको फिर झूठे युद्ध
दो हमको फिर झूठे ध्येय
हारेगे फिर यह हैं तय
फिर उसको मानेगे हम प्रभु की हार
अपने को फिर अपराजेय। (1)

नाटक –

"नाटक साहित्य की सर्वाधिक सवेदनशील (सेसिटिव) विधा है। जनजीवन की सूक्ष्मतम धडकन और मानसिकता के उतार–चढाव का जितना सही ग्राफ नाटक तैयार कर सकता है उतना साहित्य की अन्य विधा द्वारा संभव नही है। इस धडकन को नापने की बेचैनी से ही नाटक का जन्म हुआ था। आधुनिक काल मे जनमानस इतनी तेजी से बदल रहा है कि इसकी प्रामाणिक माप के लिए नाटक का प्रयोगधर्मी होना अनिवार्य हो गया है। कहना न होगा कि यह सर्वाधिक प्रयोगशील विधा है। मचन से सम्बद्ध होने तथा प्रेक्षकों को सीधे सम्बोधित होने के कारण प्रयोग को एक ओर अपना सौन्दर्य शास्त्र गढना पडता है दूसरी ओर नाट्यबिबो द्वारा उसका ऐसा विभाजन करना पडता है कि दर्शकों तक सप्रेषित हो जाय।" (2)

स्वातत्र्योत्तर हिदी नाटको मे मुख्यता., तीन प्रवृत्तियां दिखायी देती हैं

---

1 आजकल, स्वर्ण जयती अक पृष्ठ 105

2 आधुनिक हिदी साहित्य का इतिहास, डा0 बच्चन सिह पृष्ठ 305,306

(1) प्रगति प्रयोगवादी नाटक

(2) ऊलजलूल (एब्सर्ड) नाटक

(3) जनवादी धारा (राजनीतिक विसगतियो का अकन)।

साहित्यिक पत्रिका 'नटरग' मे अधिकाश नाटको का प्रकाशन होता रहा है अन्य पत्रिकाए भी नाटक के प्रकाशन से परहेज नही करती। स्वातन्त्र्योत्तर हिदी के प्रमुख नाटक और नाटककार हैं– उपेन्द्रनाथ अश्क (छठा बेटा, कैद, उडान, भवर, अजो दीदी), विष्णु प्रभाकर (समाधि, डाक्टर), जगदीश चन्द माथुर (कोणार्क, पहलाराजा, शारदीया, दशरथनन्दन), धर्मवीर भारती (अधायुग), दुष्यन्त कुमार (एक कठ विषपायी), मोहन राकेश (आषाढ का एक दिन, लहरो के राजहस, आधे अधूरे), भुवनेश्वर (ताबे के कीडे), विपिन कुमार अग्रवाल (तीन अपाहिज), शभुनाथ सिंह (दिवार की वापसी), लक्ष्मीकात वर्मा (अपना–अपना जूता), लक्ष्मीनारायण लाल (अधा कुआ, मादा कैक्टस, तीन आखो वाली मछली), सुरेन्द्र वर्मा (द्रौपदी,सूर्य की अतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक और आठवा सर्ग), रमेश बक्षी (देवयानी का कहना है, तीसरा हाथी), मुद्राराक्षस (तिलचट्टा), मृदुला गर्ग (एक ओर अजनबी), मन्नू भण्डारी (बिना दिवारो का घर), ज्ञानदेव अग्निहोत्री (नेफा की एकशाम, शुतुर्मुर्ग), ललितसहगल (हत्या एक आधार की), सुशील कुमार सिह (सिहासन खाली है), शकर शेष (एक और द्रोणाचार्य), काशीनाथ सिह (शोआस), मणिमधुकर (रसगधर्व), सर्वेश्वर (बकरी), असगर वजाहत (वीरगति), मृणाल पाण्डेय (जो राम रूचि राखा) आदि। (1)

नाटक –

नाटक की रचना का प्रधान उद्देश्य रगमंच होता है। पत्र–पत्रिकाओ मे प्रकाशित नए नाटक रंगमंच के लिए नयी संभावनाए तैयार करते हैं।

---

1. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास – डा० बच्चन सिह, पृष्ठ 307,308,309,310

विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित नाटक 'साहस' के मुख्य अश–
पात्र–सितारा–एक अनाथ युवती, कृष्ण एक युवक, त्रिलोकचद–एक प्रौढ मानव, मृणाल–एक नवयुवती समय–सध्या के बाद–स्थान–भारत का एक साधारण नगर (रग–निर्देश–स्टेज पर एक मध्यवर्गीय गृहस्थ के मकान का दृश्य जो अब वीरान है। उदासी अस्तव्यस्तता और गरीबी की झलक .

बाहर से एक युवती और युवक स्टेज पर आते हैं युवती कुछ घबरा रही है, वह सुदर है पर किसी वेदना के कारण अस्तव्यस्त है। युवक कोट पैंट पहन दृड स्वर मे बोलता हुआ,युवती के पीछे–पीछे आता है। जीवट वाला जान पडता है, सम्पन्न भी है।)

युवक :– आप मरना चाहती थी! मरना कुछ बुरा नही है, परन्तु मै कहता हूँ, जीवन जब तक है तब तक हमे जीना ही चाहिए।

युवती :– (खाट के पास आकर खडी हो जाती है) आप शायद ठीक कहते हैं, लेकिन मेरे पास जीने के साधन कहाँ हैं? दुनिया मुझे कुत्ते की तरह भी टुकडे डालने को तैयार नहीं।

तीसरा अंक

(अन्तिम दृश्य)

सितारा – (द्रवित है पर प्रगट नही करना चाहती) मैं कहती थी आपने मुझे

रास्ता सुझाया है।

कृष्ण – (तनिक अप्रतिम) तो ।

मृणाल सहसा दोनो को देखती है मुस्कराती है और फिर दृड होकर बोलती हैं।

मृणाल – तो स्पष्ट क्यो नही कहती? साहस क्यो खोती हो?

कहो तुम्ही ने मुझे रास्ता सुझाया है, तुम्ही सभालो। (भूकप का धक्का सा लगता है सब कापते है।

सितारा – कृष्ण (एक साथ) मृणाल – मृणाल!!

मृणाल – बेशक, मै, ठीक कहती हूँ यह साहस किए बिना तुम्हारा कल्याण नही है, सितारा की ओर मुडकर बहन! पुरूष के सिर पर लात मारने की अपेक्षा उसके कधो को सहारा देना कही ज्यादा साहस का काम है, कृष्ण की ओर मुडकर भैया! मुझे तुम पर गर्व है मै अभी जाकर पिता जी से कहती हूँ।

(कहकर मृणाल एकदम स्टेज से बाहर चली जाती है। सितारा और कृष्ण क्षणभर के लिए मूर्तिवत शून्य मे ताकते हैं फिर एक दूसरे को देखकर मुस्कराते है। परदा यही गिर जाता है।) (1)

<u>नाटक का संवाद</u> – बहन! पुरूष के सिर पर लात मारने की अपेक्षा उसके कधो को सहारा! देना कहीं ज्यादा साहस का काम हैं। स्वातन्त्र्योत्तर भारत मे उभर रहे नारी वादी आन्दोलनो की अतिवादिता को प्रतिबिम्बत करता हैं।

---

1 आजकल स्वर्ण जयती अक 1994 पृष्ठ 30,34

संस्मरण–

कविता, कहानी, आत्मकथा, रेखाचित्र, निबध और यात्रा विवरण की भाति सस्मरण भी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। अपने स्वरूप में यह कहानी के अत्यत निकट है। कभी इसमे रेखाचित्र का रूप झलकता है कभी यह निबध जैसा दिखाई देता है। सस्मरण व्यक्तिनिष्ठ विधा है इसमे तथ्यो को तोड मरोड कर या कल्पना का आश्रय लेकर प्रस्तुत करने की गुजाइश नही होती। स्वाभाविकता यथार्थता और सवेदनशीलता सस्मरण के मूल गुण है। संस्मरण उन्ही व्यक्तियो पर लिखा जा सकता है, जिससे लेखक व्यक्तिगत सपर्क मे आया हो, सस्मरण लेखन मे रोचकता बनाए रखने के लिए भाषा प्रयोग पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

स्वातत्र्योत्तर साहित्यिक पत्रिकाओ मे सस्मरण विधा का समय–समय पर प्रकाशन होता रहा है। प्रमुख सस्मरण लेखक हैं– श्री राम शर्मा (वे कैसे जीते हैं), बनारसी दास चतुर्वेदी (हमारे आराध्य, सस्मरण), महादेवी वर्मा (पथ के साथी), रामवृक्ष बेनीपुरी (गेहू और गुलाब), शातिप्रिय द्विवेदी (पथचिन्ह और परिव्राजक की प्रजा), कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर (भूले हुए चेहरे) आदि। (1)

साहित्यिक पत्रकारिता मे 'सस्मरण' विधा का सामान्यीकरण सा हो गया है। व्यक्ति विशेष से सम्बधित स्मरणीय बातो का क्रमवार उल्लेख इस विधा की सामान्य विशेषताएं हैं। दिल का छू लेने वाले सस्मरण कम ही पढने को मिलते हैं। सस्मरण विधा के कुछ उदाहरण –

प्रेमचंद के संस्मरण

–जैनेन्द कुमार

"कब नौ बज गए, पता न चला, आखिर अंदर से ताकीद आई कि दिन

---

1 आधुनिक हिदी साहित्य का इतिहास डा0 बच्चन सिह पृष्ठ 375,76,77,78,79

इतना चढ गया, दवा नही लाकर दी जाएगी? तब वह दुनिया की तरफ जागे और जल्दी से पैर मे स्लीपर डाल, तकिए से शीशी खीच, नुस्खा तलाश कर, दवा लेने दौडे। कहा तुम हाथ मुह धोओ, मैं अभी आया।"

प्रेमचद का रूप यह था और सब जगह सब समय शायद यही रहता था। दुनिया मे कुछ कृत्रिमता भी चाहिए, ज्यादा खुले और हार्दिक रहने का यहा कायदा नही है। जान पडता है, प्रेमचद को दुनिया के इस जरूरी कायदे का ख्याल दिमागी तौर पर अगर था तो अमल मे वह उसे साथ नही रख पाते थे।

खा–पीकर बोले, चलो जैनेन्द्र दफ्तर चले। मकान से उतर कर मैने देखा कि हजरत ने अमीनाबाद से तागा नही इक्का लिया, मै एक अच्छे से तागे को देखकर उससे बातचीत करना चाहता था, पर वह बोले नहीं इक्के से चलेगे। तागा हमे खीचता है, इक्के पर हम सवार होते हैं। वही बात हुई कि मुह हमारा इधर हैं और खिच हम पीठ की तरफ रहे हैं। (1)

फूलों की तलाश और दस्तक देते हुए यशपाल

—कमलेश्वर

"उन दिनो के बाद यशपाल के बारे मे सोचना बद हो गया, वैचारिक स्तर पर उनकी कृतियो से पहचान हुई और एक दिन जब मैं लखनऊ गया तो यशपाल के घर भी पहुचा। सुबह के आठ या साढे आठ होगे . यशपाल को अभी देखा नही था, और मैं किसी लापरवाह से प्रौढ के निकलकर आने की प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे उम्मीद थी कि कोई लस्टम–पस्टम सा व्यक्ति अभी सामने आयेगा। उसके चेहरे पर मुझे देखते ही बनावटी गंभीरता आ जाएगी।

---

1 आजकल स्वर्ण जयती अक 1994 पृष्ठ 91,92

फिर वह कमरे मे पहुचकर धीरे–धीरे खुलेगा और कुछ साहित्यकारो के बारे मे अपनी राय जाहिर करेगा और अपने बडप्पन का सिक्का जमाने की कोशिश मे अपनी रचनाओ की बात करेगा।"

लेकिन ऐसा कुछ नही हुआ। दो चार क्षणो मे ही मुझे यह अहसास हो गया कि मै किसी लेखक के घर के बरामदे मे नही, सरकारी अफसर के घर पर खडा हू। मैने एक बार घटी और बजाई कि किसी के आने की आहट हुई। वह प्रकाशवती जी थीं और उन्होने औपचारिक परिचय के बाद मुझे ड्राइगरूम मे बैठा दिया।

और चाय के साथ–साथ यशपाल से कुछ सक्षिप्त सी बाते हुई। लेकिन उनके बात करने के ढग मे बडा उखडापन सा लग रहा था और एक उतावलापन रह–रह कर उभर आता था। मुझे इस बात से कुछ परेशानी हो रही थी . मैंने दो तीन बार गौर से यशपाल को देखा, उनमे मुझे कुछ भी खास नजर नही आ रहा था न वह क्रान्तिकारी लग रहे थे और न साहित्यकार। बीच मे ही प्रकाशवती जी से उन्होने किसी मशीन की तबीयत का हाल पूछा था।

मैं उनके रेगमाल से खुरदरे चेहरे और फटी–फटी सी आवाज और बातो के बारे मे मै सुलझा हुआ स्वभाव महसूस कर ही रहा था कि उनकी नजर मुझे उस वक्त देखती सी लगी, और मेरे सामने यशपाल का आज एक और रूप उभरता है–एक ठोस घर मे रहने वाला और सामान्य कारोबारी सा दिखने वाला व्यक्ति . जिसके चारो तरफ विचारो की पवित्र आत्माए भटक रही हैं .. और जो दिमागो के हर बद दरवाजे पर दस्तक देता हुआ पूछ रहा है.. कोई और फूल खिला? . कोई और कली आई? (1)

---

1 आजकल स्वर्ण जयती अक 1994 पृष्ठ 178,180

" उग्र" : अजब आजाद मर्द था

– रूद्र काशिकेय

आज से 45–46 वर्ष पहले का एक दिन। सन् 1920–21 का जमाना। असहयोग आन्दोजन के अर्विभाव का युग। मै काशी के हरिश्चन्द्र हाई स्कूल की कक्षा 3 या 4 का विद्यार्थी था बस्ताबगल मे दबाए स्कूल जा रहा था। पढने नही यह देखने कि आज कितने स्कूल छोडते है, उन दिनो प्रतिदिन कुछ लोग स्कूल छोडते थे। स्व0 लाल बहादुर शास्त्री और त्रिभुवन नारायण सिंह दो चार दिनो पूर्व ही जुलूस बनाकर स्कूल से निकल चुके थे, मैने बुला नाले पर पहुॅचते ही देखा कि सुडिया की ओर जो गली निकलती है, उसी मे से एक आदमी सडक पर आ निकला। नाटा गठीला बदन गोल हल्का चेचकरू चेहरा, छोटी –छोटी परन्तु अत्यन्त आकर्षक ऑखे, धवल खादी की धोती और कुर्ता, सिर पर सफेद बूटीदार गहरा हरा रूमाल बधा हुआ । साथ के एक आदमी ने बताया यही 'उग्र' जी है यही मेरा प्रथम 'उग्र' दर्शन था। इसके बाद तो 'उग्र' को बहुत समीप से देखने का अवसर मिला और मेरे मतिराम ने अत मे यही कहा कि –

' ज्यो – ज्यो निहारिए नेरे ह्वै नैननि
त्यो – त्यो खरी निखरै सी निकाई।" (1)

---

1 आजकल स्वर्ण जयती अक 1994 पृष्ठ 210

साक्षात्कार –

साक्षात्कार साहित्य की वह विधा है जिसमे किसी भी क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्ति से प्रश्न पूछा जाता है और वह व्यक्ति स्वय उन प्रश्नो का उत्तर देता है इस प्रश्नोत्तर की प्रक्रिया मे कभी–कभी ऐसी जानकारी प्राप्त हो जाती है, जो किसी अन्य मे सभव नही। साहित्यिक पत्रकारिता मे अन्वेषी साक्षात्कार की अपेक्षा आत्मीयता पूर्ण साक्षात्कार लिए जाते है। साक्षात्कार पत्रकारिता की अपनी विधा है।

कुछ उदाहरण –

साक्षात्कार – डा० राम कुमार वर्मा

साक्षात्कारकर्ता – पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'

साहित्य वही है जिसमे सार्वजनिक कल्याण और सौन्दर्य भावना हो

– राम कुमार वर्मा

प्रश्न – आपकी साहित्य साधना कब और कैसे आरंभ हुयी और उसके लिए प्रेरणा कहाँ से मिली?

वस्तुत. मेरी स्फूर्ति के दो केन्द्र है प्रथम बाल्यकाल मे मेरी मॉ कबीर और मीरा के पदों का प्रभाती रागिनी मे मधुर स्वर और दूसरा प्रभात–फेरी मे देश प्रेम की लहर मे निकले हुए गीतो का अखिल श्रोत, इन दोनो ने ही मुझे गीतात्मक मनोविज्ञान दिया। सभवत यही कारण है कि मैने अपनी समस्त काव्य साधना मे 85 प्रतिशत गीत लिखे हैं, और 15 प्रतिशत प्रबन्धात्मक

काव्य। यो तो आरम्भ मे मेरे गुरू प0 विशभर प्रसाद गौतम विशारद अपनी कविताओ की प्रतिलिपि मुझसे कराते थे और उनकी कविताओ को लिखते–लिखते मै भी परिहास तथा विनोद मे तुके जोड दिया करता था। " ईश्वर मुझको पास कराओ अब, और मिठाई खूब सी खाओ तब' जैसी तुकबन्दियॉ विनोदात्मक कौतूहल मे ही जोडी गई थी, किन्तु साहित्य साधना की सात्विक प्रेरणाए मुझे दो उपर्युक्त केन्द्रो से ही प्राप्त हुयी। (1)

सर्जक काम कूडेदान उलटना नहीं है

- अज्ञेय

(साक्षात्कारकर्ता - कुसुम कुमार)

प्रश्न :- आपका चिंतक व्यक्तित्व क्या कभी आपके आम सुखों पर हावी हुआ ?

— मै नही जानता कि इस प्रश्न का क्या उत्तर दूं। चिंतन का भी एक सुख होता है और चितन अथवा आत्मानुशासन द्वारा किसी सकल्प तक पहुॅचने और उसे निबाहने का एक बडा सुख भी हो सकता है। असभव नही कि इस प्रक्रिया मे कई छोटे सुख उपेक्षित हो जाए अथवा पीछे छूट जाये। यह भी है कि लोगों को जिन चीजो मे सुख मिलता है, उनमे मेरी कोई दिलचस्पी नही है। यह भी जानता हूँ कि बहुत सी छोटी – छोटी चीजें मुझे सुख देती हैं, जिसका दूसरे लोगो के लिए कोई मूल्य नही हैं।

प्रश्न :- आपका अधिकांश लेखन समाज के प्रति विद्रोह का लेखन है। क्या अब भी आप इस भाव को न्याय संगत मानते हैं? या लगता है कि वह उस उम्र विशेष की मनः

---

1 आजकल स्वर्ण जंयती अक 1994 पृष्ठ 64

स्थिति थी?

— समाज के प्रति विद्रोह और अपने वर्तमान समाज का अस्वीकार अलग–अलग चीजे है। व्यक्तित्व के विकास मे एक अहम् पहचान और उसकी पुष्टि अस्मिता के निर्माण की एक सीढी है, और इसमे समाज के प्रति विद्रोह का भाव प्रबल होता है। लेकिन यह सीढी है और पार हो जाती है। जिस समाज मे मै रहता हूॅ उससे मै सतुष्ट नही हूॅ और उसे बहुत कुछ बदलना चाहता हूॅ , उसमे बहुत सी विकृतियॉ हैं जिन्हे मैं अस्वीकार करता हूॅ, और मै आशा करता हूॅ कि मेरी यह मन स्थिति लगातार बनी रहेगी और यह विश्वास भी कि समाज को मै बदलता रह सकता हूॅ। (1)

<u>पुस्तक–समीक्षा –</u>

पुस्तक–समीक्षा स्वातत्र्योत्तर पत्रकारिता का अनिवार्य अग हो गया है। सभी समाचार पत्र–पत्रिकाए अपने पाठको को नयी से नयी जानकारी देने को उत्सुक रहती है जिनमे एक है पुस्तक –समीक्षा, नयी प्रकाशित होने वाली पुस्तको की विषय सामग्री, पठनीयता, प्रकाशक और मूल्य आदि बातो की जानकारी पत्र–पत्रिकाएं पुस्तक–परिचय, चर्चा, समीक्षा नामक स्तभ मे देती है, पुस्तक समीक्षा का एक उदाहरण –

पुस्तक का नाम **चार कथा संग्रह**

(लेखक - डा० गंगा प्रसाद विमल)। (२)

प्रस्तुत पुस्तक समीक्षा में पाश्चात्य लेखको की कृतियो और

---

1 आजकल स्वर्ण जयती अक 1994 पृष्ठ 224,225

2 धर्मयुग 4 जनवरी 1970 पृष्ठ 22

भारतीय लेखको की तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत की गई है। पाश्चात्य और भारतीय दृष्टि की प्रमुख स्थापनाओ पर महत्वपूर्ण टिप्पणी लेखक ने की है। कहानी, उपन्यास के मुकाबले आलोचना की भाषा बिना लाग लपेट के सीधे विषयवस्तु पर दृष्टि केन्द्रित करती है। और नि सकोच कृति का रेशा–रेशा अलग कर देती है। जिस कृति मे इसे झेलने की क्षमता होती है, वही रचना कालजयी बन जाती है।

समीक्षा के महत्वपूर्ण अश –

"कथाकार अपने लिए जब विशेष माध्यम चुनता है और उस माध्यम को दूसरी विधाओ के मुकाबले मे उस शिखर तक पहुचा देता है, जहॉ वह शिखर रचना का मानक बन जाती है वह अपने आप मे महत्वपूर्ण हो जाती है। हिन्दी कहानियो का हाल का इतिहास देखे तो जहॉ रचना की सच्चाई महत्व का विषय नही है, अपितु वे चर्चाए और कथाकार के बारे मे वे अफवाहे महत्वपूर्ण है जिनका कृति से कोई मतलब नहीं है, कहा जा सकता है कि कहानी के बारे मे जितनी बाते हुई है उनमे से ज्यादातर कथाकार के बारे मे हुई बाते है।"

"हेमिग्वे उपन्यासकार से ज्यादा महत्वपूर्ण कहानीकार सिर्फ इसलिए हैं कि उसने अमेरिकी जीवन के वैविध्य को कहानी मे ज्यादा खुले रूप मे पहचाना है। यह वैविध्य अनुभवो की एकरसता कहानी के उस महत्व को खत्म करती है, जिससे कहानी उपन्यास से ज्यादा महत्वपूर्ण हो सकती है। हिन्दुस्तान की विविधता की पहचान के बजाए समकालीन हिन्दी कहानी बुरी तरह वैचारिक और रचनात्मक स्तर पर क्षेत्रीयता के सस्कारो से ग्रस्त है। अपने इन सस्कारो के जिस बुनियाद पर लेखक प्रयोग धर्मी रचनाए देता है, उन्ही की परिसीमा मे बधकर वह बाद मे प्रयोग का व्यवसाय करने लगता है।

रवीन्द्र कालिया की कहानी कला के सम्बन्ध (पुस्तक–नौसाल छोटी पत्नी, अभिव्यक्ति प्रकाशन इला0) मे लेखक की टिप्पणी मे वस्तुनिष्ठ और पूर्व कृतियो से तुलनात्मक दृष्टि का तारतम्य देखने को मिलता है।
उदाहरण– अनुभव के एक ही दायरे मे घूमने वाली कहानिया है। दरअसल अनुभव हीनता की ये सीमाए लेखक के जड हो जाने की पूर्व सूचनाए हैं
यही वजह है कि रवीन्द्र कालिया सम्बन्धो की कहानियो से आगे नही बढ पाए है।'' (1)

उदीयमान कहानीकार 'अन्विता अग्रवाल के कहानी संग्रह (मुट्ठीभर पहचान, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली) की समीक्षा मे लेखक ने महिला कहानीकार की विशेषता और पठनीयता पर टिप्पणी की ''अपने स्वप्नकामी सस्कार के कारण अपनी ही दुर्घटनाओ की दुर्घटना बन जाती है।'' श्रीकान्त वर्मा ने ठीक ही कहा है कि ''स्वप्न कामी और स्वप्न विरोधी ससार की सडक दुर्घटना है।'' वर्मा जी के शब्दो मे ''लेखिकाए हमेशा लेखको की तुलना मे अधिक पठनीय कहानिया लिखती है शायद इसका कारण यह है कि वे (अपने स्त्री स्वभाव के कारण) भेद को आहिस्ता–आहिस्ता खोलती हैं, और अपने पात्रो और पाठकों मे बाटती है।'' एक युवा लेखिका की ये सुथरी कहानियां प्रयोग भले ही न कहा जाए, इनमें दुनिया से कला की दुनिया मे पहुंचने की कोशिश जीवित है। (2)

श्रवण कुमार की 'अधरे की आखे' (नेशनल पब्लिसिग हाउस, दिल्ली) कहानी–संग्रह पर टिप्पणी करते हुए लेखक लिखता है।'' अधेरे की आंखे की कहानिया अपने सही अर्थों मे कहानियां इसलिए है कि वे न तो किसी तरह से विधाओ के विलीनीकरण के शर्तो की कहानिया है। वे एक प्रवासी द्वारा

1,2. धर्मयुग –4 जनवरी 1970–आलोचना समीक्षा मामूली कहानियो का शिखर सम्मेलन पृष्ठ 22

लिखे गए सस्मरण की तरह है। उनमे कुछ कहानिया डाक बगलो की तरह है। तो कुछ दफ्तर सम्बन्धो की कहानिया है।" (1)

जब श्रवण कुमार यह कहते है कि "इन कहानियो के सदर्भ मे वहॉ आकर ठहर जाते है जहॉ कहानी जिन्दगी से सीधे–सीधे रिश्ता जोड लेती है, तो लगता है, वे झूठ नही कह रहे है क्योकि 'अधेरे की आखे' से ठहरे हुए सदर्भो मे जिदगी की धडकन दिखाई दे सकती है। इनमे से कुछ कहानिया पढने का श्रम मागती है। उनमे 'बवडर' एक है जो अपनी सार्थकता पर प्रश्नचिन्ह लगाती है। (2)

अन्तिम समीक्षा कहानी सग्रह सिद्धेश की 'अनुपस्थित शहर की कहानिया' है। इस सग्रह की कहानियो की समीक्षा करते हुए लेखक टिप्पणी करता है "साठोत्तरी फार्मूलें की कहानिया आसानी से कही जा सकती है। सिर्फ आश्चर्य यह होता है कि अपनी कहानियो की जमीन प्रयोगधर्मी खोज बनाए रखने के बावजूद भी सिद्धेश ने 'अहसान जैसी टाइप कहानिया लिखी है। (3)

<u>डायरी</u> –

आधुनिक काल मे जहॉ गद्य की नाटक उपन्यास एव कहानी विधाओ का पूर्ण रूप से विकास हुआ है वही डायरी साहित्य भी कम नहीं रहा। योरोपीय साहित्य के प्रभाव से ही हिदी मे इसका आविर्भाव हुआ। हिदी साहित्य मे अभी उतनी पूर्ण और विकसित डायरिया नही देखने में आती जितनी कि आंग्ल भाषा के साहित्य मे हैं। डायरी जीवनी साहित्य का एक रूप है यह आत्म कथा का आरभिक रूप कहा जा सकता है। (4)

1,2,3 धर्मयुग –4 जनवरी 1970–आलोचना समीक्षा मामूली कहानियों का शिखर सम्मेलन पृष्ठ 22
4 आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास डा0 बच्चन सिह, गद्य खण्ड

डायरी के माध्यम से लेखक के सद्य–स्फुरित भावो तथा विचारो को अभिव्यक्ति मिलती है। डायरी, रोजनामचा, दैनिकी, दैनन्दिनी पर्याय है और ये पर्याय इस दृष्टि से सार्थक भी है कि वे डायरी के इस प्रमुख ध्येय की ओर सकेत करते है कि डायरी मे लेखक का अनुभव उसके सबसे अधिक निकट रहकर अकित होता है। डायरी मे लेखक के मन पर पडे प्रभाव उसी दिन लिखित रूप पाते है। इस प्रकार लेखक के व्यक्तित्व का प्रकाशन का सर्वाधिक प्रामाणिक माध्यम डायरी है। प्रामाणिक इस अर्थ मे कि प्राय डायरिया अनेक निजी भावो, विचारो को नोट कर लेने के उद्देश्य से लिखी गई है, पुस्तक प्रकाशन के उद्देश्य से नही। प्रमुख डायरी लेखक है धीरेन्द्र वर्मा, घनश्याम दास बिडला आदि।

डायरी हिदी साहित्य की नयी और रोचक विधा है। इसके द्वारा लेखक के उन अनछुए पहलुओ को जाना जा सकता है जो किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करता है। इस विधा मे वैयक्तिकता का अश कुछ ज्यादा रहता है, यही कारण है कि डायरी लेखन अधिक मात्रा मे नही हुआ है। लेकिन जो हो रहा है वह उत्कृष्ट कोटि का है। 'डायरी' विधा का एक उदाहरण –

शमशेर . मलयज की नजर में

25 मार्च 1968 (1)

शमशेर मे शुरू से ही काव्य जीवन के आरंभ से ही अपने प्रति एक हीनता–ग्रन्थि की भावना थी। हिदी वालों के बीच वह अपने को अजनबी पाते थे, क्योकि उनकी शिक्षा उर्दू मे हुई और हिदी का साहित्यिक भाषा सस्कार

---

1 आजकल स्वर्ण जयती अक 1994 पृष्ठ 230

उन्हे मिला था। हीनता–ग्रन्थि का दूसरा कारण पार्टी मे उनकी बहैसियत कवि (जिस तरह कविताए वह लिखते थे।) कोई खास पूछ नही थी, उनके कामरेड प्रगतिवादी आलोचक वगैरह उनकी प्रयोगवादी कविताओ का मजाक उडाते थे, और अपने स्वभाव एकाकीपन, काव्य सस्कार और रूचि के कारण शमशेर प्रयोगवादी चीजे ही लिखने को बाध्य थे। हालाकि उनकी बराबर चेष्टा इस प्रयोगवाद (अतिशय व्यक्तिवादी मानसिक रूझान) से उबर कर मार्क्सवाद प्रेरित कठोर जीवन का यथार्थ पकडने की रही।

कहानी–

कहानी अपने हर रूप मे उपन्यास से पुरानी विधा है। कहानी मे कहने की विशेषता सदैव महत्वपूर्ण रही है। भाषा व्यवहार मे कविता लिखी जाती है कहानी कही जाती है। आधुनिक कहानी का स्वरूप अपने मुद्रित रूप मे हिदी साहित्य मे बीसवी शदी मे आरम्भ होता है। साहित्यिक पत्रकारिता के उदय के साथ मनोरजन से हटकर एक अनुभूति का सीधा साक्षात्कार अब कहानी का विधागत लक्ष्य हो गया है।

स्वातत्र्योत्तर हिदी कहानी का बहुमुखी विकास हुआ जिसे निम्न भागो मे विभाजित किया जा सकता है–

(1) **प्रगतिवादी कहानियां**– (1)

यशपाल – पिजडे की उडान, वो दुनिया, ज्ञानदीप, अभिशप्त, उत्तमी की मां, तुमने क्यों कहा मै सुन्दर हू।

1 आधुनिक हिदी साहित्य का इतिहास डा0 बच्चन सिह, स्वातत्र्योत्तर कहानी खण्ड

(2) **व्यक्तिवादी कहानिया**– (1)

भुवनेश्वर – सूर्यपूजा, भेडिए।

अज्ञेय – शरणार्थी, विपथगा, जयदोल, कोठरी की बात, अमर वल्लरी , ये तेरे प्रतिरूप,।

(3) **मनोवैज्ञानिक कहानिया**– (2)

इलाचन्द जोशी – खडहर की आत्माए, डायरी के नीरस पृष्ठ।

(4) **आधुनिक बोध की कहानिया**– (3)

विष्णु प्रभाकर – धरती अब भी घूम रही है।

कमल शीराजी – पत्थर की आख।

(5) **रोमाटिंक यथार्थवादी कहानियां (नई कहानी)**– (4)

शिवप्रसाद सिह – वशीकरण, शाखामृग, बिदा–महाराज, आर–पार की माला, मुर्दासराय।

मार्कण्डेय – गुलरा के बाबा, हसा जाई अकेला, भूदान, माही।

फणीश्वरनाथ रेणु – लालपान की बेगम, तीसरी कसम।

भीष्म साहनी – चीफ की दावत।

रागेय राघव – गदल।

शेखर जोशी – कोसी का घटवार।

अमरकान्त – जिन्दगी और जोक, डिप्टी कलक्टरी।

(6) **युगीन संक्रमण और तनावों की कहानियां**– (5)

मोहन राकेश – मलबे का मालिक, एक और जिन्दगी

1,2,3,4,5 आधुनिक हिदी साहित्य का इतिहास डा0 बच्चन सिह, स्वातत्र्योत्तर कहानी खण्ड

राजेन्द्र यादव – जहाँ लक्ष्मी कैद है, अभिमन्यु की आत्महत्या

कमलेश्वर – नीली झील

धर्मवीर भारती – गुलकी बन्नो, सावित्री न0 2 बद गली का आखिरी मकान

मन्नू भण्डारी – यही सच है, तीसरा आदमी

कृष्णा सोबती – मै हार गयी, मित्रो मरजानी

उषा प्रियवदा – छुट्टी का दिन, वापसी, एक कोई दूसरा

(7) **चीख क्षण, मूड और मिथ (कहानियो मे व्यक्त मनः स्थितियां)**– (1)

निर्मल वर्मा – लदन की एक रात, कुत्ते की मौत, परिन्दे

ज्ञानरजन – फेस के इधर और उधर, पिता

दूधनाथ सिह – रक्तपात, सपाट चेहरे वाला आदमी

गगा प्रसाद विमल – प्रश्नचिन्ह

गिरिराज किशोर – पेपर वेट

रवीन्द्र कालिया – नौसाल छोटी पत्नी

ज्ञान प्रकाश – अधेरे का सिलसिला

अन्य कहानीकार है– ममता कालिया, सुधा अरोडा, वर्तिका अग्रवाल, दीप्ति खडेलवाल, निरूपमा सेवती, मणिका मोहिनी, अचला शर्मा, शाली रोहेकर, इब्राहिम शरीफ, विश्वेश्वर, सिद्धेश प्रकाश बाथम, हर्षीकेश, सुदर्शन नारग, जितेन्द्र भाटिया आदि। (2)

1,2, आधुनिक हिदी साहित्य का इतिहास डा0 बच्चन सिह, स्वातत्र्योत्तर कहानी खण्ड

साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित कुछ कहानियों के अश –

अमरकान्त की कहानी 'प्रैक्टिस' मे वृद्धावस्था की ओर बढते एक वकील की व्यथा का मार्मिक चित्रण है जो अपने अधीन प्रैक्टिस करने वाले युवा परिश्रमी वकील की बढती लोकप्रियता और सफलता से ईर्ष्याग्रस्त और स्वय को कुठित महसूस करता है। वृद्ध वकील बिहारीलाल जो कभी मुवक्किलो को डरा धमकाकर, उनकी अज्ञानता का फायदा उठाकर बेशुमार रूपया कमाते थे। आज वही मुवक्किल चालाक हो गए है, वकील साहब के झासे मे आने वाले नही। आज वही बिहारीलाल हजार रूपए से सौदे बाजी शुरू कर अन्तत डेढ रूपये पर आ जाते है, और उन्हे सतुष्टि होती है, कि चलो कुछ तो मिला। कहानी की भाषा का एक उदाहरण–

"सलाम साहेब, दयाल सामने आकर सिर झुका कर खडा हो गया।"

क्यो रे आजकल बहुत मोटाई छा गई है? तुझे? उन्होने अत्यधिक रोबीले स्वर मे कहा और व्यग्य से उनकी खीसे निकल आई।

"नही–सरकार . . वह आखो को बेहद मलका रहा था।"

"वे हाफ रहे थे, इतनी देर तक लगातार बोलते रहने से उनका मुंह सूख गया था और जबान चटचटा रही थी। उनको प्यास और शरीर मे कमजोरी मालूम हो रही थी। फिर भी डेढ रूपये जेब मे आ जाने से उन्हे अजीब इत्मीनान हो आया। गोया उनकी सारी समस्या हल हो गई हो, और वे हर सकट का मुकाबला कर सकते है।" (1)

---

1 धर्मयुग 4 जनवरी 1970, कहानी " प्रैक्टिस' लेखक अमर कान्त, पृष्ठ 13

यथावसर देशज और ग्राम्य शब्दो का प्रयोग करना अमरकान्त की भाषा शैली की विशेशता रही है। यथा वह आखो को बेहद 'मलका' रहा था।

यहाँ 'मलका' शब्द पलके झपकाना के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है। 'पलके झपकाना' मे वह निरीहता नही, झलकती, जो 'मलका' शब्द से व्यजित होता है।

अभिमन्यु अनत (मारीशस के हिन्दी लेखक, जिन्हे मारीशस का प्रेमचन्द कहा जाता है।) की कहानी– 'कविता जो लिखी न गई' (1) मे युवा बने रहने की मानसिकता लिए क्रमश प्रौढावस्था की ओर बढते लेखक की कल्पना और यथार्थ के परस्पर मानसिक स्तर पर टकराहट का चित्रण इस कहानी मे किया गया है। लेखक अपने ही खयालो मे गुम रहता है कि कोई युवा लडकी उसके जीवन मे आयेगी और उसके जीवन मे फैले उदासी के मरूस्थल को हरियाली मे परिवर्तित कर देगी, इसी बीच उसे अपनी किशोरावस्था की ओर बढती बेटी का खयाल आता है।
उदाहरण– "शीशे के सामने पहुच कर मैं ठिठक जाऊगा"।

एक सरसरी नजर से अपने आपको नीचे से ऊपर तक देखूगां, मन को एक असाधारण सी शाति मिलेगी और मै शीशे पर अपने प्रतिबिम्ब से प्रश्न करूगा–

क्या ख्याल है तुम्हारा?

जानता हूँ कि वह चुप रहेगा क्योकि अब जादू के शीशे का जमाना ही कहा रहा। मुझे इस बात का पश्चाताप से होगा कि मैं उस जमाने में नही था जब आइने बोला करते थे। आइने केवल औरतो से ही क्यों बोलते थे। इस पर अनेक बार सोच कर भी उत्तर नही पाया।"

---

1 धर्मयुग 4 जनवरी 1970, कहानी ' कविता जो लिखी न गयी, लेखक अभिमन्यु अनत, पृष्ठ 20

"अभी घटनाओ को श्रृखलाबद्ध करते हुए माया की याद आ गई। यह याद कुछ घडी तक बनी रहेगी। फिर धीरे–धीरे मिट जाएगी और तब मैं सभी कुछ भूलकर फिर से जवान होने का सपना देखने लगूगॉ, या यू कहे कि जवान हू या नही हू, के चक्कर मे पड जाऊगा। अपने काले बालो को देखकर तो मै जवान होने का दावा कर जाता हू पर अपनी बेटी माला का ख्याल आते ही मुझे इरादा बदलना पड जाता है।"

"उसी तरह हसती हुई बालू पर दौड जाएगी। उसके पैरो के छुटे निशानो को चूमने के लिए सागर की लहरे उफन पडेगी, पर वहा तक पहुच नही पाएगी।" (1)

मारीशस के जनजीवन मे समुद्र का विशेष महत्व है। कहानी मे समुद्र का उल्लेख कहानी मे स्थानीयता का रग भर देता है। किन्तु यदि यह न बताया जाए कि लेखक मारीशस निवासी है तो किसी भी दृष्टि से यह नही लगता है कि कहानी भारत से बाहर लिखी गई। कहानी मे पुरूष मन के अन्तर्द्वन्द को लेखक ने व्यक्त करने का प्रयास किया है। एक और विधुर जीवन का अकेलापन, टीस और दूसरी ओर क्रमश युवावस्था की ओर बढती बेटी अकेलेपन को दूर करने के लिए कोई सहारा होना चाहिए, जो एक कल्पना है और लेखक की बेटी उसका यथार्थ। इस मनोदशा के चित्रण मे लेखक जिस भाषा का प्रयोग करता है वह इस मनोभाव को व्यक्त करने मे सक्षम है।

• •

पारिवारिक दायित्व के बधन मे बधी स्त्री अपनी उफनती इच्छाओ के समुद्र को समेट कर बूढे मा–बाप के प्रति अपने दायित्वो के निर्वाह के लिए, किस तरह अपनी व्यक्तिगत आशाओ उमगो का गला घोट देती है, विशेषकर

जब उस पर ही मा–बाप की जिम्मेदारी हो। मध्यवर्गीय भारतीय परिवार जहा विवाह के बाद बेटी पराई हो जाती है, लडकी के पराई होने का अदेशा ही असहाय और बूढे मा बाप को भयानक भविष्य की आशका से ग्रस्त कर देती है। ऐसी आशका भय को महसूस कर लडकी जब मां के चेहरे पर सतुष्टि और आश्वासन का भाव देखने के लिए खुद को 'यातनाघर' मे डाल देती है। ऐसी ही कहानी है 'कठपुतली का अभिसार' (1)

उदाहरण– "राजरानी के पीछे–पीछे रमानाथ भी भीतर खडा हो गया।"

"करीब डेढ साल पहले राजरानी जब पहली बार रमानाथ को अपने यहॉ लाई थी, तब उसे देखकर मा और बाबू जी चौके थे। शायद उन्होने सपने मे भी नही सोचा होगा कि राजरानी इतनी निश्चिता के साथ किसी अपरिचित व्यक्ति को अपना घनिष्ठ बताकर उनके सामने लाकर खडा कर देगी।"

मा ने कोरे–कोरे नोटो को लेकर माथे से लगाया, फिर आंचल मे बांधने के लिए तह करने लगी। उनकी पुतलियो पर छाए आतक का तनाव कडकडाकर टूट रहा था जैसे धुधलाई हुई एक आकृति फिर उभर रही है
'राजरानी की आकृति'।

होठो मे दात धसाए राजरानी घिसटती हुई सीढियो की ओर बढ चली। यह आकृति अब कभी धुधली न होने पाएगी। किसी भी आतक को राजरानी मा के पुतलियो पर हावी होने का अधिकार नही देगी . कभी नही।

••

गरीबी और अभावो से घिरा विवश जीवन और वासना का आवेग आदमी से क्या कुछ नही करा देता। उसके लिए घर, बाहर अधेरा–उजाला और

---

1 धर्मयुग 18 जनवरी 1970, कहानी कठपुतली का अभिसार लेखक कुणाल श्रीवास्तव पृष्ठ 11, 13

लोकलाज जैसी बाते अर्थ हीन हो जाए, लेकिन धन के लिए अपने शरीर का सौदा करने वाली मा सभवत यह सहन नही कर सकती कि बचपन और जवानी की सीमा पर खडी उसकी बेटी पर भी कोई अपनी लोलुप दृष्टि गडाने की कोशिश करे, फिर वह चाहे उसका पति ही क्यो न हो। ऐसी स्थिति मे यदि वह अपने सम्बन्धो को नकार दे और इतनी कठोर हो जाए कि उसकी लाश की 'शनाख्त' करने से भी इकार कर दे तो यह अस्वाभविक न होगा। नारी मन की अबूझ ग्रथियो का उद्घाटन करती हुई 'मेहरूनिसा परवेज' की कहानी 'शनाख्त' (1) से उदाहरण–

''भड से दरवाजा खुला और मा सामने दिखी। उसके हाथ मे अडो का टोकना वैसे ही भरा हुआ। बत्ती को आश्चर्य हुआ, बिना अडे दिए मा लौट कैसे आई?

मा शायद उसके चेहरे के आश्चर्य को भाप गई थी, टोकने को नीचे रखते हुए बोली ''वह आया है, मैने अभी–अभी चौक पर उसे देखा है।''

तभी कोठरी से मा निकली ''क्या पसारा खोले बैठी है बत्ती? साथ ही मा की नजर गुड्डे पर ठहर गई और वह भी आश्चर्य से भरकर उसे देखने लगी।

बत्ती के हाथ से गुड्डू को लेकर देर तक देखती रही, बत्ती ने मा की आखो मे ठीक वही परछाई देखी जो लाश देखने के समय उसकी आंखों मे थे।

एकाएक मा की आखें भर गई और वह रोने लगी। उसके हाथ से गिरकर गुड्डा जमीन पर पडा था।

---

1 धर्मयुग 8 फरवरी 1970 कहानी 'शनाख्त' लेखिका मेहरूनिसा परवेज पृष्ठ 13,14,15

मा फूट–फूट कर रो रही थी उसके सामने वही पुरानी चिदियो का बना भूरे चेक की अचकन पहने गुड्डा पडा था। मा कह रही थी "बत्ती मैने उसे पहचान लिया, देख यह पडी है उसकी लाश।"

• •

कहानी लेखिका 'शिवानी' की कलम से निसृत कहानिया भावुकता से ओतप्रोत, सजीव चित्रण शैली शब्दो का ऐसा जादू कि उससे बधा पाठक बिना रूके पूरी कहानी पढ जाता है। पाठक को कहानी पढने के लिए प्रयास नहीं करना पडता, कथा कहने की यह शैली 'शिवानी' को उन लेखको से अलग करती है जिनकी रचना पढते समय पाठक को लगता है कि वह कुछ पढ रहा है। 'शिवानी' की ऐसी ही एक कहानी है 'भूमिसुता'। (1) 'शिवानी' कहानी कहने की कला मे कुशल है, किन्तु वह चरम शिखर पर पहुचने से पहले ही उतरना शुरू कर देती है, जिससे 'कहानी' कहानी न रहकर 'लघु उपन्यास' जैसी हो जाती है। इसे कहानी की प्रकृति अनुसार उचित नही कहा जा सकता।

उदाहरण–

"पर फिर कुछ कुतूहल और कुछ शायद उसकी नियति हो, उसे वहॉ खीच ले गई थी। उसे देखते ही भीड का घेरा स्वय बडे अदब से सिमट गया। कूडेदान के पास एक चादर में लिपटी वह नवजात फूल सी बालिका मरी बटेर की सी गरदन किए चुपचाप पडी थी। दोनो नन्ही मुट्ठिया कानो से सटाए, जैसे अभी भी मा के गर्भ मे सो रही हो कोलाहल से बेखबर।"

अनुराधा ने हंसकर बात टालने का प्रयत्न किया "तेरे पापा को सुता के जाने का बुरा लगा है, अब तू आ गया है चल अच्छा किया।"

---

1 इण्डिया टुडे साहित्य वार्षिकी 1994, कहानी भूमिसुता, लेखिका शिवानी पृष्ठ 96,97,98 100

''पापा'' वह जैसे लडने को ही एक दिन की छुट्टी लेकर आया था। ''आपने और ममी ने मुझे बताया क्यो नही?

यही कि दीदी आपकी गोद ली हुई बेटी है मेरी सगी बहन नही है।

••

तुम कैसे करोगी, पिड तो भैया ने दिया है ना। आप कराइये पण्डित जी मै करूगी।

उनका कोई बेटा, सगा भतीजा, भाजा नही है क्या? मै ही हू उनका बेटा भतीजा, भाजा हू—कहा ना मैने, वह झल्लाई तो पडित सहम गया

सुता ने पात्र को सिर से लगाकर जल धारा मे विसर्सित कर दिया

'धर्मयुग' इण्डिया टुडे (साहित्य वार्षिकी) जैसी व्यावसायिक पत्रिकाओ से अलग (तथाकथित) कुड साहित्यिक पत्रिकाओ ने हिन्दी साहित्य के विशल परिदृश्य का व्यक्त करने का दावा किया। एक नया चिन्तन विकसित किया 'हस' जैसी कुछ पत्रिकाओ ने, जिसे सज्ञा दी गई 'दलित साहित्य' इस नामकरण के द्वारा हिन्दी साहित्य मे स्पष्ट विभाजन हो गया। सवर्ण साहित्य और दलित साहित्य। 'हस' के लगभग सभी अको मे सपादक इन्ही दो मुद्दो से जूझते दिखाई देते है, जो कभी – कभी धर्मनिरपेक्ष और धर्मसापेक्ष जैसे मुद्दो पर भी अटक जाते है। नवीनता और मौलिकता लाने के·प्रयास में लेखक कहानी मे शीर्षासन करने लगते हैं। नयापन लाने के लिए कोई भी शीर्षक लिख डालते है। ऐसी ही एक कहानी ''मै हवा, पानी परिन्दा कुछ नहीं (1) हैं। कहानी का शीर्षक कुछ कहने के बजाए भ्रमित करता है।

---

1 हस 4 फरवरी 1999 कहानी '' मे हवा पानी परिन्दा कुछ नही'' लेखक राजेश जोशी पृष्ठ 17,18,20,21

उदाहरण–

'दोपहर कबूतर के पख की तरह थी, सुरमई मुलायम और बहुत हल्की, इतनी हल्की कि किसी का भी मन उडने को कर सकता था। अली अपनी लिखने की मेज के सामने बैठा कुछ सोच रहा था तभी उसके बदन मे कपकपी सी हुई और देखते ही देखते वो एक चिडिया मे बदल गया।

इसी बीच हमारे शहर के शायर ने उस परिन्दे की मौत पर एक मर्सिया भी लिख लिया था। अली के बारे मे कुछ तय नही हो पा रहा था। इसलिए मर्सिया जिसे अजाम भोपाली ने अजाम दिया था आज भी उसकी जेब मे रहता है, पता नही कब खबर आ जाए और उसे कब पढना पडे।

स्वतत्रता के बाद हिन्दी मे कहानी विधा का सरलीकरण हो गया। किसी को भी यदि अपने बारे मे यह जानकारी हो कि वह लिख सकता है तो फौरन चार, छह पेज की कहानी तैयार और देश मे हजारो छोटी मझोली पत्र पत्रिकाए हैं जो छाप देती है।

<u>उपन्यास</u>–

उपन्यास मे मानव जीवन के विविध पक्षों का चित्रण वयापक परिवेश मे किया जाता है। उपन्यास मे पात्रो की बहुलता रहती है और आकार प्रकार का सकोच नही होता , और मानव जीवन की समस्याओ से हटकर अन्य समस्याओ पर भी विचार–विमर्श तथा आलोचना प्रत्यालोचना होती रहती है, उपन्यास जीवन की विशद व्याख्या है।

स्वातत्रयोत्तर हिदी उपन्यास का विकास विभिन्न धाराओ मे हुआ जिनमे मुख्य है–

1 **प्रयोगवादी उपन्यास**– (1)

अज्ञेय–शेखर एक जीवनी, नदी के दीप, अपने–अपने अजनबी

धर्मवीर भारती–सूरज का सातवा घोडा

प्रभाकर माचवे–एकतारा, द्वाभा

शिवप्रसाद मिश्र रूद्र–बहती गगा

2 **प्रगतिवादी उपन्यास**– (2)

यशपाल – झूठा – सच, दिव्या।

राहुल साकृतायन – सिह सेनापति, जययौधेय।

रागेय राघव – मुर्दो का टीला, कब तक पुकारू।

भैरव प्रसाद गुप्त – गगा मैया, सत्ती मैया का चौरा, आशा, बादी।

अमृतराय – बीज, नागफनी का देश, हाथी के दात।

3 **सामाजिक सांस्कृतिक**– (3)

भगवती चरण वर्मा – टेढे मेढे रास्ते, भूले बिसरे चित्र, सामर्थ्य और सीमा, सबहि नचावतराम गुसाईं, प्रश्न और मरीचिका।

उपेन्द्रनाथ अश्क – बाधो न नाव इस ठाव, शहर में घूमता आइना, गर्म राख।

अमृतलाल नागर – महाकाल, सेठ बाकेलाल, बूंद और समुद्र, शतरज के मोहरे, सुहाग के नुपुर, अमृत और विष, मानस का हंस।

1,2,3 आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डा0 बच्चन सिह उत्तर स्वच्छन्दतावाद काल का गद्य उपन्यास खण्ड

राजेन्द्र यादव – उखडे हुए लोग, सारा आकाश, कुलटा अनदेखे अनजान पुल, एक इच मुस्कान।

4 **सांस्कृतिक मिथकीय**– (1)

हजारी प्रसाद द्विवेदी – बाण भट्ट की आत्म कथा, चारूचन्द्र लेख, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा।

शिव प्रसाद सिह – नीला चाद।

5 **आचलिक उपन्यास**– (2)

फणीश्वर नाथ रेणु – मैला आचल, दीर्घतपा, जुलूस, कितने चौराहे, पल्टू बाबू रोड।

उदय शकर भट्ट – सागर लहरे और मनुष्य नए मोड।

नागार्जुन – रतिनाथ की चाची, बलचनमा,बाबा बटेसर नाथ, जमनिया के बाबा।

6 **आधुनिकता और जनवादी धारा**– (3)

मोहन राकेश – अधेरे बन्द कमरे।

नरेश मेहता– यह पथ बधु था।

निर्मल वर्मा – वे दिन।

राजकमल चौधरी – मछली मरी हुयी, शहर था शहर नही था।

महेन्द्र भल्ला – एक पति के नोट्स।

उषा प्रियवदा – रूकोगी नही राधिका।

मोहन राकेश – न आने वाला कल।

शिवप्रसाद सिह – अलग–अलग बैतरणी।

---

123 आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास डा0 बच्चन सिह उत्तर स्वच्छन्दतावाद काल का गद्य उपन्यास खण्ड

श्रीकान्त वर्मा – दूसरी बार।

गिरिराज किशोर – यात्राए।

मणिमधुकर – सफेद मेमेने।

ममता कालिया – बेघर।

मन्नू भण्डारी – आपका बटी।

गोविन्द मिश्र – अपना चेहरा।

कृष्णा सोबती – सूरजमुखी अधेरे के।

श्रीलाल शुक्ल – रागदरबारी।

बदीउज्जमा – एक चूहे की मौत।

जगदीश चन्द – धन धरती न अपना।

काशीनाथ सिह – अपना मोर्चा।

राही मासूम रजा – आधा गाव।

राजीव सक्सेना – पणिपुत्री।

भीष्म साहनी – तमस।

रमेश चन्द्र शाह – गोबर गणेश।

श्रबण कुमार गोस्वामी – जगल।

मनोहर श्याम जोशी – कुरू–कुरू स्वाहा।

मार्कण्डेय – अग्निबीज। (1)

स्वतत्रता के पश्चात हिन्दी साहित्य जगत मे बहुत तेजी से विकास और परिवर्तन हुआ। इस विकास और परिवर्तन को उपन्यास विधा के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास विभिन्न लेखको ने किया। पत्र–पत्रिकाओं में ऐसे अनेक सभावनाशील लेखको की उपन्यास कृतियों के अश धारावाहिक रूप मे प्रकाशित

1 आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास पृष्ठ उत्तर स्वच्छन्दतावाद काल गद्य उपन्यास खण्ड

होते रहे है। इन 'धारावाहिक' अशो के प्रकाशन से पत्रिकाओ को कई फायदे हुए, प्रथम तो पाठक उपन्यास की रोचकता के वशीभूत हो पत्रिका का नियमित ग्राहक बन जाता है दूसरा उभरते लेखको को पत्रिका के माध्यम से एक ठोस मच प्राप्त होता है, तीसरा उपन्यास जैसी बडी विधा को पाठक बहुत आसानी से किश्तो मे पढ लेता है जिससे पाठक की पठनीयता मे वृद्धि होती है।

भगवती चरण वर्मा अपनी कहानी और उपन्यास विधा के विशेष 'पठनीयता' के कारण लोकप्रिय रहे है। ऐसे लेखको का नाम ही काफी होता है किसी भी कृति को पढने के लिए प्रेरित करने हेतु उनके नवीनतम उपन्यास 'सबहि नचावत राम गुसाई', (1) के अश से कुछ
उदाहरण–

"नगर के प्रमुख व्यापारियो का जो डेलीगेशन 'जबर सिह' से मिलने आया था वह काफी उत्तेजित था। प्रदेश का एक लम्बा दौरा लगाकर ठाकुर जबर सिह पिछले दफ्तर मे काफी काम इकट्ठा हो गया था। उसे निपटाने के लिए वे सुबह नौ बजे कौसिल हाउस जाना चाहते थे उसी समय उनके पी0 ए0 ने खबर दी कि बारह प्रतिष्ठित व्यापारियो का शिष्ट–मडल उनसे मिलने आया है।

लाला गेदामल ने जरा कडी आवाज मे कहा "श्रीमान! हम लोग नगर के प्रतिष्ठित व्यापारी है। हम नगर की सम्पन्नता के प्रतीक हैं आपका जो नया शहर कोतवाल आया है, उसने बडी ज्यादातियां आरम्भ कर दी हैं। सनीचर के पाच बजे उसने पाच ऊचे व्यापारियो को ब्लैक मार्केटिंग या स्मगलिग के अभियोग मे हवालात में बन्द कर दिया है। जमानत नहीं लेता हैं। एस0एस0पी साहब के पास पहुचे तो वे बोले कि शहर कोतवाल मिनिस्टर

---

1 धर्मयुग 25 जनवरी उपन्यास अश सवहि नचावत रामगुसाई ले0 भग0 च0 वर्मा पृष्ठ 16,17,46

साहब के आदमी है जो करते है वह मिनिस्टर साहब की मर्जी से करते हैं, तो हम लोगो ने श्रीमान जी मिलने की कितनी कोशिशे की। परसों रात, कल दिन भर, लेकिन श्रीमान के यहॉ से यही उत्तर मिला कि दौरे पर हैं।

तबादिला तो अफसरो का होता है यह खयालो का कैसा तबादिला? हिम्मत सिह ने पूछा

फिर बोले। जबर सिह ने डाटा, फिर मुसकुराते हुए उन्होने कहा अरे तबादिला खचालात के माने है विचार–विमर्श, और रामलोचन की ओर मुडकर उन्होने कहा समझ गए न आज तीन चार बजे तक यह काम हो जाना चाहिए।

भगवती चरण वर्मा के उपन्यास 'सबहि नचावत राम गुसाई' मे आजादी के बाद भारतीय लोकतत्र मे क्रमश आने वाली विद्रूपताओ की ओर सकेत किया गया है, जो आने वाले वर्षो मे बढता ही चला गया। पहले राज नेता सत्ता मे आने के लिए अपराधियो का सहारा लेते थे वही अब अपराधी सीधे सत्ता हथियाने मे सफल हो गए है। राजनीति मे मूल्य, मानवता, सद्भाव जैसे शब्द अर्थहीन हो गए है। भारतीय लोकतत्र को मखौल बनाने मे परिस्थितियो का भी योगदान रहा। इन्ही सब पर दृष्टि केन्द्रित किया गया है, उपन्यास 'सबहि नचावत राम गोसाई' यह सबको नचाने वाला 'राम' नही बल्कि राजनीति के ये तथाकथित प्रतिनिधि गण है जो सब कुछ कर सकते है अपने हित के लिए।

•••

हिन्दी उपन्यासकारो मे 'मजूर एहतेशाम'उस वर्ग की सच्चाइयों से रूबरू कराते है, जो 'आधा–गाव' के बाद छूटता चला गया। जो हर रोज यह कहने को विवश है कि उसका आधा हिस्सा (यानि रिश्तेदार,नातेदार और परिवार के कुछ सदस्य) पाकिस्तान मे बसता है, यही कारण है कि गोली पाकिस्तान मे

चलती है तो ऐसा लगता है कि उनमे से किसी एक का सीना छलनी हुआ है, उनकी इसी तडप को राजनीति का एक तबका, कुछ और ही नाम देता है, जो उनके दिलोजान को छलनी कर देता हैं। ऐसी ही तमाम कोशिश को आवाज देने की कोशिश करते है, 'मजूर एहेतशाम' अपने उपन्यास 'साढे तीन मिनट सिर्फ (1) मे।

उदाहरण –

"बरसात के दिन थे और तब बरसात का एक अलग ही मिजाज हुआ करता था। दिमाग मे पन्द्रह जून मानसून की डेडलाइन तय थी और शायद बादल भी उन दिनो पाबन्द और ईमानदार हुआ करते थे। . .

बरसात आती गरमी से झुलसाई जमीन और पेड–पौधो को राहत देने और देखते ही देखते पहाड,मैदान, खपरैले, दिवारे हरी हो जाती और चौतरफ जलथल ही जलथल हो जाता। दिनो और हफ्तो सूरज के दिदार न होते, और शहर एक बहुत बडे गुसलखाने मे तब्दील हो जाता। जहॉ हर चीज नहाती , सडके और हथेली सी गहरी नालिया बरसात के हल्के झलो में ही पानी मे डूब जाती।

भाभी जान सफेद चिकिन का घेरदार कुर्ता, चुनी हुई हरी ओढनी, हरे मशरू का चूडीदार पाजामा पहने, कलाइयो मे पडी बेगिनती सुर्ख काच की चूडिया, नाक मे चमकती हीरे की लौंग, चेहरे पर फैली सजीदा मुस्कान दालान मे चौकी पर बडा सा पानदान खोले बैठी हैं।

भाभी जान जमीर अहमद से कुछ पूछ रही हैं मगर इससे पहले वह उनके सवाल का जवाब दे एक नामानूस खनकती आवाज कानो मे बिखर जाती हैं. . "स–ला–मा–ले–कुम" लगता है कानों में उतरने से पंहले वह आवाज

---

1 इण्डिया टुडे साहित्य वार्षिकी 1994 उपन्यास अश साढे तीन मिनट सिर्फ लेखक मजूर एहतेराम पृष्ठ 38,39,40

गूजकर उस पल मौजूद हर चीज को बहुत आहिस्ता से छूती है, दरख्त, उनके पत्ते, पौधे गमले, दालान के खभे, खपरैल आसमान मे बेमकसद भागते बादल, सेहन मे चकराता धुआ समझ मे नही आता वह आवाज खुद उसके भीतर गूजते रहने के बाद बाहर आई या बाहर से उसके कानो के जरिए भीतर उतरी है।

क्या नाम दिया जा सकता था ऐसे रिश्ते को जिसने कुछ सोचने और तय करने की मोहलत ही नही दी? हजार जान से आशिक मुहावरे से तो कहा जा सकता था लेकिन क्या यह यकीन के साथ कहा जा सकता है कि वह इश्क था, जिसमे जमीर अहमद खान को जमीन आसमान सलामालैकुम करते सुनाई दिए थे इश्क नही वह शायद एक तरह की दिवानगी थी जिसमे उसने आपा खो दिया था। तो इश्क खुद क्या एक तरह की दिवानगी का नाम नही? आशिक क्या होशमदी का हलफ उठाने के बाद हुआ जाता है।

सोचकर अचरज होता है कि आर पी एम के रिकार्ड जिसकी अवधि सिर्फ साढे तीन मिनट होती थी, उसमे जीवन की शताब्दिया कैसे समा गई? या फिर कही सोच के जमीन आसमान पर गुबार से फैले अन्तहीन समय का वास्तविक माप यही तो नही है, साढे तीन मिनट सिर्फ।

••

उच्च मध्यवर्गीय जीवन मे बढती घुटन, असहिष्णुता का परिवेश, दिन पर दिन असहनीय होती परिस्थितियो को एक महिला किस तरह महसूस करती है। घर मे शराब पीना पहले पूर्णतया वर्जित होता था, आज के एकल परिवारों मे पति–पत्नी कुछ भी करने के लिए स्वछन्द है। ऐसे मे व्हिस्की ड्राइग रूम की शान बन जाती है, तो कोई विशेष बात नही होती। महिला उपन्यासकार

इस भाव को विशेष सजीदगी से देखती हैं और उसका प्रभाव आने वाले समय पर महसूस करती है। प्रभा खेतान ऐसी ही लेखिका है जो अपने उपन्यास 'म्हाने चाकर राखो जी' (1) मे व्यक्त करती है। उपन्यास के महत्वपूर्ण अश के उदाहरण–

"रात के साढे आठ बजे थे, आधे घटे मे आते ही सुमित ने एक ग्लास व्हिस्की उडेली, बर्फ डाला और टीवी के सामने बैठ गया। यह रोज का काम था। जब तक उसने अपनी व्हिस्की के दो ग्लास खत्म किए, तब तक वृदा ने बच्चो को खाना खिला दिया था।"

ऐ रि. रिया चुप कर तो ऐ रिया। जरा रचित को सभाल चुप करा पापा नाराज हो रहे थे। . तब तक रचित हाजिर था रोते हुए "मम्मी देखो ना, मेरी पेसिल दीदी ने ले लिया।

ठीक है उसको काम होगा।

लेकिन वह मेरी पेसिल है एक जोर की चीख, वह अन्दर रिया से कह रहा था, मम्मी कल मुझे नयी पेसिल खरीद कर देगी, नयी वाली रबर के साथ।

मगर क्यो? किसलिए? ऐसे ही यह मकान इतना गंदा है। बच्चो को डाटते हुए वृदा ने कहा, मगर शोरगुल सुनकर व्हिस्की का गिलास मेज पर रखते हुए सुमित चीखने लगा।

उसकी त्योरिया चढी हुई थी, वृदा तुम इन बन्दरो को चुप नही करा सकती।

1, हस जनवरी 1999 उपन्यास अश " म्हाने चाकर राखो जी" लेखिका प्रभा खेतान पृष्ठ 75

बहुतेरी औरते तो दैन्य और अभाव मे वेश्या हो जाती है। कम से कम उसकी जिन्दगी मे तो यह सब नही घटा है। बेकार मे इतनी खूबसूरत जिन्दगी के लिए औरते शिकायत पालती हैं अब और कुछ नही तो बहुत सी औरतो का घर मे मन नही लगता, अब भला कोई कहे आप कौन तारे तोड लाएगी? हम औरते अपनी माओ पर ही जाती है। लेकिन अम्मा कैसी तो सूनी–सूनी लगती है, और सास जी एक बार बोलना शुरू करती है तो बोलती चली जाती है। इन लोगो ने हमारी आज की जिन्दगी की घुटन को जाना ही नही है। ये जानती ही नही कि पलग की ठडी चादर का स्पर्श अच्छा लग रहा था, उसको लगा मानो उसका कोमल शरीर किसी का स्पर्श चाहता है शरीर का पोर–पोर थका हुआ प्यासा था और वह?

<u>आलोचना</u> –

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिदी आलोचना को समग्र रूप मे स्थापित कर दिया। शुक्ल जी के परवर्ती आलोचको ने उनके प्रभाव को ग्रहण करते हुए भी मौलिकता का परिचय दिया। नन्द दुलारे बाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी और डा० नगेन्द्र आचार्य शुक्ल के आलोचना गगोत्री की स्वतत्र धाराए है।

स्वातत्र्योत्तर हिदी आलोचना की बहुमुखी प्रगति हुयी है। इसके विकास मे योगदान देने वाले प्रमुख आलोचक हैं– आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, डा० नगेन्द्र।

स्वातत्र्योत्तर आलोचना को नई दृष्टि और नया नाम प्रदान करते हुए इसे मार्क्सवादी आलोचना की सज्ञा दी गई। इस आलोचना परम्परा में योगदान देने

वाले प्रमुख आलोचक है शिवदान सिह चौहान, रामविलास शर्मा, अमृतराय, नामवर सिह, विशभर उपाध्याय, रमेश कुतल मेघ, शिवकुमार मिश्र। (1)

मार्क्सवादी परम्परा से इतर आलोचना को विकसित करने वाले आलोचक है इन्द्रनाथ महान, विनय मोहन शर्मा, देवराज उपाध्याय, भगीरथ मिश्र, विजयेन्द्र स्नातक, लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, विश्वनाथ त्रिपाठी, परमानन्द श्रीवास्तव, डा0 रघुवश, रामस्वरूप चतुर्वेदी आदि। (2)

आलोचना (समीक्षा, बुक–रीव्यू) को आगे बढाने मे 'प्रतीक', कल्पना और आलोचना आदि पत्रिकाओ ने उल्लेखनीय योगदान किया। कुछ दिनो तक धर्मयुग मे यह कार्य अच्छे ढग से चला। आलोचना को आगे बढाने का कार्य अन्य साहित्यिक पत्रिकाए कर रही है जिनमे मुख्य है हस, पहल, पूर्वग्रह आदि।

हिदी आलोचना को प्रतिष्ठित करने में डा0 राम विलास शर्मा का योगदान अविस्मरणीय है। छायावादोत्तर नई छायावादी कविता आलोचना मे उन्होंने छायावादोत्तर कविता पर छायावाद के प्रभाव को सूक्ष्मता से रेखाकित किया। प्रयोगवादी कवि स्वय को प्रयोगवादी घोषित करते हुए भी छायावाद के प्रभाव से स्वय को मुक्त नही कर पाते। कवि अपनी कविता मे वही रोमानी अभिव्यक्ति, कल्पना की अतिशयता, स्पर्श, चदन गध की कविता। कवि चाहे अज्ञेय हो, धर्मवीर भारती, हो विजयदेव नारायण साही हो या बच्चन, नरेन्द्र शर्मा, गिरिजाकुमार माथुर हो, सभी उद्दाम यौवन की लालसा मे तडपते रहते हैं। इन सभी कवियो की कविता मे छायावाद के प्रभाव का विवेचन किया है डा0 राम विलास शर्मा ने "छायावादोत्तर नई छायावादी कविता" (3) मे आलोचक की टिप्पणी के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण – "कल्पना की अतिशयता हवाई उडान यथार्थ से पलायन

1, 2, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास डा0 बच्चन सिह पृष्ठ उत्तर स्वच्छनन्दता वाद गद्य खण्ड
3, धर्मयुग 18 जनवरी 1970 पृष्ठ 20

यह सब नए छायावाद मे पुराने छायावाद की अपेक्षा अधिक है। यह कमजोरी उर्वशी मे है। उर्वशी नारी से अधिक नारी की कल्पना है। उसे विलास व्यापार के अलावा और कोई काम नही, पुरूरवा का श्रम से कोई सम्बन्ध नही है। उसकी यह युक्ति है कि मनुष्य देह से प्रेम करके अदेह सौन्दर्य तक पहुच जाता है किन्तु आज के युग मे प्लेटो की देह से अदेह तक पहुचने की प्रक्रिया काम नही देती।" (1)

"उत्तर कालीन छायावाद की निराशा आध्यात्मिक न होकर पार्थिव है, कल्पना से अधिक उस पर यथार्थ जीवन की उदासी का रग है, उसकी शब्द योजना उर्दू से प्रभावित और बोलचाल के नजदीक है। दिलचस्प बात है कि इलाहाबाद इस काव्यधारा का प्रमुख केन्द्र रहा और इस धारा के अधिकाश कवि इलाहाबाद विश्वविद्यालय से – जहॉ रघुपति सहाय, फिराक अध्यापक थे। किसी न किसी रूप मे सम्बन्धित थे। बच्चन नरेन्द्र, भारती के अलावा इस रूमानी लहजे मे 'विजय देव नारायण साही' ने भी प्रयोग किए है –

"जिदगी कुछ इस तरह खामोशियो से भर गयी
खोजता फिरता हू दिल का दर्द पर पता नही
बोझ से जैसे झुकी जाती है पलके बार बार
और रोने मे भी पहले सा मजा आता नही" (2)

गिरिजा कुमार माथुर की कविता के सम्बन्ध मे डा0 शर्मा की प्रसिद्ध टिप्पणी इसी आलोचना मे की गई, जिसके अश इस प्रकार है– "तारसप्तक 1943 मे –

"गोरे कपोलो पे हौले से आ जाती

1,2 धर्मयुग 18 जनवरी 1970 पृष्ठ 20

पहिले ही पहिले

रगीन चुम्बन''

इसके बारह साल बाद –

''जूडे का स्याह चाद

लिया चाद ने बाध

देह की कसी मिठास

छिटक बनी फुलवा'' (शिलापख चमकीले पृष्ठ 46)

पुन· चार वर्ष उपरान्त –

''गध जुडे कैसे

चली पियरी बतास

देह कुसुमित मृणाल

जैसे गेहू की बाल'' (1)

फिर इसके लगभग दस वर्ष बाद 'जो बंध नही सका' (1968) मे स्लीवलेस ब्लाउज पहने छरहरी चादनी खजुराहो के कसे, दुहरे पद्मासन, ढली मूर्तियो के बिद्ध साचे, सदली देह खुला गोरा देह रस और आत्मतोष की यह अभिव्यक्ति –

''मुझ से जब मनमाना

तुमने देह रस पाकर

आखो से बता दिया

देह अमर हो गयी''।

---

1 धर्मयुग 18 जनवरी 1970 पृष्ठ 20

उच्छृंखल से लेकर जो बध नही सका, तक तीस वर्षो की दीर्घ अवधि मे गिरिजा कुमार ने जो राग साधा है, वह देह रस वाला राग है। जिसका किशोर मन न वयस्क होता है न प्रौढ, वार्धक्य तो दूर की बात है। (1)

छायावादी कविता का 'नई कविता' पर प्रभाव की विवेचना के साथ डा0 रामविलास शर्मा ने अज्ञेय की कविता की सूक्ष्म विवेचना की और उसमे नव रहस्य बाद ढूढ निकाला। अज्ञेय की कविता के विभिन्न दृष्टि कोण से विवेचना करने और प्रतिष्ठित करने मे डा0 शर्मा की आलोचना का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। 'अज्ञेय और नव रहस्यवाद' (2) आलोचना मे लेखक ने अज्ञेय को कई महत्वपूर्ण सज्ञाए प्रदान की है इनमे कुछ इस प्रकार है –

मैं शक्ति का एक अणु हूँ
शक्ति असीम है।
मै शक्ति का एक अणु हू।
मै भी असीम हू।
एक असीम बूद
असीम समुद्र को जो अपने अन्दर प्रतिबिम्बित करती है,
एक असीम अणु
उस असीम शक्ति को जो उसे प्रेरित करती है
अपने भीतर समा लेना चाहती है।

मेरे सीमित अणु मे विराट की शक्ति निहित है यह रहस्यवादी कल्पना अज्ञेय ने अपने बाद की रचनाओ मे अनेक बार दोहराई है। (3)

1,2,3, धर्मयुग 1 फरवरी 1970 पृष्ठ 20, 21

बिम्ब की बात और जड़ाऊ कविता –

अज्ञेय की एक कविता है 'सोन मछली'

हम निहारते रूप

काच के पीछे

हाफ रही है सोन मछली

रूप तृषा भी (और काच के पीछे)

है जिजीविषा

'सोन मछली' कविता की व्याख्या अज्ञेय के शब्दो मे "जीवन को सीधे न देखकर हम एक काच मे से देखते है तो हम उन रूपो मे ही अटक जाते है जिनके द्वारा जीवन अभिव्यक्ति पाता है। काच की टकी मे पाली हुई 'सोन मछली' पर एक कविता मे यही कहा गया है। ये उपमान मैले हो गए है – अज्ञेय का हुनर शब्दो की सजावट मे ही नही, प्रतीको और उपमानो के चुनाव मे भी दिखाई देता है।

आत्मा परमात्मा के सम्बन्ध का विवेचन अज्ञेय इन शब्दो मे करते है –

"अरी ओ आत्मा री, कन्या भोली क्वारी

महाशून्य के साथ भावरे तेरी रची गयी।" (1)

(आगन के पार–द्वार)

किरण–बिद्ध समर्पण –

अज्ञेय की अपनी यह विशेषता है किरण बिद्ध होने के अलावा उनमें समर्पण की उद्दाम लालसा है मानो पार्थिव इच्छाओ का अपार्थिव उदात्तीकरण हुआ है –

1, धर्मयुग 1 फरवरी 1970 पृष्ठ 20, 21

यह दीप अकेला स्नेह भरा

है गर्व भरा मदमाता पर

इसकी भी पक्ति को दे दो,

मै अपने ही नही तुम्हारे भी सलीब का वाहक हूँ

जीवन निसग समर्पण है

जीवन का

एक यही तो सत्य है। (1)

<u>पाकदामन रहस्यवाद</u> –

अकुरित धरा से क्षमा

व्योम से झरी रूपहली करूणा

यह दृष्टि सन् 1 20, 1 30 मे भी मिथ्या थी आज भी है। अन्तर यह है कि सन् 1 20, 1 30 की रहस्यवादी दृष्टि सामाजिक यथार्थ से हमेशा कतराती नही थी। पुरानी कविता मे सघर्ष की कठोरता और सामाजिक तथा व्यक्तिगत पीडा की तीव्र अनुभूति भी है। इसके विपरीत अज्ञेय का रहस्यवाद बहुत ही सुरक्षित किस्म का रहस्यवाद है वह जिन्दगी की धूल धक्कड से दूर रहता है, वह पकज सा पक मे दामन पाक रखता है। (2)

इस प्रकार पत्र–पत्रिकाओ मे आलोचना विधा पर बहुत कार्य हुआ है। इन पत्रिकाओ के माध्यम से नए–नए आलोचक सामने आए और उनकी मान्यताए स्थापित हुई।

1,2, धर्मयुग 1 फरवरी 1970 पृष्ठ 21, 52

लेख – लेख निबन्ध जैसी विधा है, किन्तु उसे स्वतत्र पत्रकारिता की एक प्रभावी विधा । आज पत्रकारिता बिना लेख के अधूरी है, साहित्य मे अब इसका व्यापक प्रयोग होने लगा है, लेख की महत्वपूर्ण विशेषता है कि यह व्यक्तिनिष्ठ न होकर वस्तु निष्ठ विधा है। इस पर लेखक का व्यक्तित्व प्रभावी नही होने पाता। लेख का एक उदाहरण –

लेख – **छायावाद के बाद**

– विश्वनाथ त्रिपाठी –

छायावाद का प्रारभ मे विरोध हुआ था यह कोई अनहोनी बात नही थी। नई प्रवृति का विरोध प्राय होता ही है। लेकिन छायावाद का विरोध उसके स्थापित होने और अपना उत्कर्ष प्रकट कर देने के बाद भी हुआ। आचार्य शुक्ल को छायावाद का विरोधी कहा जाता है। वह विरोधी थे तो, प्रारम्भिक दौर के विरोधी, अतिम दौर के विरोधी आलोचक देवराज ने 'छायावाद का पतन' लिखा। नामवर सिह ने 'कविता के नए प्रतिमान' मे छायावाद मे पर्याप्त भावुकता पाई। यद्यपि वह पहले 'छायावाद' मे इस काव्य का वैभव विश्लेषण कर चुके थे।

प्रगतिशील कवियो ने प्रकृति विशेषत ग्रामीण प्रकृति के अनुपम चित्र खीचे, इसीलिए उनकी कविताओ मे इन्द्रिय बोध की सजगता है। उन्होने तद्भव पदावली का उपयोग किया, वाक्य गठन ठीक रखा। अत हिदी भाषी की प्रकृति उनके यहा सुरक्षित रही। उन्होने लोक प्रचलित तथ्यो, छदो, काव्यरूपो का सर्वाधिक उपयोग किया। भवानी प्रसाद मिश्र इस विषय मे अग्रगण्य हैं। (1)

रघुवीर सहाय ने पत्रकारिता का काव्य रचना मे भरपूर उपयोग किया है।

---

1 आजकल स्वर्ण जयती अक 1994 – पृष्ठ 4,7,9

उन्होने सवेदना हीनता के अनेक रूप चित्रित किए है। सवेदन–हीनता और पाखण्ड के इसी रूप ने उन्हे बहुत विचलित किया है। मूल्य–मृत परिवेश जो मृत्यु से कही अधिक दारूण है, जो उनकी परवर्ती कविता का मुख्य विषय है उनकी कविता की एक पक्ति है –

आज का पाठ है 'मृत्यु के साधारण तथ्य'।

अब हत्या, असामाजिक काम डके के चोट पर होते हैं, रामदास की हत्या, हमारे परिवेश की दहशत प्रगट करती है और सडक एक रपट–अपसंस्कृति का रक्तपायी चेहरा। (1)

स्वातत्र्योत्तर हिदी पत्रकारिता का स्वरूप के अन्तर्गत हिदी पत्रकारिता का स्वरूप कालगत, विषयगत और विभिन्न साहित्यिक विधाओं का विवेचन किया गया है। जिससे स्पष्ट होता है कि हिन्दी पत्रकारिता प्रत्येक क्षेत्र मे समृद्ध होती जा रही है। यह हिन्दी पत्रकारिता के लिए शुभ लक्षण है।

---

1 आजकल स्वर्ण जयंती अक 1994 – पृष्ठ 4,7,9

पत्रकारिता और भाषा का सम्बन्ध –

दैनिक समाचार पत्रो की भाषा के विविध रूप –

(1) राजनीतिक और सामाजिक समाचारो की भाषा

(2) खेल जगत के समाचारो की भाषा

(3) बाजार भाव समाचारो की भाषा

(4) सपादकीय लेख (पृष्ठ) की भाषा

(5) कार्टूनो की भाषा

(6) पाठको के पत्रो की भाषा

(7) साप्ताहिक विशेषाको की भाषा

(8) साहित्यिक खड की भाषा

(9) फिल्म जगत के समाचारो की भाषा

(10) लेखो (फीचर) की भाषा

(11) समीक्षा की भाषा

(12) साप्ताहिक भाविष्य की भाषा

समाचार पत्रों की भाषा की विशेषताएं–

(1) विशुद्धता पर बल

(2) जनोन्मुखता

(3) प्रयोगधर्मिता

(4) अनुदित भाषा

(5) शिथिल एव अव्यवस्थित भाषा

(6) विविध भाषा रूपो का प्रयोग

तृतीय अध्याय

पत्रकारिता और भाषा का सम्बन्ध –

दिन प्रतिदिन प्रभावी होते जा रहे इलेक्ट्रानिक मीडिया के महत्व को देखते हुए कहा जा सकता है अनेक जीवन्त तस्वीरो के बावजूद बिना शब्द के सम्प्रेषण प्रभावी नही हो सकता, और यह सम्प्रेषण संभव है भाषा के द्वारा। पत्रकारिता और भाषा के सम्बन्ध मे विचार करने पर यह कहा जा सकता है कि पत्रकारिता और भाषा एक सिक्के के दो पहलू हैं। दूसरे शब्दों मे कहा जाए तो भाषा प्राण है और पत्रकारिता उसका आवरण। पत्रकारिता के सम्बध मे चर्चा करते समय मुख्यत दैनिक समाचार पत्रों की भाषा की ओर ध्यान जाता है। मैथ्यू आर्नल्डो ने 'पत्रकारिता को शीघ्रता मे लिखा जाने वाला साहित्य की सज्ञा दी है। पत्रकारिता के स्वरूप और महत्व को रखाकित करते हुए डा0 रमेश जैन अपनी पुस्तक 'हिदी पत्रकारिता का आलोचनात्मक इतिहास' मे लिखते है – "दैनिक जीवन मे घटने वाली घटनाओ को शीघ्रता से जनता के समक्ष लाना ही पत्रकारिता है। यह एक ऐसा विविधतापूर्ण कर्म है। जिसके अन्तर्गत जीवन की छोटी से छोटी, बडी से बडी स्थितियो का समायोजन होता है। व्यक्ति, समाज, देश राष्ट्र के सामाजिक सदर्भो और बहुविध परिवेश की कहानी ही पत्रकारिता हैं।"

जेम्स मैक्डोनल्ड तो पत्रकारिता को रणभूमि से भी कुछ अधिक बडी चीज समझते है। वे इसे पेशा नही, पेशे से भी कोई ऊची चीज मानते है जो कि वास्तव मे जीवन है।

पत्रकारिता की भाषा पर विचार करने पर यह स्पष्ट होता है कि समाचार पत्र एक साथ प्रोफेसर और मजदूर, दुकानदार क्लर्क जैसे विशेष और आम जनता को सम्बोधित होते हैं। उनका उद्देश्य होता है समाचार को सबके लिए सम्प्रेषित करना। अत ऐसी स्थिति मे समाचार पत्र की भाषा वैसी नही हो सकती, जैसी एक साहित्यकार की, और वैसी भाषा भी उचित नही होती जैसी सब्जी मडी या मछली बाजार की। समाचार पत्र का क्षेत्र बहुत विशाल होता है, इसलिए उसकी भाषा का विस्तार भी बहुत बडा होता है। एक ही समाचार पत्र के अलग-अलग पृष्ठो की भाषा मे बहुत अन्तर होता है। समाचार पत्र के मुखपृष्ठ की भाषा मानक होती है। स्थानीय समाचार का पृष्ठ स्थानीयता का पुट लिए होता है। जनपदीय समाचारो के पृष्ठ मे भाषा सम्बन्धी त्रुटिया इतनी होती है कि उनका अच्छा खासा सग्रह तैयार किया जा सकता है। सपादकीय कुछ-कुछ साहित्यिकता और वैचारिक गरिमा से युक्त होता है। खेल समाचार और बाजार भाव की भाषा अपनी अलग छटा बिखेरती दिखायी देती है। एक ही समाचार पत्र मे इतनी भाषायी विविधता दिखाई पडती है। इसके अतिरिक्त समाचार पत्र के प्रकाशन स्थान का प्रभाव भी भाषा पर दिखाई पडता है। मेरठ आगरा से प्रकाशित होने वाले हिदी समाचार पर खडी बोली (कौरवी) और ब्रजभाषा का रग दिखाई पडता है। वही बिहार (पटना) से प्रकाशित समाचार पत्र पर भोजपुरी, मैथिली, मगही का प्रभाव देखा जा सकता है। राजस्थान से प्रकाशित समाचार पत्रो मे मारवाडी, राजस्थानी आदि क्षेत्रीय बोलियो का असर दिखाई देता है। इतनी विविधताओ के बावजूद हिंदी समाचार पत्रो के प्रभाव मे कोई कमी नही आई है। 'नवभारत टाइम्स', 'हिदुस्तान', 'जनसत्ता' जैसे समाचार पत्र राष्ट्रीय समाचार पत्र के रूप मे अपनी पहचान बनाने मे सफल रहे है। समाज का प्रबुद्ध वर्ग इन समाचार पत्रो को एक दिन विलम्ब से भी पढने को उत्सुक रहता है।

समाचार पत्रो मे प्रकाशित समाचारो की प्रकृति के आधार पर भाषा का वर्गीकरण निम्न प्रकार किया जा रहा है –

1 राजनीतिक और सामाजिक समाचारो की भाषा।

2 खेल जगत के समाचारो की भाषा।

3 बाजार भाव समाचारो की भाषा।

4 सपादकीय लेख (पृष्ठ) की भाषा।

5 कार्टूनो की भाषा।

6 पाठको के पत्रो की भाषा ।

7 साप्ताहिक विशेषाको की भाषा।

8 साहित्यिक खड की भाषा।

9 फिल्म जगत के समाचारो की भाषा।

10 लेखो (फीचर) की भाषा।

11 समीक्षा की भाषा।

12 साप्ताहिक भविष्यफल की भाषा।

(1) **<u>राजनीतिक और सामाजिक समाचारों की भाषा</u>** –

समाचार पत्रो के मुखपृष्ठ के समाचार मुख्यत समाचार एजेन्सियो अथवा वरिष्ठ सवाददाताओ द्वारा प्रेषित होते हैं। ये समाचार सामान्यत सभी प्रमुख समाचार पत्रो मे एक साथ प्रकाशित होते है जिससे इनका स्वरूप समान होता है। समाचारो की भाषा के स्वरूप का व्याकरणिक दृष्टि से विवेचन किया जा रहा है। (1)

---

1 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 22

व्याकरणिक दृष्टिकोण –

(क) **शब्द** –

समाचार पत्रो मे राजनीतिक सामाजिक समाचारों की भाषा मे प्रयुक्त भाषा के शब्दो को निम्न वर्गो मे विभाजित किया जा सकता है –

1 **तत्सम शब्द** – (1)

प्राथमिक, ग्राम, मृत, गृहणी, निर्मित, सत्र अधिवेशन, परिसर, पुनर्गठन निष्कासित, जघन्य, निलम्बन, अन्त्येष्टि, प्रतिष्ठा, पूर्वागृह, समन्वय, सूत्रीय, निषेधाज्ञा, ज्ञात, प्रोत्साहन, प्रिय, विलम्ब, प्रशासन, प्रवक्ता, आश्रय, सम्पूर्ण, भस्म, हतप्रभ, कुठाराघात, आदेश, उत्तरदायित्व, नियोजन, साम्प्रदायिक, विश्लेषण, ज्ञान, सशस्त्र, बल, विद्युत, उपकरण, उद्योग, उन्माद, परिश्रम, परिवार, कल्याण आदि।

2 **अंग्रेजी शब्द** – (2)

रिपोर्ट, सिनेमा, फोन, गेस्ट हाउस, बम आपरेशन, स्पीड, गेट कीपर, गैस सिलेडर, क्लब, मेडिकल, स्टाफ, प्राइवेट, ट्रेन, फायर, बेल्ट, स्काउट, सप्लाई, फैक्टरी, ट्रक, लाइट, रैली, अपील, एडमीशन, एडवास, मार्च, बजट, रेडियो, लाच, मोपेड, बाइक, चेन, लाइट, वर्कशाप, फार्म, जज, केस, ड्राइवर, कार, ऐरोप्लेन, पायलट, पुलिस, फोर्स, यूनियन, नर्स, डाक्टर, बोनस, वार्निंग, कंपनी, केस, चालान, प्रेस, लाइसेस, नोटिस, बैंक, लेटर बाक्स, आपरेटर आदि।

3 **अरबी फारसी शब्द** –

मुहिम, दर्ज, कारोबार, कब्जा, बरामद, खातिर, तवज्जो हाकिम, दहेज,

---

1,2 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 22

मदद तहत, बदनाम, बेकार, बकायदा, इन्तजार, बेइन्तहा, अजीब, सुलूक आदि।

4 **सन्धि, समाज युक्त शब्द –** (1)

समाचार पत्रो मे अद्यतन स्थिति को व्यक्त करने के लिए सन्धि समास युक्त शब्दो के प्रयोग मे वृद्धि हुई है,।

उदाहरण – परगनाधिकारी, तहसीलदार, जिलाधिकारी, अध्यादेश, समागम, यातायात, कक्ष–निरीक्षक, स्थगनादेश, अन्त्येष्टि, चिकित्सालय, पुस्तकालय, विद्यालय, बलात्कार, परोपकार आदि।

5 **प्रत्यय/उपसर्ग द्वारा नये शब्दों का निर्माण :–** (2)

समाचारो मे नवीनता और आकर्षण उत्पन्न करने के लिए प्रत्यय और उपसर्ग द्वारा नये शब्दो के निर्माण की प्रवृति दिखाई पडती है।

उदाहरण – अतिक्रमण, स्थानीय, प्रतिकार, प्रशिक्षण, नियोजन, अज्ञात, अनावश्यक, विक्षत, सब–स्टेशन, उप–सपादक, उपअधीक्षक, दर्शनीय, उल्लेखनीय, विभागीय, सम्मिलित, अधिग्रहण, अधिभार, प्रत्यारोपण, दुष्प्रयोजन, सामूहिक, कामुक, सशस्त्र, सामाजिक, राजनीतिक, अधिकृत, स्वायत्तता आदि।

6 **विशिष्ट शब्दावली :–** (3)

कुछ ऐसे शब्द जो केवल समाचार पत्रों मे ही प्रयुक्त होते हैं –

उदाहरण –

1 विशेष सवाददाता
2 यूनिवार्ता (UNI)
3 प्रेस ट्रस्ट (PTI)
4. गोली कांड
5 लाठी चार्ज
6 कर्फ्यू
7 निषेधाज्ञा (धारा 144)
8 अभियुक्त

1, 2, 3 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 25

9	निपटारा	10	दिनदहाडे
11	अधिवेशन	12	नाकेबन्दी
13	घेराव	14	ऑसू गैस
15	फरार	16	काड

9 **नवनिर्मित शब्द –** (1)

भाजपा : भाजपाई, सपा, माकपा, भाकपा, तदैव आदि।
राजनीतिक दलो के नाम से सक्षिप्तकरण की प्रवृत्ति बढी है।

फूट परस्त : " फूट परस्तो के खिलाफ कडे कदम जरूरी "

(हिदु0 29,12,83)

सुगबुगाहट " इन सवाददताओं को इस घपले की सुगसुगाहट पहले से थी।"

(जनसत्ता 4 2.88)

खिलाड़ियत : " वे अभिनय की मिसाल हो सकते हैं, लेकिन देश भक्त और उस खिलाडियत के प्रतीक नही, जो दौडने के साथ जाती है ।" (2)

(जनसत्ता 26 2 88)

" खिलाडियत " नया शब्द है जो इसानियत के तर्ज पर निर्मित किया गया है।

10 **अंग्रेजी शब्दों का हिन्दी करण :**

कई ऐसे शब्द जिनका अग्रेजी मूल का हिन्दीकरण कर लिया गया है। उदाहरण – गोदाम, अस्पताल, बरामदा, अकादमी, त्रासदी, अल्टीमेटम आदि।

1,2, समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 27

11 **पर्याय शब्द**

1 जेल सुपरिटेंडेट, जेल अधीक्षक, जेलर। (1)

एक ही समाचार के लिए विभिन्न समाचार पत्रों में विभिन्न शब्दों का प्रयोग – (2)

नूतनता लाने तथा नकल करने के आरोप से बचने के लिए एक सूचना या समाचार के लिए विभिन्न समाचार पत्र अलग अलग शब्दावली का प्रयोग करते हैं यथा –

" शराब के नशे मे धुत इन लोगो ने अस्तबल के नौकर कृपाल सिह से शराब लाने को कहा "

(नवभारत टाइम्स 30 12 83)

" पुलिस का घुडसाल से घोडे ले जाने का विरोध "

(हिन्दुस्तान 30 12 83)

शीर्षक के आधार पर वर्गीकरण – (3)

समाचार पत्रो मे समाचार के महत्व को शीर्षक के आधार पर जाना जाता है सर्वाधिक महत्वपूर्ण समाचार को समाचार पत्र के मुख पृष्ठ पर प्रथम लीड दिया जाता है, समाचार पत्रो मे विभिन्न प्रकार के शीर्षको का प्रयोग किया जाता है।

1 प्रासगिक शीर्षक

1,2,3 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 30

2 मुख्य शीर्षक

3 गौण शीर्षक

4 मध्यस्थ शीर्षक

1 **प्रासंगिक शीर्षक (आमुख)** – (1)

प्रासगिक शीर्षक उसे कहते है जो मुख्य शीर्षक के ऊपर लिखा होता है और मूलत मुख्य शीर्षक की बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिए होता है – पुछ सीमा – (छोट अक्षरो मे)

" पाक सेना की गोला बारी " (बडे अक्षरो मे)
उपर्युक्त उदाहरण मे पुछ सीमा प्रासगिक या आमुख शीर्ष है।

2 **मुख्य शीर्षक :** (2)

ऐसे शीर्षक मे जहॉ ऊपर एक प्रासगिक शीर्षक छोटे अक्षरो मे हो और उसके बाद बहुत मोटे अक्षरो मे एक और शीर्षक हो वह मुख्य शीर्षक होता है इन दोनों शीर्षको के पश्चात माध्यम आकार के अक्षरो द्वारा मुद्रित, कभी–कभी नीचे एक ओर विवरण भी होता है –

" सयुक्त मोर्चे की अपील " (छोटे अक्षरो मे प्रासगिक शीर्षक)

" अकाली आन्दोलन छोडे, सरकार से बात चीत करे, (बडे अक्षरो मे यहॉ बडे अक्षरो वाला शीर्षक होता है। जिन समाचारों मे इस प्रकार के दो तीन शीर्षक न होकर सिर्फ एक शीर्षक होता है, वहॉ उसे ही मुख्य शीर्षक माना जायेगा।

1,2, समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 30,31

3. **गौण शीर्षक** : (1)

अधिकाश समाचार पत्रो मे देखने को मिलता है मुख्य शीर्षक के नीचे कुछ छोटे अक्षरो मे एक और शीर्षक दिया जाता है। जो मुख्य शीर्षक की बात को और अधिक स्पष्ट करता है उसे गौण शीर्षक कहते है –

" तमिल मसले पर राजनीतिक समझौता " (बडे अक्षरो मे)

" जी पार्थसारथी प्रस्ताव लेकर दिल्ली वापस " (छोटे अक्षरों मे)

दूसरा शीर्षक गौण शीर्षक कहलायेगा, क्यो कि यह मुख्य की बात को और स्पष्ट कर रहा है।

4 **मध्यस्थ शीर्षक** : (2)

कभी–कभी मुख्य शीर्षक के बाद तथा समाचार के उपर भी उपशीर्षक दे दिया जाता है। जिसे मध्यस्थ शीर्षक कहते है। यथा –

" पंजाब और चडीगढ अशात घोषित " (मुख्य शीर्षक) तथा

" बी0डी0 पाडे नये राज्यपाल" (मध्यस्थ शीर्षक)

शीर्षको के उपरोक्त विभाजन के अतिरिक्त शीर्षको के अन्य कई प्रकार है, जो इस प्रकार है – (3)

क आकर्षक शीर्षक (चरण सिह पर फिर राजनारायण के डोरे)

ख काव्यात्मक शीर्षक (बिन हिदी सब सूना)

ग व्यग्यात्मक शीर्षक (हिस्सा तो हमारा भी है मगर वरूण के लिए)

द नकारात्मक शीर्षक (रजनीश अदालत मे हाजिर नही हुआ)

ङ प्रश्नवाचक चिन्ह युक्त शीर्षक (आन्द्रोपोव बीमार है?)

च " . . " का प्रयोग (सिध मे पाक सेना मकानों को जला रही है. ..।)

1,2,3 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 34,35

छ मुहावरो का प्रयोग (उपाध्याय ने करोडो का चूना लगाया)

ज पूर्ण वाक्य युक्त शीर्षक (अकाली नेता पाण्डे से मिले)

झ विराम चिन्ह रहित शीर्षक (एशियाड फ्लैटो को खरीददार नही मिले)

ञ शीर्षक एक घटनाए अनेक (एक ही शीर्षक में कई समाचार)

वाक्य रचना – (1)

समाचार पत्रो की भाषा पर विचार करने के सदर्भ मे समाचारों की वाक्य सरचना पर विचार आवश्यक है। हिदी मे वाक्य रचना का एक निश्चित क्रम है जैसे –

कर्ता – कर्म – क्रिया

राम – खाना – खाता है।

साहित्यिक भाषा मे वाक्य रचना के इस क्रम का पूरा ध्यान रखा जाता है। जबकि पत्रकारिता मे अक्सर इस क्रम मे उलट फेर होता रहता है। समाचार पत्रो मे प्रयुक्त होने वाली भाषा मे वाक्य संरचना का वर्गीकरण इस प्रकार है –

1 **सरल वाक्य** – (2)

"लाल कुआ से चार वर्ष के बच्चे का अपहरण कर लिया गया।"

2 **संयुक्त और मिश्रित वाक्य** – (3)

"प्रतिनिधि मडल का नेतृत्व हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड (हाल) के अध्यक्ष एअर मार्शल एल एम कात्रे कर रहे है, और इसमें कई डिजाइन विशेषज्ञ और रक्षा वैज्ञानिक शामिल है।"

(नवभारत टाइम्स 2–7–84)

---

1 2,3, समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 34,35

3 **नकारात्मक वाक्य** – (1)

"दिल्ली प्रदेश भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष श्री प्रहलाद सिह ने दिल्ली प्रशासन और नगर निगम द्वारा दिल्ली देहात मे 'लाल डोरा' बढाने के बारे मे कोई ठोस कदम न उठाने पर गहरा क्षोभ व्यक्त किया है।"

(नवभारत टाइम्स 24–8–83)

4 **प्रश्नवाचक वाक्य** – (2)

"पजाब एव हरियाणा उच्च न्यायालय की खडपीठ ने लाला जगत नारायण हत्याकाड के एक अभियुक्त 'स्वर्ण सिह' को नोटिस जारी किया है, कि लुधियाना के जिला एव सत्र न्यायाधीश द्वारा बरी कर दिए जाने के विरूद्ध पजाब सरकार की अपील याचिका स्वीकार क्यो?" (हिंदु0 21–10–83)

5 **कर्ता विहीन वाक्य** – (3)

"रेलवे सूत्रो के अनुसार खारदी और आतगाव मे तोडफोड पाई गई. . गुजरने दिया गया।"

6 **अटपटी वाक्य रचना** – (4)

"जिसका योजना आयोग सहित सभी क्षेत्रो मे समर्थन किया गया है।"

(हिदु0 11–1–83)

मुहावरों का प्रयोग – (5)

"शाहदरा के दो सिनेमाघरो मे आज रात भीषण बम विस्फोट से सम्पूर्ण यमुनापार क्षेत्र 'हिल उठा'। (नव भा0 टा0 14–10–83)

1,2,3,4,5 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 35,36

अनुवादित भाषा –

समाचार पत्रो मे अनुवाद का अत्यधिक महत्व है यह अनुवाद मुख्यत दो रूपो मे होता है।

1 **पूर्ण अनुवाद** –

Pak Lıvıng ın Poonch

"पुंछ सीमा क्षेत्र (प्रा0 शीर्षक) पाक सेना की गोलाबारी" (1)

2 **छायानुवाद** –

इसमे विषय और भाषा की अपेक्षा के अनुरूप परिवर्तन कर दिया जाता है उदाहरण –

Valuable goods, Jwewellry and case to tallıng around Rs 5 lakh were stolen from the house of Mr B R Trehan New Rajınder Nagar, Yesterday The thefe es alecged to have been commıted by their two servants

(हिंदु0 टाइम्स 11–10–83)

अनुवाद –

गए थे विवाह की खुशी मे, लेकिन जब घर लौटे तो पूरा घर साफ सुथरा, लुटेरो ने पूरे घर मे एक भी चीज नही छोडी, लगभग 4 लाख रूपए मूल्य का सारा सामान लूट लिया गया। राजेन्द्र नगर के श्री बी0आर0 त्रेहन कल साय अपने परिवार के साथ पचशील एक्लेव में विवाह की दावत मे शामिल होने गए। लेकिन जब वह वापिस लौटे तो देखा कि चादी के आभूषण, टीवी, कैमरे, घडिया और अन्य सभी कीमती सामान गायब है। श्री त्रेहन की पुलिस रिपोर्ट

1, समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 38

के अनुसार गायब सामान के अलावा 75 हजार रूपए नगद भी ले गए हैं।(1)

हिंदी समाचार पत्र की भाषा व्यग्यात्मक है जबकि अग्रेजी पत्र की भाषा घटनात्मक है।

शैली – (2)

चयन –

शैली वैज्ञानिको के अनुसार चयन का अर्थ बहुत सी वस्तुओ मे से किसी एक वस्तु को चुनना है। यह चुनाव विषय क्षेत्र, सदर्भ आदि को ध्यान मे रखते हुए किया जाता है। एक शब्द के अनेक पर्यायवाचियो मे से किसी को यथस्थिति चुनना ही शब्द कहलाता है। सप्रेषणीयता को ध्यान मे रखते हुए शब्दो का चयन किया जाता है।

उदाहरण –

"जीत के गहमा गहमी मे इका सम्मेलन आज से"

(हिंदुस्तान 22–1–83)

"मासूम बच्ची के साथ चार युवकों द्वारा बलात्कार"

(हिंदुस्तान 22–10–83)

यहा 'गहमागहमी' और 'मासूम' शब्द समाचार की सप्रेषणयता मे वृद्धि करता है।

विचलन – (3)

भाषा वैज्ञानिको के अनुसार भाषा मे किसी परपरागत पथ को त्यागकर नए पथ पर चलना 'विचलन' है। यह विचलन शब्द, स्तर, वाक्य स्तर और पैराग्राफ स्तर तक होता है।

1,2,3, समाचार पत्रों की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 39,40

1 **शब्द विचलन** – (1)

"पजाब मे राष्ट्रपति राज लागू . .

(पजाब केसरी 19–11–83)

यहाँ शब्द विचलन हुआ है। राष्ट्रपति शासन के स्थान पर 'राष्ट्रपति राज' का प्रयोग किया गया है। राज्य या शासन के स्थान पर राज शब्द नवीनता उत्पन्न करता है।

2 **क्रम–विचलन** – (2)

"उद्घाटन 23 दिसम्बर को इदिरा जी द्वारा"

(हिन्दुस्तान 10–10–83)

3 **क्रिया–विचलन** – (3)

"घर मे बम रखे होने की खबर उडते ही समूचे इलाके में आतक फैल गया।"

4 **वाक्य विचलन** – (4)

" इस बात का प्रमाण यह है कि पॉच मीटर लबी रेल लाइन मे .. फिश प्लेट उखाड फेकी मिली।"

यहाँ पर वाक्य विचलन है। पूरा वाक्य ही मानक वाक्य सरचना से भिन्न है, किन्तु अभिव्यजना में सफल है।

चौकाऊं शैली –

समाचार पत्रो मे समाचार को प्रायः ऐसे ढग से प्रस्तुत किया जाता है जो

1,2,3,4 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 40,41

जानकारी से अधिक चौकाने वाले और चटपटे होते हैं जो समाचार को मनोरजन का विषय बना देती हैं।

उदाहरण – " बहू ने जेठ को चप्पलो से पीटा " (1)

(शीर्षक आज 23 4 88)

मथुरा राजाधिराज बाजार स्थित श्री द्वारिका धीश के मदिर के सामने आज सुबह एक अजीबो गरीब दृश्य उस समय उपस्थित हो गया, जब एक युवती ने अपनी जेठ को सरे आम बाजार मे चप्पलों से पिटाई कर दी, और जेठ हक्का बक्का होकर कुछ देर पिटता रहा। बाद में बाजार के लोगों ने महिला का हाथ पकड कर मुश्किल से उसे रोका। (2)

उपरोक्त समाचार चौकाने वाला होने के साथ साथ मनोरजक भी है, ऐसे समचारो को पढने की प्रवृत्ति आम जनता मे बढती जा रही है, समाचार पत्र ऐसी प्रवृति को बढावा देने के लिए ऐसे समाचारो को बढा–चढा कर प्रस्तुत करते है, किसी बालिका के साथ दुष्कर्म या किसी महिला का अपने प्रेमी के साथ भाग जाने, जैसी खबरो मे समचार पत्र कभी कभी सबधित व्यक्ति का नाम और पता प्रकाशित करते है, और यह भूल जाते हैं कि सम्बद्ध महिला और उसके परिवार पर क्या बीतेगी।

<u>मूलता उद्धत करने वाली शैली –</u>

समाचार पत्र समाचार मे प्रमाणिकता लाने के लिए सम्बद्ध व्यक्ति के कथन को ज्यो का त्यो उदभूत करने की प्रवृति बढती रही है। वही समाचार

1,2, समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 41, 42

अच्छा माना जाता है कि सवाददाता अपनी ओर से कम से कम कहे –
उदाहरण – जा सत्यानाशी को तौ तखता पलटनो है। (1)

(दैनिक जागरण 18.1188)

राष्ट्रीय मोर्चे की शैली मे भाग लेने आए गोकुल क्षेत्र के किसानों मे एक 80 वर्षीय हीरा सिह से जब जागरण प्रतिनिधि ने कहा " बाबा यह सत्यानाशी कौन है" तो वह वृद्ध बोला " का तुम्हे ना मालूम , कैसे अखबार वाले हो? वोई सत्यानाशी जो जहाज उडाहतो रहो और जा समय देश का डुबाय रहो है।"

इस समाचार मे 80 वर्षीय वृद्ध के कथन को ज्यो का त्यो उदधृत किया गया है।

समाचार को आकर्षक और पठनीय बनाने के लिए बाक्स के अन्दर लिखा जाता है।

देशज शब्दो का प्रयोग – (2)

समाचार पत्रों की भाषा को सरल एव सुबोध बनाने के लिए तथा आम जनता तक प्रेषित करने के लिए देशज शब्दो का प्रयोग किया जाता है
उदाहरण –
" बहनोई की चाकू घोप कर हत्या "

(नव0 भारत टा0 7 10.88)

घोंपना एक देशज शब्द है, जो कि हिन्दीभाषी क्षेत्रो में अक्सर बोला जाता है।

1,2, समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 41, 42

अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी –

हिन्दी एक सक्षम भाषा होते हुए भी समाचार लेखक पर अग्रेजी का प्रभाव दिखाई देता है, हिन्दी के प्रचलित शब्दो के होते हुए भी अग्रेजी शब्दो का प्रयोग इस प्रभाव का सूचक है।

उदाहरण –

"आज सुबह स्थानीय शेरगज मुहल्ले मे बैलून के गैस–सिलेडर के अचानक फटने से बैलून विक्रेता की घटनास्थल पर ही मृत्यू हो गई तथा बच्चे सहित 10 अन्य लोग घायल हो गये। (1)

(नव0 भा0टा0 1 10.83)

इस समाचार मे गैस सिलेडर शब्द के साथ गुब्बारे के स्थान पर बैलून का प्रयोग अग्रेजी प्रभाव का सूचक है।

" मनोज कुमार ने अनेक नये कलाकारो को अपनी फिल्म मे चास दिया। लेकिन अपने बेटे को स्टार नही बना पाया, अब मनोज कुमार बडे बैनर मे अपने बेटे को हीरो बनाने का प्रयास कर रहा है। (2)

(पजाब केशरी 30 12.83)

इस उदाहरण मे रेखाकित शब्द स्टार, बैनर, हीरो, आदि शब्द वाक्य की अभिव्याक्ति क्षमता मे वृद्धि कर रहे हैं।

अशुद्धियॉ –

समाचार पत्रो की भाषा मे विभिन्न स्तरो पर अशुद्धियॉ भी पाई जाती है, जो इस प्रकार है –

1,2 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 42,43

अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी –

हिन्दी एक सक्षम भाषा होते हुए भी समाचार लेखक पर अग्रेजी का प्रभाव दिखाई देता है, हिन्दी के प्रचलित शब्दो के होते हुए भी अग्रेजी शब्दों का प्रयोग इस प्रभाव का सूचक है।

उदाहरण –

"आज सुबह स्थानीय शेरगज मुहल्ले मे बैलून के गैस–सिलेडर के अचानक फटने से बैलून विक्रेता की घटनास्थल पर ही मृत्यू हो गई तथा बच्चे सहित 10 अन्य लोग घायल हो गये। (1)

(नव० भा०टा० 1 10 83)

इस समाचार मे गैस सिलेडर शब्द के साथ गुब्बारे के स्थान पर बैलून का प्रयोग अग्रेजी प्रभाव का सूचक है।

" मनोज कुमार ने अनेक नये कलाकारो को अपनी फिल्म मे चास दिया। लेकिन अपने बेटे को स्टार नही बना पाया, अब मनोज कुमार बडे बैनर मे अपने बेटे को हीरो बनाने का प्रयास कर रहा है। (2)

(पजाब केशरी 30 12 83)

इस उदाहरण मे रेखाकित शब्द स्टार, बैनर, हीरो, आदि शब्द वाक्य की अभिव्याक्ति क्षमता मे वृद्धि कर रहे हैं।

अशुद्धियॉ –

समाचार पत्रो की भाषा मे विभिन्न स्तरो पर अशुद्धियॉ भी पाई जाती है, जो इस प्रकार है –

1,2 समाचार पत्रो की भाषा डा० माणिक मृगेश पृष्ठ 42,43

घटनाओ शब्द के बाद " ' " होना चाहिए।

(ङ) <u>वर्तनी सम्बन्धी दोष</u> – (1)

अनुनासिक के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग यथा –

इण्टर – इटर

चन्द – चद

बम्बई – बबई

टाइप की सुविधा के कारण "ँ " के स्थान पर " " का ही प्रयोग हो रहा है।

मॉग के स्थान पर माग (हिदु0 21.10 83)

महिलाएँ के स्थान पर महिलाए (हिदु0 12 10 83)

ई के स्थान पर यी का प्रयोग

नयी दिल्ली ट न न व0भा0टा0 10 11 83)

" ख के स्थान पर "र व" का प्रयोग

एक ही शब्द के लिए भिन्न वर्तनी का प्रयोग जैसे दुख दु ख।

<u>विशिष्ट लेखन पद्धति –</u> (2)

1 उद्धहरण चिन्ह " " का प्रयोग –

खुमैनी विरोधी छात्रो ने अशोक होटल स्थित स्यर लाइस के कार्यालय पर आज "कब्जा" कर लिया है।

(नव0भा0टा0 8.11 83)

2 <u>संक्षिप्तीकरण –</u> (3)

रासुका – राष्ट्रीय सुरक्षा कानून

1,2,3, समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 44, 45

आसुका – आतरिक सुरक्षा कानून

कबीना – कैबीनेट मत्री

भाजपा – भारतीय जनता पार्टी।

3. **वैकल्पिक शब्द अर्थ ( ) में देने की पद्धति** (1)

मिसाइल्स (प्रक्षेपास्त्र) (नव0भा0टा0 22 10 83)

4 **शब्द और अंक साथ–साथ देने की पद्धति –** (2)

" रेलगाडी में कुल सत्रह (17) डिब्बे थे।"

हिन्दी समाचार पत्रो के राजनीतिक सामाजिक समाचारो की भाषा मे इतनी अधिक विविधता आती जा रही है कि चयन मे समस्या उत्पन्न हो जाती है, निष्कर्षत कहा जा सकता है कि कुछ कर्मियों के बावजूद हिन्दी समाचार पत्रो की भाषा मे समृद्धि आती जा रही है।

1,2, समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 45, 46

(2) **खेल जगत के समाचारों की भाषा –**

समाचार पत्रो मे खेलजगत से सम्बन्धित विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग किया जाता है, जिसका विवेचन निम्न प्रकार है –

व्याकरणिक पक्ष – (1)

	शब्द/शब्द बंध	अर्थ	संबधित खेल
1	सुधरे हुए	श्रेष्ठ	क्रिकेट (हि0 21 2 81)
2	परास्त करना	आउट करना	क्रिकेट (हि0 24 2 81)
3	हलचले	प्रयत्न	हाकी (नव0 5.2 81)
4	भेदी	लक्ष्य भेदना	हाकी (नव0 5 2.81)

(क) **सादृश्य के आधार पर –** (2)

जलपान के आधार पर " चायपान" (हि0 10 2 81)

(ख) **प्रत्यय की सहायता से निर्मित शब्द**

जमीन	–	जमीनी	(नव0 4 1 81)
धावक	–	धावकीय	(अमर उजाला 21 9 88)
शतक	–	शतकीय	(नव0 10.02.81)

(ग) **संस्कृत शब्दावली –** (3)

वर्चस्व	(नव0 28.1 81)
अवश्यभावी	(नव0 10.3 81)
सवर्ग	(हि0 7 1 81)
ग्राळयता मानदड	(नव0 4 2 81)

1,2,3 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 46,47

अंग्रेजी शब्द के हिन्दी रूप – (1)

हिन्दी	अंग्रेजी	
तरणताल	स्वीमिग पूल	(नव0 26 1 81)
मानद	आनरेरी	(नव0 25 2.81)
परिपत्र	सर्कुलर	
स्वर्णपदक	गोल्ड–मेडल	(अमर उ0 21 9 88)
वार्तालाप	कनवर्शेशन	(अमर उ0 21 9 99)

अरबी फारसी शब्दावली – (2)

हैसियत	(नव0 14 2 81)
कायम	(नव0 25 1 81)
इस्तेमाल	(नव0 8 2 81)
बुलन्दी	(नव0 12.2 81)
इत्तिफाक	(नव0 27 1 81)
खैर	(अमर उ0 20 9.88)
खिताब	(अमर उ0 20 9.88)

विश्लेषण – प्रयोग (3)

हिन्दी के कुछ विशेषण ऐसे है, जो सटीक होने के साथ साथ सजीव भी है उदाहरण –

" तूफानी" गेदबाजी" (नव0 भा0 18.2.81)

"बुरी तरह परास्त किया" (नव0 भा0 21 9 81)

1,2,3 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 47,48

<u>सैन्य क्षेत्र से विशेषण का एक उदाहरण –</u>

" शुक्ल के आने से पूर्व रणजी चैपियन दिल्ली के सभी " तोप" खिलाडी लौट चुके थे।"

<u>अंग्रेजी से अनुदित विशेषण –</u> (1)

" वैल्यूएबल पार्टनरशिप के लिए 'बहुमूल्य साझेदारी'।

(नव0 भा0 28 1 81)

<u>क्रिया प्रयोग –</u> (2)

खेल समाचारो की भाषा मे प्रयुक्त होने वाली क्रियाओ का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है –

(1) **अंग्रेजी से अनुवाद –**

"———सस्ते मे निपट गऐ" (नव0 20 2.81)

(2) **मुहावरों का प्रयोग** –(3)

" स्थिति पतली हो गयी थी " (हिन्दु0 18 2 81)

" पासा पलटा" (हिन्दु0 18 2 81)

(3) **विचलन –** (4)

" न्यूजलीड" 100 रन पर निपटा।" (हिन्दु0 28 1 81)

"———— जे सी टी ने मोहन बागान को बुरी तरह उधेड डाला।'

(नव0 2 1 81)

1,2,3,4 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 48,49

4 **चयन –** (1)

क्रया के स्तर पर चयन भी खेल समाचारो मे होता हैं।

" चयन " मे दो नाम ल खत हैं –

क. **प्रभावशाली** – (2)

"—————दबाब बनाकर वह बागान के क्षेत्र में " मडराते" रहे।"

घूमने शब्द के स्थान पर मडराते' का प्रयोग अ धक प्रभावशाली हैं।

ख. **चित्रात्मकता** – (3)

भाषा के द्वारा खेल को आखो के सामने प्रस्तुत करने की शैली ' चत्रात्मक' कही जाती हैं, उदाहरण –

'—————— हल की ग ल्लयॉ क पल ने उडा दी। (नव0 5 2 81)

यहॉ 'गिरा दी' के स्थान पर उडा दी शब्द का प्रयोग दृश्यात्मकता उत्पन्न करने मे 'सफल है।'

क्रिया प्रकार – (4)

खेल समाचारो मे मूल और यौगिक क्रियाओ का प्रयोग किया जाता है।

(क) **नाभिक क्रिया** –

इस क्रिया का प्रयोग भाषा को सटीक बनाने के लिए किया जाता है, उदाहरण – "—————जफर इकबाल' ने शानदार हमला बोला, जिसे पंजाब के गोलची " लाल सिह" ने लतिया दिया।"

(हिन्दु0 18 3 81)

1,2,3,4 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 49, 50

(ख) संयुक्त क्रिया – (1)

" मलेशिया की अग्रिम पक्ति के फर्राटिया आक्रामक बढावो के आगे वेल्स की टीम एकदम उखड गई ।"

(हिन्दु0 13 1.81)

वाक्य रचना –

विशिष्ट वाक्य रचना – (2)

खेल समाचारो मे कभी–कभी ऐसा वाक्य प्रयोग मे दिखाई देता है। जिसमे न कोई मुहावरा होता है न लोकोक्ति, और न काव्यात्मकता, फिर भी भाषा आकर्षक होती है, भाषा का यह विशिष्ट प्रयोग कई रूपो मे दिखाई पडता है।

(क) सामान्य भाषा में विशिष्ट प्रयोग – (3)

"————— पाकिस्तान का मौसम इतना शीतल नही कि दिलो –दिमाग से कुछ सोचा जा सकें ————।"

(दै0 जा0 3.10 88)

"————— यग फेडस क्लब छुपे रूस्तम " अब्दुल हकीम" ने शीर्षस्थ " विक्रम"—————" ?

(हिन्दु0 17 1 81)

(ख)विलोम (वक्रोक्ति) प्रयोग से चमत्कार –

" खलीफाओं की फिसडडी बल्लेबाजी से भारत हारा।"

यहॉ खलीफा (नेता, अग्रणी) शब्द के साथ फिसड्डी शब्द से वक्रोक्ति द्वारा

1,2,3, समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 50,51

चमत्कार उत्पन्न किया गया है। (हिन्दु0 26 10 88)

विशिष्ट प्रयोग में द्वैध –

समाचार को आकर्षक बनाने के प्रयास मे सवाददता कभी कभी ऐसे शब्दो का प्रयोग कर बैठते हैं, जो सटीक अर्थ देने में सक्षम नही होता। उदाहरण –

"————मानस भट्टाचार्य करीब से गोल भेदने मे भूल–चूक कर गये।"(1)

(हिन्दु0 8 1 88)

इस वाक्य मे भूल–चूक शब्दो का प्रयोग है जब कि दोनो का अर्थ एक ही है।

अस्पष्ट वाक्य –

" बिहार ने सातवे मिनट मे रीता क्लू से गोल मार के अपना खाता खोला था, जिसे समाचार मे ही गोवा ने बराबर कर दिया।" (2)

मुहावरों का प्रयोग – (3)

"चिरदीप ने अपने प्रतिद्वन्दी राजीव बतरा को 6–5, 6–4, से हराने मे ऐड़ी चोटी का जोर लगा दिया।

" ————गार्नर ने इग्लैण्ड के बल्लेबाली की स्थिति "आयाराम –गयाराम" की सी कर दी।"।

भाषा गत वैशिष्ट्रय –

खेलो की भाषा मे धारा प्रवाह का गुण उसकी पठनीयता मे वृद्धि करती है, भाषा को धारा प्रवाह बनाने के लिए अग्रेजी, सस्कृत, अरबी, फारसी, के

1,2,3, समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 51,52

शब्दो का प्रयोग नि सकोच प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण –

" विश्वनाथ ने विश्व भर के बल्लेबाजो का रूप दिखाया, उसने हर तरह की शाटो का इस्तेमाल कर गेद बाजो को व्यस्त रखा।"

काव्यात्मकता – (1)

"————————अमृतराज ने बदूक की गोली की तरह दनदनाते शाट से उसे मुँह मे पहुँचा, बढत को शून्य कर दिया।"

(हिन्दु0 1.1.81)

शैलीय पक्ष – (2)

चयन –

" दिल्ली ने राष्ट्रीय हाकी चैम्पियन शिप मे अपना अभियान वर्ग के पहले मैच मे गुजरात को 10–10 से रौंदकर, धूम धाम से शुरू किया।"

(हिन्दु0 9.3.81)

वाक्य – (3)

सरल वाक्य–

" गुरू नानक देव विश्वविद्यालय का अमरजीत सिंह उपकप्तान नियुक्त किया गया है।"

(नव0 30 1 81)

संयुक्त वाक्य – (4)

" यह सही था कि भारत के निचले क्रम के बल्लेबाजों पर मानसिक दबाब काफी बढ गया था, और आस्ट्रेलिया के क्षेत्ररक्षक बल्लेबाजों को ऐसे घेरे हुये थे मानो वे पिच पर ही खडा रहना चाहते हैं, इस हाल से भारतीय बल्लेबाज काफी सहम गये थे,।" (नव0 30.1.81)

1,2,3,4 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 52, 53

विचलन – (1)

" भारत की करारी हार।"

(नव0 11 1 81)

यहॉ करारी शब्द अभिव्यजना मे वृद्धि कर रहा है।

" इन चार महारथियो को आउट करने के ब्राद भी पाटिल व आजाद———।"

(नव0 23 2 81)

अग्रेजी मिश्रित हिन्दी – (2)

हिन्दी के खेल समाचारो की भाषा मे अग्रेजी शब्दो का प्रयोग अत्याधिक मात्रा मे किया जाता है। इस एक कारण यह भी है, खेलो की तकनीकी शब्दावली अधिकाशत अग्रेजी मे है।

उदाहरण –

" उसके खेल मे भले ही स्टाइल का अभाव हो।

(नव0 14 12 80)

" गोल मुहाने पर हर ब्रार उसके फारवर्ड लडखडा गऐ। "

(हिन्दु0 13 3 81)

वर्तनी – (3)

खेल समाचारो मे वर्तनी सम्बधी त्रुटियॉ अक्सर देखने को मिलती है, इनमे मुख्य इस प्रकार है –

(1) अनुनासिक के स्थान पर अनुस्वार

" ————क्यो कि वहॉ की पिच स्थित गेद ब्राजी की सहायता करती है।"

(नव0 28 1 81)

1,2,3,4 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 53, 54

उच्चारण के आधार पर लेखन – (1)

जूलियन कीनर (14) व गैरी वाटस (16) ने मिलकर 35 को गाडी खेच ली थी।

देशज शब्दों का प्रयोग – (2)

" ओलपिक हाकी के इतिहास मे "

स्वर्ण ने पॉचवी बार भारतीय उपमहाद्वीप को धता बताई ।"

(अमर उ0 2.10 88)

" आगरा की महिला खिलाडी छाई रही, पुरूष फिसड्डी

(दै0 जा0 7 10.88)

मुहावरों का प्रयोग – (3)

" एक माह पहले तक कनाडा की 'ऑख का तारा' विश्व चैपियन 'बन जानसन' आजकल पुलिस थाने मे जूतियॉ चटका रहा है।"

(अमर उ0 13 10 88)

"———— ओलपिक स्वर्ण पदक छिन जाने के बाद बेन जानसन अब कनाडा के लोागे की "ऑख की किरकिरी' बन गया है ।"

प्रयोगात्मक शैली – (4)

समाचार लेखन की साधारण शैली यह है कि पहले समाचार का सदर्भ और बाद मे विवरण दिया जाता है लेकिन निम्न समाचार इसका ठीक उलटा किया गया है –

1,2,3,4 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 54,55

शीर्षक – " जानसन एक और झमेले मे फसा"

" ज्ञातब्य है कि जानसन से सिओल ओलपिक खेलो की सौ मीटर की दौड का स्वर्ण पदक इस लिए छिन गया था कि मेडिकल जॉच के बाद उसके मूत्र मे कुछ ऐसे पदार्थ पाये गये, जो अन्तर्राष्ट्रीय ओलपिक समिति द्वारा प्रतिबधित है।"

(अमर उ0 13 10 88)

हिन्दी समाचार पत्रो के खेल समाचारों मे प्रयुक्त भाषा के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि हिन्दी भाषा मे नित नूतन प्रयोग हो रहे है, जो हिन्दी भाषा को सृमृद्धि प्रदान कर रहे हैं।

बाजार भाव के समाचारों की भाषा –

व्याकरणिक पक्ष – ( )

हिन्दी दैनिक समाचार पत्रो मे बाजार भाव के समाचारो की भाषा रोचक, गूढ और चौकाने वाली होती है, वस्तुओ के मूल्य बढने, घटने और स्थिर रहने के लिए ऐसे शब्दो का प्रयोग होता है, जिसका सामान्य बोलचाल या लेखन मे बिलकुल ही प्रयोग नही होता है। बाजार भाव के समाचारो की भाषा मे प्रयुक्त होने वाले महत्वपूर्ण शब्द इस प्रकार है –

शब्द –

(क) **मूल्य बढ़ने के लिए** – (2)

मजबूती, तेजी, उछाल।

(ख) **मूल्य घटने के लिए** – (3)

खिसकना, लुढकना, गिरना, टूटना।

(ग) **मूल्यों के स्थिर रहने के लिए** – (4)

सुस्त पडना, अपरिवर्तित ।

विशिष्ट अर्थो में प्रयुक्त होने वाले सामान्य शब्द –

सुर्खी, बेहतर, लाभ, गरमी, अनुकूल, तेज, बढना, जुडना, मुलायमी, टूटना, शिथिलता, उतरना, घटना, विपरीत, निकलना, हानि, कमजोर, गिरना, थमना, डटना, नीरस, टिकटिकाव, दबाब, भावना आदि।

1,2,3,4 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 55,56

प्रत्यय द्वारा निर्मित शब्द – ( )

ग्राहक – ग्राहकी

बाजारी – बाजारी

बेच – बेचू

वे शब्द जो सामान्य बोलचाल में प्रयुक्त नहीं होते – (2)

बिकवाल – बिकवाली

लिवाल – लिवाली

तेज – तेजडिए

मदे – मदडिए

संस्कृत शब्दावली – (3)

दैनिक, साप्ताहिक, सप्ताहान्त, नवीनतम, पूर्ववर्ती, मध्यवर्ती, नगण्य, प्रावधान, उपभोक्ता, पूॅजी, निवेश, अल्पकालिक, मुद्रा, बाजार, विनियोजन, अवमूल्यन, लाभांश, आयात, निर्यात, मुद्रास्फीति, सूचकाक, विनिमय।

क्रिया प्रयोग –

मूल–यौगिक – (4)

बाजार भाव की भाषा मे मूल व यौगिक दोनो क्रियाओ का किया जाता है

उदाहरण –

"———— दर पर खरीद किए जाने के समाचार थे।"

(हिंदु0 11281)

नाभिक क्रिया का प्रयोग भाषा को विशिट अभिव्यजना देने के लिए कियाजाता

1,2,3,4 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 56,57

है।

" आज चादी तेजाबी 2600/– रूपये के पार हो गयी।"

(नव0 20 3 81)

<u>संयुक्त – क्रिया</u> – (1)

"———— खाद्य तेलो मे तेजी चडकाई जा रही थी।"

(हिदु0 2 2 81)

" गन्ना खरीददार तेजी को हवा दे रहे हैं।"

(नव0 21 3 81)

" तेल सरसो 250–320 रूपये प्रति टीन पर टिका रहा।"

(अमर उ0 21 9 88)

गेहू मे गरमी " (अमर उ0 26 12 88)

"चने फिर सुस्त" (अमर उ0 26.12 88)

" सोडियम नाइट्राइट और टूटा" (अमर उ0 26 12 88)

" चॉदी भी 5 रू0 प्रति किलोग्राम की नरमी सहती रही।"

(नव0 16 3 81)

" भडकती तेजी आदि।" (नव0 8 4 88)

" उदड मूॅग, मसूर, आदि दालो के भाव पूर्व स्तर पर पडे रहे। क्यो कि व्यापारियो का ध्यान आजकल चने में लगा हुआ था।"

(अमर उ0 10 4 88)

<u>सर्राफा बाजार</u>– (2)

" न्यूयार्क के मदे समाचार के बावजूद चॉदी मे तेजडियो के तगडे से भाव मजबूत रहे——— सोना तस्कर आवक से 20 से 30 रू0 लुढक गया। चॉदी 999 टर्च 1632 रू0 प्रति किलो हो गई।" (नव0 12 5 88)

1,2, समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 57,58

शेयर मार्केट – (1)

" रोकड विभाग मे भी सक्रियता और मजबूती सामने आई, बिदल एग्रो व चुनिदा शेयरो को समर्थन मिला।"

(अमर उ0 12 9 88)

अंग्रेजी से अनुदित क्रियाए – (2)

"——— सचुरी स्पिनिग, जो दिन 672 रखा था———"

(नव0 1 3 81)

उपरोक्त अनुवाद मे वाक्य सटीक नही बन पाया है जो अनुवाद की बहुत बडी कमी है, अनुवाद मे सटीकता का ध्यान रखा जाना चाहिए।

शीर्षक – (3)

1 **क्रिया विहीन** –

" मिलो की लिवाली से चने मे और तेजी आई"।

2 **क्रिया सहित** –

" सप्लाई कमजोर होने से मूग व अन्य दालो के भाव बढे।"

(नव0 29 3 81)

विचलन – (4)

" पजाब मे बाढ के ताडव से गुड नाचने लगा ।"

(अमर उ0 3 10 88)

1,2,3,4 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 58,59

मुहावरों का प्रयोग – (1)

" सरसो मुँह के बल गिरी।" (नव0 10381)

" कपूर हवा मे उडा।" (अमर उ0 31088)

अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग – (2)

" यद्यपि कथित काला धन बाण्ड योजना की सभावित सफलता के केन्द्रीय बजट———— "। (नव0 26.181)

" कर्नाटक से सप्लाई स्थिति जटिल होने——— रिकार्ड तोड तेजी आई। " (नव0 26181)

" दिल्ली प्रशासन अधिकारियो की चेकिग से कारोबार घटने के कारण———" (नव0 17181)

हिन्दी वाक्य रचना पर अंग्रेजी प्रभाव – (3)

बाजार भाव की भाषा मे वाक्य स्तर पर अग्रेजी प्रभाव दिखाई देता है। निम्न वाक्य मे " अनुबन्ध को अन्तिम रूप देना" वाक्याश पर अग्रेजी प्रभाव है ।

उदाहरण –

भारत से 127 करोड रूपये की फीजिग और कास्टिग के सामान की खरीद के एक अनुबन्ध को अन्तिम रूप देने के लिए रूस का एक उच्च्य स्तरीय प्रतिनिधि मण्डल शीघ्र भारत आयेगा।

(नव0 8281)

1,2,3, समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 59,60

भाषागत वैशिष्ट्य –

1 **धारा प्रवाह भाषा** – (1)

" ———— गन्ने की सप्लाई पैराई करने की क्षमता से आधी ही मिल पाई है। "

(हिंदु0 1 3 81)

2 **काव्यात्मकता** – (2)

" वनस्पति के भाव पूर्ण स्तर पर सास लेते हैं । "

(हिंदु0 16.1 81)

" तेल बिनोला 1240 रू0 से उछल कर 1290 की चोटी पर।"

(नव0 16 2 81)

" चना दो तरफ उछल–कूद मचाता रहा।"

(हिंदु0 12 2 81)

शैली –

चयन–

(क) **शब्द चयन** – (3)

" ताबाड तोड – निकासी से दिल्ली शेयर बाजार मे ———— "

(नव0 10 11 81)

" वनस्पति घी के भावो मे भारी तेजी आई।"

(दै0 जा0 3.10.88)

" गुड के भाव खिसके।"

" चॉदी चढी, सोना उतरा।"

1,2,3, समाचार पत्रों की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 60,61

वाक्य चयन –

सरल वाक्य (1)

" भावना मजबूत थी " (हिदु0 13 3 81)

" चावल छिलके का तेल 10 रूपये सुधर गया।" (हिदु0 15 3 81)

मिश्रित वाक्य – (2)

" स्थानीय सर्राफा बाजार मे आज चॉदी के भाव मे सुधार हुआ, चूँकि न्यूयार्क मे तेजी के समाचार मिले थे।"

(नव0 29 1 81)

संयुक्त वाक्य – (3)

चॉदी तेजाबी गत सप्ताह 2590 रू0 प्रति किलो के पूर्व स्तर पर खुलने के बाद उसी दिन 2598 रू0 तक बिक गयी। लेकिन बाद मे न्यायार्क में चॉदी के भाव 1143 सेट प्रति औस नीचे स्तर पर आ जाने से इसके भाव मगलवार को 255 रू0 तक रह गये।

(नव0 9 3 81)

विचलन – (4)

" वायदा बाजार सुस्त था।" (नव0 16 3 81)

" छोटी इलायची पहले आवक के दबाब मे रही।" (नव0 4 10 88)

1,2,3,4 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 62,63

" नीरस कारोबार।" (1) (नव0 19181)

" यद्यपि केन्द्रीय सरकार ने देश मे गेहू का यातायात मुक्त कर रखा है लेकिन——" (हिदु0 18.1.81)

<u>अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी</u> – (2)

" आवक होने से मूँग की घटिया क्वालिटी मे 30 रू0 निकल गये।"

(नव0 26181)

" बिहार साइड से अच्छी मॉग आने से ———

(नव0 26181)

" बिनौले के तेलो के मदे को ब्रेक लग गया।"

(हिदु0 25281)

हिन्दी दैनिक समाचार पत्रो के बाजार भाव के समाचारो की भाषा व्यापारी वर्ग के लिए विशेष आकर्षक का केन्द्र होती है। अत इन समाचारों मे ऐसे शब्दो का प्रयोग किया जाता है जो व्यापारी वर्ग के लिए विशेष बोधगम्य होते हैं। यद्यपि प्रयास यह होना चाहिए कि आम जनता भी इन समाचारो को जाने और समझे, इसलिए भाषा और सरल होना चाहिए।

1,2, समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 62,63

5 **कार्टूनों की भाषा** – (1)

कार्टून का अर्थ है कम शब्द मे बहुत कुछ कहना। समाचार पत्रो मे कार्टून चित्र स्थायी स्तभ बन गये है, पाठक बेसब्री से इस का इन्तजार करते है कार्टूनो मे प्रयुक्त शब्द और चित्र कभी–कभी इतना तीव्र प्रहार करते हैं कि सम्बद्ध व्यक्ति बौखला जाता है । हिन्दी दैनिक समाचार पत्रो के मुख्य कार्टून और उनकी भाषा के कुछ उदाहरण –

" उग्रवादियो ने उ0प्र0 को निशाना बनाया" (छोटे अक्षरो में)
" कानपुर मे दिन दहाडे विधायक की हत्या " (मोटे अक्षरो में)
अगरक्षक भी मरा, दो घायल ।

(अमर उ0 6 4 88)

पजाब को छोडो———— एक कापी पहले वीर बहादुर को भेजनी है, जल्दी

(नव0 भा0 टा0 6 4 88)

भाई साहब (2)

वी0पी0 सिह अगले प्रधानमत्री होगे ——— देवी लाल——— लेकिन चाधरी साहब।
राजा का कहना है कि वो गद्दी पर बैठेगे नही "
"———— न ही आप ही ——— "

(दै0 जा0 6 4 88)

1,2, समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 64,65

नए शब्दों का जन्म – (1)

कार्टून

(जनसत्ता 10 2 88)

धकाओ, धकाओ ——— " रेलगाडी के कुछ डिब्बो मे पीछे से यात्री धक्का लगा रहे है।"

यह तुम्हारे भले के लिए है, उपर माधवराव सिंधिया है।

उपरोक्त वाक्य मे धक्का देने की क्रिया को छोड दिया गया है, और शब्द धक्का से धकियाना, लतियाना के समान्तर बनाया गया है, जो कार्टून की भाषा के अनुरूप है।

पाठकों के पत्रों की भाषा – (2)

सभी समाचार पत्रो मे एक कालम या पृष्ठ का निश्चित हिस्सा पाठको के लिए सुरक्षित रहता है, इस हिस्से मे विभिन्न प्रकार के पाठको के विचारों को स्थान दिया जाता है, समाचार पत्रो मे सपादक के नामपत्र लिखने वाले पाठक कई श्रेणी के होते है। प्रथम वे जो प्रत्येक सप्ताह किसी न किसी राजनीतिक सामाजिक या अन्य किसी विषय पर अपने विचार सपादक को प्रेषित करते हैं," और सपादक उन्हे छापते रहते हैं। द्वितीय श्रेणी के वे पाठक हैं जो अपनी रचनाओ के प्रकाशन का सबसे अच्छा माध्यम इस स्तभ को मानते हैं। तृतीय श्रेणी के वे पाठक है जो अपने गली–मोहल्ले की समस्याओ की ओर प्रशासन का ध्यान आकर्षित कराना चाहते हैं। पाठको के पत्रो के कुछ उदाहरण –

1,2 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 65,66

श्रद्धा भाव जगाएं – (1) चौपाल (जनसत्ता 27 12 88)

सपादकीय – " नदियो की सफाई का टोटका (23 दिस0) पढा। दिल्ली की योग–प्रचार सस्था द्वारा यमुना के जल को शुद्ध करने के लिए उसमे शमन दूध प्रवाहित करना, अध विश्वास की पराकाष्ठा है – मगर आज ऐसी श्रृद्धा भावना जगाने के बजाए उसमे दूध प्रवाहित करने के चोचले अपनाए जा रहे हैं। जब जरूरत नदियो मे फैल रही भयकर प्रदूषण से लोगो को चेताने की है। "

बी0 एस0 विपट ग्राम – आरतौली

पो0 पनुबोनोला, अल्मोडा (उ0प्र0)

अन्तिम पत्र – (2)

आप रामायण देखते है, देखिए

खूब देखिए

ससद, रक्षा मत्रालय की बैठक रोककर देखिए।

मगर राष्ट्रहित मे, भावना के बहाव मे इतना न बहे,

कि दुश्मन सीमा मे घुस आए,

और आप रामायण देखते रहे।

– माणिक मृगेश

हिन्दी अधिकारी, मथुरा रिफाइनरी

अतिक्रमण – (3) जनवाणी (18 11 88 दैनिक जागरण)

बाहर जैतपुर मार्ग पर सडक के दोनो तरफ दुकानदारो और ठेलेवालो के अतिक्रमण की वजह से आए दिन दुर्घटनाए होती रहती हैं, और नागरिको को आवागमन मे भारी दिक्कत का सामना करना पडता है, अत प्रशासन से

1,2,3 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 66,67

अनुरोध है कि सडक के दोनो तरफ के अतिक्रमण को अविलब हटवाने की व्यवस्था करे।

—विनोद शर्मा,
जैतपुर आगरा

अधिकाश पत्र लेखक, पाठक शिक्षित होते है, अत उनकी भाषा का स्तर समाचार पत्र के समकक्ष ही होता है, तथा प्रेषित पत्र सपादित करके प्रकाशित किया जाता है अत भाषायी त्रुटि कम ही पाई जाती है।

संपादकीय (पृष्ठ) की भाषा –

सपादकीय के आधार पर समाचार पत्र की पहचान होती है। सपादकीय मे व्यक्त विचार से ही पाठक यह अनुमान लगा लेता है कि समाचार पत्र किसी पक्ष का समर्थन कर रहा है, अथवा निष्पक्ष है। समाचार पत्र के लिए सबसे कठिन कार्य होता है कि ज्वलत समस्याओं पर विचार व्यक्त करने के बावजूद अपनी निष्पक्षता बनाए रखे, अन्यथा उस पर पक्षपात का आरोप लग सकता है, और यह स्थिति किसी भी समाचार पत्र के लिए शुभ नही होती है।

प्राय सभी दैनिक समाचार पत्रो का एक पृष्ठ सपादकीय तथा दो अन्य लेख के लिए सुरक्षित होता है। सपादकीय किसी राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय घटना, स्थानीय विषय, राजनीतिक, सामाजिक, अर्थिक विषय पर लिखा जाता है। सपादकीय लेख की भाषा सरल, तथ्यात्मक, भावप्रवण, सतुलित व सारगर्भित

होनी चाहिए। यद्यपि सभी सपादकीय उपरोक्त कसौटी पर खरे नही उतरते, किन्तु प्रयास यही होता है कि सपादकीय की गरिमा कम न होने पाए।

व्याकरणिक पक्ष – (1)

सपादकीय लेख मे सस्कृत तत्सम शब्दो का बाहुल्य होता है। आवश्यकतानुसार अग्रेजी, अरबी–फारसी शब्दो के प्रयोग से परहेज नही किया जाता है।

शब्द – (2)

रणनीति, कार्य अधिवेशन, उपलब्धि घोषणा पत्र, कार्यवाही, चुनौती, उचित निर्णय, आवश्यक, निरर्थक, खरीदफरोख्त, फन, माहिर, सस्ती, हडताल, कर्फ्यू, इस्तीफा, बुलन्द, मुखर, डायलॉग, रिपोर्ट फिल्म आदि।

सपादकीय के कुछ उदाहरण –

बढता विश्वास – (संपादकीय, जनसत्ता – 2 जनवरी 89)

"इस्लामाबाद के सार्क अधिवेशन की मुख्य उपलब्धि उसका घोषणापत्र, आतकवाद को खत्म करने और इस सदी के अन्त तक क्षेत्र के लोगो की बुनियादी जरूरतो को पूरा करने के लिए आर्थिक कार्य योजना बनाने का सकल्प है।" (3)

(सपादकीय, दैनिक जागरण, 21 जुलाई 1989)

एक नई चुनौती

अमरीकी प्रशासन ने प्रक्षेपास्त्रो के प्रसार को रोकने के नाम पर भारत को

1,2,3 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 68,69

प्रक्षेपास्त्र परीक्षण की अत्याधुनिक प्रणाली उपलब्ध कराने पर जो रोक लगाई है, उसे किसी भी दृष्टि से उचित नही कहा जा सकता, और भारत ने अमरीका के इस निर्णय के चुनौती देकर बहुत ही उचित कदम उठाया है।

वाक्य – संरचना – (1)

सपादकीय लेखो के वाक्य प्राय बडे (सयुक्त) और मिश्रित होते है। यद्यपि सरल और छोटे वाक्यो का भी अभाव नहीं होता है।

मिश्रित वाक्य – (2)

सोवियत सघ मे कोयला खान मजदूरो की हडताल से जाहिर है कि मिखाइल गोर्वाचोफ को उपराष्ट्रीयताओ की महत्वाकाक्षाओ और साम्प्रदायिकता के सवालो से नही जूझना पड रहा है बल्कि उनकी 'पेरेस्त्रोइका' और 'ग्लासनोस्त' ने मजदूरो की महत्वाकाक्षाओ को भी चुनौतीपूर्ण मुद्रा मे मुखरित होने का अवसर दिया है।

(नव0 21 7 89)

शैली (3)

चयन –

बात को सही ढग से प्रेषित करने के लिए सपादक शब्दो के चयन के प्रति सावधान रहते है। यही कारण है कि कभी–कभी सपादकीय स्मरणीय और प्रेरक बन जाता है।

उदाहरण –

1,2,3 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 69,70

भर्त्सना – (1)

"इका सासद ने विगत दिवस राज्य–सभा मे विपक्षी सासद का गला दबाकर उसे चुप कराने की जो कोशिश की, उसकी जितना भर्त्सना की जाए, वह कम है।"

(सपादकीय 28–7–89 दै0 जा0)

थू–थू हुई – (2)

"चीन के घटनाक्रम पर माकपा ने नम्बूदरीपाद के कहने पर नरसहार समर्थक जैसी नीति अपनाई, उससे पार्टी की पूरे देश मे थू–थू हुई।"

(नव0 27–7–89)

उपरोक्त दोनो सपादकीय मे भर्त्सना और थू–थू शब्द का चयन निदा और अतिनिदा के लिए किया गया है जो भाषा को सटीक और प्रभावी बनाता है।

विचलन – (3)

"मोगा मे आतकवादियो द्वारा राष्ट्रीय स्वयसेवको को जिस नृशंसता से मारा गया, उससे देशवासियो के मन मे दुख के अलावा सरकार की अक्षमता के प्रति गुस्सा भी है।"

अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी –

"इसके अतिरिक्त 'रिक्रूट काड' और 'रिश्वत घोटाला' मे उनकी पार्टी के प्रमुख नेताओ की भागीदारी भी श्री ऊनो को भारी पडी।"

(पजाब केसरी 28–7–89)

1,2,3 समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 70,71

"क्षुब्ध नबूदरिपाद इन बयानो को गलत रिपोर्टिंग मानकर टालते रहे और पोलिटब्यूरो मे मतभेद से इकार करते रहे।" (1)

(नव 0 27 7 89)

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सपादकीय लेखो की भाषा परिनिष्ठित होते हुए भी, उसमे तद्भव, देशज और ठेठ शब्दो का यथावसर प्रयोग किया जाता है। जो सपादकीय की भाषा को सम्प्रेषणीय व प्रभावी बनाने मे सहायक होती है।

साप्ताहिक विशेषाको की भाषा –

प्रत्येक समाचार पत्र मे साप्ताहिक विशेषाक प्रकाशित किया जाता है जो समाचार पत्र से कुछ अलग ढग का होता है। इस विशेषाक मे प्राय सभी वर्ग के पाठको के लिए सामग्री का समायोजन रहता है। जो पाठको के मनोरजन, ज्ञानवर्द्धन के साथ–साथ समाचार पत्र की लोकप्रियता मे वृद्धि करता है। इन विशेषाको मे विशिष्ट लेख, कहानी कविता, पुस्तक समीक्षा, गद्य की अन्य विधाए (सस्मरण, यात्रावृत आदि), फिल्म–जगत, बाल–जगत, दूरदर्शन, महिला–जगत, साप्ताहिक भविष्यफल आदि का समावेश रहता है।

साहित्यिक खंड की भाषा –

इस खड मे कहानी, उपन्यास (धारावाहिक) लघु–उपन्यास, हास्यव्यग्य, कविता, पुस्तक–समीक्षा आदि सम्बद्ध सामग्री होती है। सभी विधाओ के अलग–अलग लेखक होते है, विषयानुसार परिष्कृत, तद्भव, देशज शब्दो का प्रयोग भाषा मे किया जाता है।

1, समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 70,71

फिल्म जगत के समाचारों भाषा

अग्रेजी शब्द –

फिल्म, प्रोडक्शन, शूटिग, कैमरा, हिट, फ्लाप, एक्शन, स्टार कामेडी, एक्टर, डबिंग, थियेटर आदि।

सस्कृत शब्द –

कृति, मार्मिक, प्रत्यक्ष, प्रामाणिक, परिवेश, सौन्दर्य, प्रख्यात, स्थापित, प्रदर्शित, भव्य, उद्घाटन, कलात्मक, रोचक, प्रतिष्ठा आदि।

लेखों (फीचर) की भाषा –

समाचार पत्र मे प्रकाशित लेखो के लेखक कुछ तो सपादकीय मडल के होते है, कुछ व्यावसायिक। साप्ताहिक पृष्ठ मे प्रकाशित लेख की भाषा भावनात्मक होती है। कुछ लेखक तो अपने लेखो के कारण ही समाचार जगत मे जाने जाते है। जिनकी लिखने की अपनी एक अलग शैली होती है। महत्वपूर्ण लेखक है –

1 कुलदीप नैयर
2 खुशवत सिह
3 रामपाल सिह
4 मनोरमा दिवान
5 मणिमाला
6 विनीत नारायण
7 भानुप्रताप शुक्ल
8 प्रभाष जोशी
9 अरूण शौरी

1, हिन्दी पत्रकारिता के विविध आयाम, डा० वेद प्रताप वैदिक पृष्ठ 500

समीक्षा की भाषा –

'किताबे' स्तभ के अन्तर्गत 'कुसुम कुमार' के काव्य सकलन 'तीन अपराध' की समीक्षा मे डा0 कृष्णदत्त पालीवाल एक रपटीली भाषा का प्रयोग करते है। जबकि किसी पत्रिका के लिए लिखते समय इनकी भाषा मे एक विशिष्ट कसाव व गुफन होता है। कविता मे एक नया मुहावरा उभरता दिखाई देता है। भोगी हुई अनुभूति के प्रति दृष्टा बने रहने की स्थिति, कवि के भीतर खीझ, बेचैनी, झुझलाहट, अनुभूति के स्तर, सम्पूर्ण व्यक्तित्व की सगति न बैठ पाने के कारण अनुभूति को ही सब कुछ मानकर पकड लेता है। अभी हाल मे प्रकाशित 'कुसुम कुमार' का तीसरा कविता सग्रह 'तीन अपराध' ऐसे ही काव्य मुहावरे की गवाही देता है। समीक्षक डा0 पालीवाल ने मुहावरा, खीझ, झुझलाहट जैसे बोलचाल के शब्दो को प्रमुखता दी है। (1)

साप्ताहिक भविष्य फल की भाषा –

यह स्तभ भारतीय जीवन की मानसिकता, भाग्यवादिता को प्रतिबिम्बित करता है। प्रति सप्ताह प्रकाशित होने वाले भविष्यफलो मे घुमाफिरा कर वही बाते दोहराई जाती है। महत्वपूर्ण सूचना न होने के बावजूद पाठक एक बार अवश्य इन भविष्यफलो को पढता है और भूल जाता है।

एक उदाहरण –

वृषराशि –

दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा, वाणी पर सयम रखे। आय वृद्धि का योग है, सुदुर यात्रा सम्भव है, सतान पक्ष की चिता रहेगी, भाई अथवा मित्रो से तनाव हो सकता है, प्रतियोगिता मे सफलता मिलेगी।

(अमर उजाला जनवरी 1990)

1, समाचार पत्रो की भाषा डा0 माणिक मृगेश पृष्ठ 136,37

सभी बारह राशियो मे लगभग ऐसी ही भाषा का प्रयोग किया जाता है, जिससे अनुमान निकाला जा सकता है किन्तु किसी परिणाम पर नही पहुचा जा सकता।

हिन्दी समाचार पत्रो की भाषा के विविध रूपो के अध्ययन से स्पष्ट है कि क्रमश भाषा मे प्रौढता और प्रतीकात्मकता मे वृद्धि हुई है। भाषा की अभिव्यजना क्षमता मे भी वृद्धि होती जा रही है। यद्यपि भाषा मे विदेशी प्रभाव (अग्रेजी) अधिकाधिक दिखाई देने लगा है। फिर भी हिन्दी सशक्त भाषा के रूप मे उभर कर सामने आई है, यह एक जीवन्त भाषा के लिए श्रेष्ठ लक्षण माना जा सकता है।

समाचार पत्रों की भाषा की प्रमुख विशेषताएं –

पत्रकारिता और भाषा के सम्बन्ध का अध्ययन करने पर पत्रकारिता की भाषा की निम्न विशेषताए सामने आती हैं, जो इस प्रकार है –

(1) **विशुद्धता पर बल** –

आधुनिक हिन्दी दैनिक समाचार पत्रो की भाषा के सम्बन्ध मे स्वय पत्रकारिता के क्षेत्र मे विभिन्न दृष्टिकोण पाए जाते हैं। समाचार पत्रो की भाषा मे किसी भी प्रकार का पूर्वाग्रह व्यावसायिक दृष्टि से लाभदायक नही हो सकता। नियमित पाठक भी यह मान कर चलता है कि अमुक समाचार पत्र को ऐसा लिखना ही है। कुछ समाचार पत्र के अपने विशेष शब्द है जो नियमित रूप से प्रकाशित होते है जैसे 'आज' मे प्रचलित शब्द राष्ट्रीयकरण, गमनागमन, बक (बैक), (1)। इन शब्दो से स्पष्ट होता है कि आज का भाषा सम्बन्धी दृष्टिकोण शुद्ध व्याकरणिक विशुद्धता और परिष्कृत हिदी का है। वही इसी पत्र मे मिश्रित और सकर शब्द प्रयुक्त होते है जैसे 'रिवाल्वरधारी' (2)। 'हिन्दुस्तान' (दिल्ली)

1,2, हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम, डा0 वेद प्रताप वैदिक पृष्ठ 499

और नवभारत टाइम्स (बम्बई) मे प्रचलित शब्द 'साविधानिक' (1) का प्रयोग सस्कृतोन्मुख वृति का परिचय देता है। इन्ही पत्रो मे 'ससत्सदस्य' (2) और 'वृहत्सभा' (3) जैसे हल्–सन्धि मूलक रूप भी प्रयुक्त होते है। जबकि हिन्दी के व्याकरणिक यह मानते है कि हिदी के शब्दो मे हल् चिन्ह स्वीकार नही किया गया है। 'आत्मनिर्भर' के स्थान पर 'आत्मभरित' (4), दोनो के स्थान पर 'उभय' स्वचालित के स्थान पर 'आत्म–नियामक' (5) आदि विशिष्ट पयार्य भी पत्र का भाषा सम्बन्धी दृष्टिकोण व्यक्त करता है। नवभारत टाइम्स (बम्बई) के इस प्रकार के प्रयोग दृष्टव्य है – Launch जलावतरण, Balance sheet तुलनपत्र, Automatic आत्मनियामक, Pending लम्बित, Double युगल आदि (6)। धारा 144 को 'जमावबन्दी' (7) कर्फ्यू को 'सचार बन्दी' (8) गृहमंत्री को स्वराष्ट्र मत्री (9) तथा विदेश मत्री को 'परराष्ट्र मत्री' (10) इन शब्दो का प्रयोग नवभारत टाइम्स (बम्बई) मे किया जाता था। उपरोक्त उदाहरणो से सिद्ध होता है कि पत्र की भाषा के सम्बन्ध मे अपना विशिष्ट दृष्टिकोण होता है। समाचार पत्रो की भाषा शैली मे भी यह देखा जा सकता है–

1 श्री गोयनका ने स्पष्टीकरण की अनुमति मागी। समाध्यक्ष ने कहा सम्प्रति नही। (11)

(नवभारत टाइम्स बम्बई 28–10–74)

2 यदि सदन की कारवाई मे अडगा डालने के कोई कोशिश हुई, तो वह प्रपीडक, असासदिक और अलोकतान्त्रिक होगी। (12)

(नवभारत टाइम्स बम्बई 28–10–74)

(2) **जनोन्मुखता** –

समाचार पत्र के प्रकाशन का उद्देश्य ही जनसामान्य को सूचित करना है। समाचार पत्र को वैसी ही भाषा का प्रयोग करना चाहिए, जिससे अधिक से

1,2,3,4,5,6,7,8,9,10,11,12, हिन्दी पत्रकारिताः विविध आयाम, डा0 वेद प्रताप वैदिक, पृष्ठ 499,500

अधिक लोग सरलता से समझ सके। इस सम्बन्ध मे डेनियल डेफो का कथन दृष्टव्य है "यदि कोई मुझसे पूछे कि भाषा का सर्वोत्तम रूप क्या हो, तो मै कहूगा कि वह भाषा जिसे सामान्य वर्ग के भिन्न–भिन्न क्षमता वाले पाच सौ व्यक्ति (मूर्खो और पागलो को छोडकर) अच्छी तरह समझ सके।" (1)

अपराध समाचारो के सपादन मे अरबी–फारसी के फरार, जब्त, बरामद, मुचलका, तफतीश, तलाशी, गिरफ्तारी, वारदात, सुराग, नकबजनी, कैद, हिरासत, नजरबन्द, इस्तगासा, जमानत, जालसाजी, ज्यादती, गिरोह, रिहाई, चालान, जाली, जुर्माना, दावा आदि शब्द का निसकोच प्रयोग किया जाता है। (2)

अंग्रेजी शब्द – वारट, रिमाड, पुलिस–स्टेशन, कोर्ट, कपनी, रिपोर्ट सप्लाई, हाई कमाड, कोटा, कोरम, कर्फ्यू लेवी रिकार्ड आदि शब्दों का प्रयोग होता है। (3)

कभी–कभी एक ही समाचार मे एक शब्द के पर्याय का भी प्रयोग किया जाता है। देशज और ठेठ शब्दावली के प्रयोग का प्रचलन भी समाचार पत्रो मे बढता जा रहा है।

उदाहरण– झडप, हुल्लड, हथकडे, बावेला, धमकी, चपेट, ठप्प, घोटाला, भिडत, हौव्वा, लताड, अटकल, घपला, अधाधुंध, भरमार, भडाफोड, मिलीभगत, हाथापाई, हडकंप, भगदड, आदि। (4)

युग्म और दित्व मूलक शब्द – रोकथाम, लूट खसोट, घुसपैठ, उलटफेर, लूटपाट, तोडफोड, शोरशराबा, शोरगुल, गुलगपाडा, छीना–झपटी, दिन–दहाडे, छानबीन, जोश–खरोश, साठ–गाठ, उठापटक, मारपीट, धक्कामुक्की, छिन्न–भिन्न, रेलमपेल, खुल्लमखुल्ला, गुत्थमगुत्था, गरमागरम, टालमटोल, तितर–बितर, नोक–झोंक, पकड–धकड, दौर–दौरा, छेड–छाड, ठसाठस, हलचल, चिल्लपो,

---

1,2,3,4,, हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम, डा0 वेद प्रताप वैदिक पृष्ठ 490,500

हो हल्ला आदि शब्दो का प्रयोग हिदी पत्रकारिता मे सामान्य हो गया है। (1)

(3) **प्रयोग धर्मिता** –

विभिन्न हिदी समाचार पत्रो की भाषा मे प्रयोग की प्रकृति भी पाई जाती है। कई दैनिक समाचार पत्रो में स्थानीय महत्व के कुछ समाचारो को ललित साहित्यिक शैली मे लिखा जाता है। दैनिक की अपेक्षा साप्ताहिक और पाक्षिक पत्रो मे यह प्रवृति अधिक पाई जाती है। दिल्ली से प्रकाशित दिनमान (अब बन्द) मे प्रयोग की प्रवृति कुछ अधिक ही मुखरता से मिलती है। "हिंदी के स्वरूप के विकास के लिए अकेले 'दिनमान'ने जितना कार्य किया है, उतना सभवत अन्य किसी पत्र ने नही किया। भाषा प्रयोगो के सम्बन्ध मे उसका अपना कार्य अन्य सभी पत्रो मे अनुपलब्ध है 'दिनमान' मे देखी जा सकता है। इसका श्रेय इसके सस्थापक सपादक श्री सच्चिदानद हीरानद वात्सायन अज्ञेय को है।" (2)

(4) **अनुदित भाषा** –

हिदी समाचार पत्रो की भाषा के स्वरूप को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण तत्व है अनुवाद, अनुवाद हिदी समाचारो की एक विवशता है। सचार के साधनो का इतना विकास होने पर आज भी हिदी समाचार की अपेक्षा अग्रेजी समाचार पहले प्राप्त होते है, इसलिए हिदी समाचार चार पत्रो को अनुवाद पर निर्भर रहना पडता है। यही कारण है कि हिदी समाचार पत्रो मे भाषा का स्वरूप अग्रेजी की वाक्य–रचना, शब्दावली और व्याकरणिक प्रवृतियो से प्रभावित होता है। अनुवाद के कारण हिदी के मौलिक स्वरूप मे विकृति आ जाती है।

अनुवाद के कारण गलत प्रयोग के कुछ उदाहरण – थर्ड डिग्री मेथड (तीसरे दर्जे के हथकडे), कब्स (स्काउट शेर के बच्चे), टैंक वार केयर (तालाब

1,2,, हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम डा0 वेद प्रताप वैदिक पृष्ठ 500,501

लडाई), रेलवे–स्लीपर (रेलवे स्टेशन पर सोने वाले), रेड लेटर डे (लाल पत्र दिवस), टु टेम दि रिवर्स (नदियो को पालतू बनाना), परहेड इनकम (प्रति नर मुड आय) आदि। ये अनुवाद अर्थ का अनर्थ कर देते है। (1)

– अगेजी वाक्य का हूबहू अनुवाद करने से वाक्य लम्बे जटिल और अस्पष्ट हो जाते है – जैसे श्री भुट्टो की यात्रा की समाप्ति पर जारी सयुक्त विज्ञप्ति मे शिमला समझौते की व्यवस्था के अनुरूप भारत और पाकिस्तान के बीच विद्यमान विवादो के निपटारे के लिए दक्षिण एशिया मे स्थाई शाति के उद्देश्यो से जम्मू और कश्मीर का प्रश्न निपटाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। (2)

– बरामद शुदा असली रिवाल्वर को सरकार के हित मे जब्त कर लिए जाने का आदेश भी विद्वान न्यायाधीश ने दिया है। (3)

अनुवाद की बोझिलता अस्पष्टता और अतर्कसगतता को समाप्त करने की ओर सकेत करते हुए श्री सत्यदेव विद्यालकार ने नवभारत टाइम्स के सहसपादको को 6–5–46 को कहा था कि "हम लोग शुद्ध हिदी न लिख कर अग्रेजी हिदी लिखते है। यदि हिन्दुस्तानी से बचना अभीष्ट है तो अग्रेजी हिदी से बचना और भी आवश्यक है। इसी से हिदी भाषा मे स्वाभाविकता और सुन्दरता नही आ पाती।" (4)

(5) **<u>शिथिल एवं अव्यवस्थित भाषा</u>** –

दैनिक समाचार पत्र के सभी कार्य एक समय सीमा मे करने की बाध्यता होती है। एक कार्य मे देर होने से पूरी कार्य श्रृखला अव्यवस्थित हो जाती है।

1,2,3,4, हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम, डा0 वेद प्रताप वैदिक पृष्ठ 500,501

समय पर सामग्री भेजने की जल्द बाजी मे अव्यवस्थित भाषा छपने के लिए प्रेस मे चली जाती है। ये त्रुटिया एक सस्करण छप जाने के बाद मशीन रूकने पर सुधारी जाती है। इसी कारण समाचार पत्रो के विभिन्न सस्करणो की भाषा मे अन्तर होता है। अनेक छोटे और मझोले समाचार पत्र आर्थिक सकट के कारण योग्य एव अनुभवी पत्रकार रखने मे सफल नही होते। अनुभवहीन, नौसिखिए पत्रकारो के कारण भी समाचार पत्रो मे भाषा की अपरिपक्वता, अस्पष्टता और शिथिलता का प्राधान्य रहता है। तुच्छ स्वार्थो की पूर्ति के लिए निकलने वाले छोटे–छोटे पीत पत्रो मे हल्की और उत्तेजना फैलाने वाली भाषा ही देखने को मिलती है। (1)

(6) **विविध भाषा रूपों का प्रयोग** –

स्वातत्रयोत्तर हिदी पत्रकारिता मे प्राप्त भाषा के स्वरूपो मे समरूपता का अभाव और विविधता का बाहुल्य पाया जाता है। भिन्न–भिन्न हिदी पत्र भाषा सम्बन्धी स्थूल विषयो जैसे शब्द वर्तनी, व्यक्तिवाचक नामो का स्वरूप नवरचित शब्द आदि अलग–अलग रूपो मे प्रयोग करते ही है। अग्रेजी पत्रो से तुलना करे, तो ज्ञात होगा कि यह केवल हिदी पत्रो की ही कमजोरी है। इसके कई कारण है – हिदी भाषी क्षेत्र मे अलग अलग स्थानो मे हिदी के अलग–अलग रूप पाए जाते हैं। प्रत्येक हिदी भाषा–भाषी अनिवार्य रूप से द्विभाषी है अत वह अपनी प्रादेशिक भाषा शब्दावली प्रयोगो और मुहावरों का प्रयोग करता है। भिन्न– भिन्न क्षेत्रो के सवाददाताओ द्वारा भेजे गए समाचारो और यहॉ तक कि कार्यालयीन पत्रकारों द्वारा लिखित सामग्री को भी एक लेखनी का अन्तिम स्पर्श दिया जाना आवश्यक होता है। हिदी के अनेक शब्दो की वर्तनी के विषय मे अभी तक एकरूपता कायम नही की जा सकी है। रोमन लिपि के प्रभाव के कारण 'सुब्रत मुखर्जी' 'सुब्रतो मुखर्जी', 'रणजी ट्राफी', रंजी ट्राफी', 'लागोस,

---

1, हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम, डा0 वेद प्रताप वैदिक पृष्ठ 500,501

'लाओस', 'शुभ लक्ष्मी', 'सुब्बालक्ष्मी', 'भडार नायक', 'भडार नायके', और 'सेनानायक' 'सेनानायके' हो गए है। इसी प्रकार विदेशी नामो की अनेक वर्तनिया लिखी जाती रही है जैसे – 'दगाल', 'दि गाल', 'सुकर्ण', 'सुकर्णो', 'नरोत्तम सिह नख', 'नरोदम सिहानुक', लिखा जाता है ऐसे कुछ अन्य उदाहरण 'फर्नाण्डीस', 'फर्नाण्डीज', 'फर्नेण्डीज', 'डियोगार्सिया', 'दियागोगार्सिया', 'डिगोगार्सिया', 'किसीजर', 'किसीगर', 'कुर्ट वाल्डेहिम', 'वाल्ड हाइम', 'इथियोपिया', 'इथोपिया', 'जार्डन', 'यदेन', 'यूर्दान', 'मलेशिया', 'मलेयेशिया', 'अमेरिका', 'अमरीका' आदि।(1)

अको के मुद्रण की पद्धति मे भी अनेकरूपता पाई जाती है। कुछ समाचार पत्र (नई दुनिया इदौर तथा राजस्थान पत्रिका जयपुर) रोमन अको को अपनाते है जबकि शीर्षको के टाइप में नागरी अको का ही प्रयोग करते है। सख्याओ के प्रयोग की पद्धति भी एक रूप नहीं है। कभी–कभी पाच अको की सख्या भी अको मे ही छाप दी जाती है और छोटी सख्या को अक्षरो मे छापा जाता है। (2)

स्वातत्र्योत्तर हिदी पत्रकारिता में शब्दो का सक्षिप्त रूप प्रचलित हो गया। इससे समय और स्थान और श्रम की बचत होती है किन्तु विभिन्न पत्रो मे शब्द सक्षिप्त रूप भी अनेक वर्तनी मे प्रचलित है। नाम के रोमन आद्याक्षरो को चुनकर भी यह उद्देश्य पूरा होता है। वही आजकल नागरी वर्णो को भी सक्षिप्त के लिए चुन लिया जाता है। विभिन्न समाचार पत्र प्रमुख व्यक्तियो के नामो को कई रूपो मे लिखते है—श्रीमती गाधी, इदिरा गाधी, जयप्रकाश, जयबाबू, जे पी। (3)

कभी–कभी नामों के ऐसे अश चुन लिए जाते है जो भ्रम उत्पन्न कर देते हैं जैसे श्री जगजीवन राम के लिए केवल 'राम' का प्रयोग। (4)

इसी प्रकार मीसा, मिसा और आसुका के प्रयोग मे भी भ्राति है तीनो शब्दो

1,2,3,4, हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम, डा0 वेद प्रताप वैदिक पृष्ठ 500,501

का प्रयोग एक ही पत्र मे देखा जा सकता है। (1)

समस्या यह है कि कही अर्द्ध–शिक्षित पाठक मीसा और आसुका को अलग–अलग कानून न समझ बैठे।

स्वातन्त्र्योत्तर हिदी पत्रकारिता मे भाषा मे नित–नूतन प्रयोग होते रहे है। इनमे से कुछ प्रयोग स्थायी सिद्ध हुए है और कुछ क्षणिक। इन तमाम भाषाई विविधताओ के बीच हिदी पत्रकारिता विकसित हो रही है।

1, हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम, डा0 वेद प्रताप वैदिक पृष्ठ 500,501

चतुर्थ अध्याय

विज्ञापन की भाषा –

(1) विज्ञापन की परिभाषा तथा अर्थ

(2) विज्ञापन का स्वरूप

(3) जनसचार मे विज्ञापन की भूमिका

(4) विज्ञापन की सरचना

(5) विज्ञापन काणी

(6) विज्ञापन और पत्रकारिता का सम्बन्ध

(7) विज्ञापन के गुण

(8) विज्ञापन के प्रकार

(9) विज्ञापन के कार्य

(10) विज्ञापन और समाचार मे अन्तर

(11) हिन्दी विज्ञापन और उनकी भाषा

चतुर्थ - अध्याय

विज्ञापन की भाषा

(1) विज्ञापन की परिभाषा तथा अर्थ –

फ्रेक जेफकिस ने "क्रय और विक्रय योग्य वस्तुओ को जनता तक पहुचाने के माध्यम को विज्ञापन कहा है। सस्ते दर पर उत्पादित सामग्रियो एव सेवाओ के उचित ढग से प्रभावकारी प्रस्तुति करण को विज्ञापन कहा जा सकता है।" (1)

विज्ञापन के अन्तर्गत किसी प्रकार का वह कार्य सम्मिलित है, जिसमे विक्रय योग्य वस्तुओ या सेवाओ के विक्रय को प्रोत्साहन देने हेतु सूचना का प्रसार किया जाता है। विज्ञापन अब प्राप्त नही किया जाता, विज्ञापन की जगह बेची जाती है, या उसका विपणन किया जाता है। (2)

"इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' के अनुसार "किसी वस्तु के विक्रय अथवा किसी सेवा के प्रसार हेतु मूल्य चुका कर की गई घोषणा ही विज्ञापन है। वास्तव मे यह प्रचार का एक प्रभावशाली साधन है। जिसके द्वारा वस्तुओ और सेवाओ के विक्रय का विकास होता है।" (3)

1932 ई0 मे अमेरिकी पत्रिका 'एडवरटाइजिग एज' ने एक प्रतियोगिता आयोजित की, जिसमे विज्ञापन की सर्वोत्तम परिभाषा निर्धारित की गई। तात्पर्य यह कि "किसी व्यक्ति, वस्तु सेवा या आन्दोलन को प्रस्तुत करने वाली मुद्रित सामग्री, लिखित शब्द, बोले गए शब्द या चित्राकन विज्ञापन है, जिसे विज्ञापनदाता अपने खर्चे पर बिक्री, प्रयोग, वोट या प्रकार की सहमति प्राप्ति के लिए

1,2,3, जनसचार के विविध आयाम पृष्ठ 42, 44

खुल्लम–खुल्ला प्रस्तुत करे। विज्ञापन उद्योग का जीवन रक्त है तथा समाचार पत्रो हेतु यही आधार है। (1)

विज्ञापन कर्ता (Copy writer) विज्ञापन को निर्मित करते समय पाठक, श्रोता (Audience) की आयु, लिग तथा सामाजिक स्तर का ध्यान रखना चाहिए। किसी भी माध्यम से प्रसारित विज्ञापनो को हर स्तर का व्यक्ति सुनता अथवा पढता है। समाचार पत्र विज्ञापनो को प्रचारित करने का सबसे पुराना माध्यम है। आज देश मे शिक्षा के प्रचार के कारण समाचार पत्र ने घर–घर मे स्थान पा लिया है। इस माध्यम से दिए जाने वाले लिखित विज्ञापन प्राय हर शिक्षित परिवार मे पढे देखे जाते है। अत इनका प्रस्तुतिकरण ऐसे मनमोहक, आकर्षक, व्यवस्थित तथा पाठक वर्ग के अनुकूल होना चाहिए, जो तुरन्त अपना प्रभाव डाल सके। (2)

(2) **विज्ञापन का स्वरूप** –

विज्ञापन आज हमारे जीवन का अनिवार्य अग बन चुका है। प्रतिदिन के जीवन मे प्रयोग मे आने वाली वस्तुओ को आकर्षक और प्रभावी ढग से प्रस्तुत करने के लिए विज्ञापन निर्माताओ और विज्ञापनदाताओ ने एक विशेष नीति के अनुसार मीडिया के सभी साधनो का सामूहिक प्रयोग किया है। दिन भर काम–काज के दौरान सडको, वाहनो पर इन सभी के नाम देखने और रेडियो द्वारा इन्ही का गुणगान और रात्रि मे आराम के समय दूरदर्शन या अन्य चैनलो पर इन्ही वस्तुओ की दीर्घ श्रृखला हमारे दिलोदिमाग पर छा जाती है और सुबह की चाय के साथ इन्ही वस्तुओ के विज्ञापन मोहक चित्रो के साथ समाचार पत्र के माध्यम से हमारे सामने उपस्थित हो जाते है। हम चाहकर भी उन्हे नजर–अन्दाज नही कर सकते। ये विज्ञापन हमारे दिलोदिमाग पर इस कदर

1, जनसचार के विविध आयाम पृष्ठ 42, 44

2, हिन्दी विज्ञापन की भाषा – आशा पाण्डेय पृष्ठ 5

हावी हो गये है कि इन सब वस्तुओ के न होने पर हम अपने आप मे घर मे बडी कमी का एहसास करने लगते हैं, और इन वस्तुओ को प्राप्त करने का इन सब चीजो से अपने घर को सजाने का प्रयास कर आत्म सतुष्टि का अनुभव करते है। इन विज्ञापनो का प्रभाव हमारे दिमाग पर इतना स्थायी होता है कि कई वर्ष बाद भी यदि हम कोई कीमती वस्तु खरीदने जाते है, अमुक विज्ञापन मे दिखाई गई वस्तु की माग करते है वह वस्तु टी वी, फ्रिज, कूलर, पखा, वाशिग मशीन, आदि हो सकती है। यदि अधिक कीमत पर भी विज्ञापित कपनियो की वस्तु मिल जाती है, तो हम अपनी सफलता पर सुख की अनुभूति करते हैं।

व्यावसायिक विज्ञापनो मे फोटोग्राफी का महत्व तेजी से बढा है। उत्पाद के बारे मे कही गयी बहुत सी बातो के साथ एक उपयुक्त चित्र विज्ञापन की सम्प्रेषणीयता मे कई गुना वृद्धि कर देता है। जब से समाचार पत्रो मे रगीन चित्र छपने लगे है, इस प्रवृति मे तेजी से वृद्धि हुई है। पहले समाचार पत्रो मे प्रकाशित श्वेत–श्याम चित्र या रेखाचित्र के बीच शब्द काफी अहमियत रखते थे। जब से समाचार पत्र–पत्रिकाए रगीन चिकने कागज पर मुद्रित होने लगे है, तब से इनमे प्रकाशित विज्ञापन जादुई प्रभाव डालते है। रहस्यमय शब्दावली और स्वप्नमयी दुनिया के चित्र के साथ अब ऐसी वस्तुओ के विज्ञापन काफी सख्या मे आने लगे है, जिनका अर्थ एक बार पढने से समझ मे नही आता और उन विज्ञापनो को पाठक एकान्त मे बार–बार पढना चाहता है। इन विज्ञापनो मे कुछ विशेष ब्राड की व्हिस्की, सोडावाटर, लक्जरी काण्डोम, गर्भ निरोध के अन्य साधन, महिलाओ की मासिक सुविधा की वस्तुए (स्टेफ्री, केयरफ्री) विशेष ब्राड के सिगरेट और पान मसाला आदि हैं।

सौन्दर्य प्रसाधन की वस्तुओ के विज्ञापन, साबुन, कीम, पाउडर, विभिन्न

कपनियो के वस्त्र को विभिन्न रूप रग और ढग से प्रस्तुत किया जाता है। ईर्ष्या और काम भावना को उत्तेजित करने वाले विज्ञापनो मे अत्यधिक वृद्धि हुई है। यह भावना इतनी बढ गयी है कि पुरूषो के प्रयोग मे आने वाली वस्तुओ, जिनमे महिलाओ की कोई प्रासगिकता नही होती, उनमे भी अर्द्ध नग्न माडल अश्लील मुद्रा मे प्रदर्शित की जाती है। कभी साइकिल की तुलना सुन्दर युवती से की जाती है तो कभी शेविग क्रीम और साबुन के कारण महिलाओ को पुरूषो की ओर आकर्षित होते दिखाया जाता है।

मानव मन की कोमल अनुभूतियो को स्पर्श करते हुए विज्ञापन बाल मन पर गहरा प्रभाव डालने मे सक्षम होते है वही ईर्ष्या, प्रतिस्पर्द्धा की भावना बढाने मे सहायक होते है। साबुन, दत–मजन, क्रीम आदि कुछ विज्ञापनो मे विज्ञापित वस्तु को श्रेष्ठ प्रदर्शित करने के लिए उसी जैसे अन्य उत्पाद को फेकते हुए दिखाया जाता है या वस्तु का नाम लिए बिना उसके अवगुणो के बारे मे बताया जाता है।

विज्ञापनो का महत्व इतना बढ गया है कि खेलो, सास्कृतिक–समारोह, मेला, तीर्थस्थल, बाजार, घर, दुकान सभी कुछ विज्ञापनों द्वारा प्रायोजित किए जाने लगे है। वैवाहिक सम्बन्धो के निर्धारण मे विज्ञापनो की भूमिका अहम होती जा रही है। विज्ञापनो को प्राप्त करने, प्रचारित करने की होड सी लगी हुई है। समाचार पत्रो की तो पूरी अर्थ–व्यवस्था ही विज्ञापनो पर आधारित हो गई है। समाचारो के प्रकाशन को लेकर विज्ञापनदाताओ से सौदेबाजी होती है, सम्बद्ध कपनी को हानि पहुचाने वाले समाचार को लेकर विज्ञापनदाता और पत्र मालिक मे सौदेबाजी होती है। मन–मुताबिक सौदा होने पर सम्बद्ध समाचार का प्रकाशन रोक दिया जाता है, भले ही वह समाचार जनहित के लिए कितना भी

महत्वपूर्ण क्यो न हो। विज्ञापन के चलते आज समाचार पत्र और पाठक के बीच 'ग्राहक' 'उपभोक्ता' का रिश्ता बन गया है जो शुद्ध लाभ को दृष्टि मे रखकर बनाया जाता है। ग्राहक की मानसिकता को परिवर्तित करने की एक सोची समझी साजिश की जा रही है, विज्ञापन के अनुसार पाठक की मानसिकता ढालने का प्रयास किया जा रहा है।

मिनरल वाटर और कोला जैसे सादा और रगीन पानी गर्मी के दिनो मे सूखते गले को तृप्ति देने वाले शीतल पेय से बहुराष्ट्रीय कपनियो को करोडो का लाभ होता है। हमारे देश मे शीतल पेय लोकप्रिय कोका कोला से, भीषण विज्ञापन के दम पर यह गहरा कत्थई रग का पेय लोगो की जीभ पर चढ गया। लोग रग जमाने वाले कोका–कोला के रग मे रग गए। अब थम्सअप, डबल सेवन, लिम्का जैसे शीतल पेयो का चलन है। लुभावने विज्ञापन के कारण शीतल पेय युवक–युवतियो मे अधिक लोकप्रिय है। मौज मस्ती के दृश्य उन्हे शीतल पेय निरन्तर पीते रहने की प्रेरणा देते है। जबकि वैज्ञानिक मानते हैं कि शीतल पेय स्वास्थ्य को नुकसान पहुचा सकते है, इससे कुपोषण का खतरा भी बढता है। विज्ञापन सस्कृति ने मिठास और गैस भरी बोतल को विशिष्ट वर्ग का पेय पदार्थ बना दिया है। यही कारण है, कि फलो के पोषक रस इनकी तुलना मे लोकप्रिय नही हो रहे है। (1)

(3) <u>जनसंचार में विज्ञापन की भूमिका</u> –

तीव्र गति से हो रहे औद्योगिक प्रगति के फलस्वरूप उपभोक्ता वस्तुओ के उत्पादन मे तीव्र गति से वृद्धि हुई है। जिनके खपत के लिए विज्ञापन बहुत बडे माध्यम का कार्य कर रहा है। फिल्म, रेडियो, टीवी, पोस्टर्स, हैडबिल, साइन–बोर्ड, स्लाइड्स और वैलून आदि विभिन्न माध्यमो से विज्ञापन

1, जनसचार के विविध आयाम पृष्ठ 103,104,106

किया जाता है परन्तु समाचार पत्र ही सर्वाधिक सक्षम एव उपयोगी सिद्ध होता है। पत्रो मे छपे विज्ञापनो का आखो मे प्रतिक्रिया होती है और मन आकर्षित होता है, और वस्तु विशेष के प्रति ध्यान केन्द्रित हो जाता है।

अग्रेजी मे विज्ञापन के लिए Adverleru शब्द का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है मस्तिष्क का केन्द्रीभूत होना। वास्तव मे विज्ञापन द्वारा जनसामान्य के ध्यान को किसी सामग्री अथवा सेवा की ओर आकर्षित किया जाता है यह आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन का सशक्त उपकरण है। (1)

(4) **विज्ञापन की सरचना** –

विज्ञापन की सरचना के प्रमुख चार चरण है–

1 **शीर्ष स्थान** –

विज्ञापन की सरचना मे शीर्ष स्थान (मुख्य पक्ति) वस्तु के प्रति ध्यान आकृष्ट करने का कौशल केन्द्र होता है। शीर्ष स्थान और उपशीर्ष मे विज्ञापन का मुख्य सदेश होता है।

2 **मुख्य–सामग्री** –

कलेवर या मुख्य सामग्री मे वस्तु के बारे मे कथन रहता है। अर्थात वस्तु के प्रकार्यो और गुणो का विश्लेषण होता है।

3 **विस्तारक–सामग्री** –

'विस्तारक सामग्री' मे वस्तु का विस्तृत ब्यौरा व्याख्या उसके उपयोग की सम्पूर्ण विधि रहती है।

4. **संकेतक–पंक्ति** –

सकेतक पक्ति मे आवश्यक सूचना या स्लोगन होता है। (2)

1, जनसचार के विविध आयाम पृष्ठ 32

2, जनमाध्यम और पत्रकारिता पृष्ठ 583

(5) **विज्ञापन कापी** –

विज्ञापन समाज और व्यक्ति की दशा पर गहरी छाप छोडता है। विज्ञापन का यह गुण मुख्यत विज्ञापन लेखक पर आश्रित होता है। एक विज्ञापन लेखक को मानव मनोविज्ञान देश और काल का ज्ञाता, भाषा शैली की विविधता और उचित प्रयोग का ज्ञान होना आवश्यक है। अच्छी विज्ञापन कापी चाहे वह अग्रेजी अथवा किसी भी भारतीय भाषा मे क्यो न लिखी गई हो, राष्ट्रव्यापी विज्ञापन के लिए उपयोगी नही हो सकती। (1)

एक अनुभवी कापी लेखक शब्दो के चयन वाक्याश के गठन तथा भावाभिव्यक्ति मे बहुत सावधान रहता है। सामान्य रूप से ऐसा माना जाता है कि कोई भी व्यक्ति विज्ञापन पढना या सुनना पसद नही करता। रेडियो और टीवी के विज्ञापनो को तो श्रोता, दर्शक सुनने देखने के लिए बाध्य भी होता है। किन्तु समाचार पत्र–पत्रिकाओ तथा दिवारो के विज्ञापनो को उपेक्षित कर देता है। इसीलिए कापी लेखक विज्ञापनो की ओर पाठको का ध्यान आकर्षित करने के लिए अनेक युक्तिया काम मे लाते है, विज्ञापन कापी को सचित्र बनाना भी इसी प्रकार की युक्ति है। (2)

मानव जीवन मूलत तीन प्रवृतियो से सचालित होता है– अहम् काम और हिसा (भय)। मनोवैज्ञानिको का विचार है, कि वास्तविक संसार हिसा (Vialence) और काम (Sex) से भरा हुआ है। इस हिसा और काम के अनेक रूप प्रकृति तथा जीवन के महत्वपूर्ण अग बन गए है, और मानव जाति को भी किसी न किसी रूप मे अनुप्राणित तथा प्रेरित करते रहते है। हिसा, काम तथा आक्रात्मकता के प्रति सर्वाधिक आकर्षण बालक बालिकाओ और युवा वर्ग मे पाया जाता है। इस आकर्षण के कारण इस वर्ग के व्यक्ति उन विज्ञापनो की ओर सबसे अधिक

1,2 जनमाध्यम और पत्रकारिता पृष्ठ – 583

आकर्षित होते है, जिसमे किसी न किसी रूप मे हिसा या काम की भावना दृष्टिगोचर होती है।

कुछ विज्ञापन जिन्हे बिना हिसा और कामोत्तेजक चित्रो के प्रदर्शित किया जा सकता है जैसे विभिन्न मॉडलो के दो पहिया वाहन आदि। किन्तु हीरो साइकिल, लिरिल साबुन, डेनिम, जैसे विज्ञापनो मे बिना किसी तर्क के युवा मॉडल के शरीर को प्रदर्शित किया जाता है जिसका कोई औचित्य नही होता। मनुष्य की प्राकृतिक प्रवृतियो का दोहन करना इन विज्ञापनो का उद्देश्य होता है।

विज्ञापन द्वारा ग्राहको को सीधे आदेश या निर्देश न देकर केवल सुझाव या आग्रह के रूप मे अपने उत्पाद का प्रचार करना उचित होता है।

(6) विज्ञापन और पत्रकारिता का सम्बन्ध –

पत्रकारिता और विज्ञापन के बीच अपरिहार्य और अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। विज्ञापन अपने आप मे व्यावसायिक होते हुए भी पत्रकारिता से जुडकर सोद्रदेश्य हो जाती है। जिसमे उत्पाद के प्रचार के साथ समाचार पत्र विज्ञापन एजेसी तथा उपभोक्ता का हित भी सयुक्त हो जाता है विज्ञापन कला का मुख्य तत्व सूचना प्रदान करने से सम्बद्ध है। अपने कार्यक्षेत्र और प्रकृति के अनुसार विज्ञापन भी तो व्यवहारत व्यावसायिक सचारक होता है। (1)

विज्ञापन विशेषज्ञ लश्कर के अनुसार "विज्ञापन मुद्रण के रूप मे विक्रय कला है।" शैलन के अनुसार "विज्ञापन एक ऐसी व्यापारिक शक्ति है जो मुद्रित शब्दो के द्वारा विक्रय करती है या विक्रय मे सहायता करती है और ख्याति का

1, जनमाध्यम और पत्रकारिता पृष्ठ – 576

निर्माण करके साख को बढाती है।" (1)

फ्रेक प्रेस्बे के अनुसार "विज्ञापन मुद्रित लिखित मौखिक या बिदु रेखीय विक्रय–कला है।" (2)

(7) विज्ञापन के गुण –

विज्ञापन के माध्यम से उत्पादक अथवा प्रचारकर्ता अपनी बात पूर्ण सफलता से वाछित पाठक, श्रोता या दर्शक तक प्रेषित करना चाहता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह अन्य बातो के साथ विज्ञापन की भाषा पर विशेष ध्यान रखता है। विज्ञापन के उपभोक्ता के अनुसार भाषा का चयन करता है जब किसी व्यक्ति से आमने सामने बातचीत की जाती है तो बातचीत का लहजा दूसरा होता है। वही बात किसी सचार माध्यम के द्वारा होती है, तो वहॉ पर बात करने का ढग औपचारिक और आलकारिक हो जाता है। वर्तमान समय मे सचार माध्यमो मे विशेषकर टीवी और रेडियो मे विज्ञापन की शैली अधिकाधिक अनौपचारिकता की ओर बढती जा रही है। यह भावनाओ को स्पर्श करती हुई कभी उन्हे दबाती, कुरेदती, छेडती और कभी सहलाती है। जिससे उपभेक्ता इन विज्ञापनो के जाल मे अनायास फसता चला जाता है। एक सफल विज्ञापन मे निम्न गुणो का होना आवश्यक है –

(क) आकर्षण क्षमता –

उपभोक्ता को प्रभावित करने के लिए विज्ञापन मे इस गुण का होना अनिवार्य है क्योकि मनुष्य की प्रकृति है, जब तक वह किसी के प्रति आकृष्ट नही होत्ा, तब तक वह उसकी ओर प्रवृत नही होता। विज्ञापन की भाषा को आकर्षक बनाने के लिए विज्ञापन कर्ता भाषा मे नए–नए प्रयोग अपनाता है –

1,2, जनमाध्यम और पत्रकारिता पृष्ठ – 576

"विज्ञापन की भाषा दोहरे अर्थो वाली होती है क्योकि एक स्तर पर यह चीजो, स्थितियो का प्रतिनिधित्व करते है, दूसरे स्तर पर यह आदेश देती है। यहॉ आप जो करते है, वही आपके बारे मे बहुत कुछ कह देता है यहॉ भाषा पारदर्शी नही होती।" (1)

(ख) <u>स्मरणीयता</u> –

विज्ञापन की भाषा मे आकर्षण होने के साथ–साथ उसमे स्मरणीयता का गुण होना भी आवश्यक है। इस गुण के द्वारा विज्ञापन मे पद्यात्मकता, तुकबन्दी, सज्ञा, पद्बन्ध, सूत्रात्मकता तथा क्रिया–विहीन वाक्यो का प्रयोग किया जाता है।

(ग) <u>पठनीयता</u> –

विज्ञापन की भाषा शैली ऐसी हो कि उसे हर वर्ग का पाठक सरलता से समझ सके। पाठक वर्ग के अनुकूल शब्दावली का प्रयोग विज्ञापन की भाषा को पठनीय बनाता है।

(घ) <u>नवीनता</u> –

विज्ञापनो की एक ही शब्दावली को सुनते, पढते उपभोक्ता ऊब जाता है। अत विज्ञापन को समय–समय पर नए रूप रग शब्द के साथ प्रस्तुत करना चाहिए। जिससे उपभोक्ता एकरसता से ऊब कर विज्ञापन की उपेक्षा न करने लगे।

(च) <u>तर्कपूर्ण</u> –

विज्ञापनो की भाषा चित्र और उत्पाद मे तर्कसगत सामजस्य होना

1, टीवी और विज्ञापन की भाषा, सुधीश पचौरी, हस 1998

आवश्यक है। कही ऐसा न हो कि उत्पाद का प्रचार करने के बजाए माडल का ही प्रचार प्रभावी हो जाए और उत्पाद तथा माडल के सम्बन्ध को समझने मे उपभोक्ता भ्रमित हो जाए।

(छ) **विक्रय–शक्ति सम्पन्नता** –

विज्ञापन को इस कौशल से प्रस्तुत करना चाहिए कि वह रोचक, मोहक और मस्तिष्क पर बार–बार प्रभाव डालने वाला तथा सम्बद्ध वस्तु को खरीदने अथवा अपनाने हेतु सबको प्रेरित करे अथवा अमुक वस्तु के प्रति आकाक्षा उत्पन्न करने मे सक्षम हो।

इस प्रकार विज्ञापन मे उपरोक्त गुणो का होना आवश्यक है।

(8) विज्ञापन के प्रकार –

समाचार पत्रो मे प्रकाशित होने वाले विविध विज्ञापनो को निम्नलिखित चार वर्गो मे बाटा जा सकता है –

(क) **स्थानीय विज्ञापन** –

जहा से पत्र प्रकाशन होता है उस स्थल विशेष से सम्बद्ध सूचना सदेश जो समाचार पत्र द्वारा प्रकाशित किया है जैसे, सिनेमा, नाटक, होटल, दुकान आदि सम्बन्धी विज्ञापन को स्थानीय विज्ञापन कहते है। स्थानीय विज्ञापन को आकर्षित करने के लिए विभिन्न समाचार पत्रो द्वारा विज्ञापन दाता को सुविधा और रियायते दी जाती है। (1)

(ख) **राष्ट्रीय विज्ञापन** –

ऐसे विज्ञापन पूरे राष्ट्र को ध्यान मे रखकर तैयार किए जाते है। केन्द्रीय

1, जनसचार और हिन्दी पत्रकारिता पृष्ठ 44

सूचना एव प्रसारण मत्रालय, परिवार कल्याण मत्रालय, के विज्ञापन, विभिन्न उपभोक्ता वस्तुओ के विज्ञापन इस श्रेणी मे आते हैं। ऐसे विज्ञापनो के आलेख मानक भाषा मे तैयार किए जाते है। अधिक प्रसार सख्या वाले राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रो मे इनका प्रका(ान होता है। 1)

ग) **<u>वर्गीकृत – विज्ञापन</u>** –

टेडर नोटिस, अदालत की सूचनाए, विभागीय विज्ञप्तिया, रोजगार समाचार, वैवाहिक विज्ञापन आदि वर्गीकृत विज्ञापन के अन्तर्गत आते हैं। 2)

घ) **<u>प्रदर्शन – विज्ञापन</u>** –

किसी सस्था, सिद्धान्त नीति, सगठन के सदे(ा इस विज्ञापन के अन्तर्गत आते है। राष्ट्र की भावानात्मक एकता अल्प बचत, पल्स पोलियो अभियान, राजनीतिक दलो का प्रचार पर्यावरण जागरूकता, सामाजिक कुरीतियो के विरूद्ध प्रचार आदि विज्ञापन इस श्रेणी मे आते हैं। 3)

प्रभाव की दृष्टि से विज्ञापन दो प्रकार के होते है –

1) **<u>विद्योयात्मक विज्ञापन</u>** –

"पौ फटी, सुबह हुई, बन्दर छाप,
काला दन्त मजन प्रयोग कीजिए" 4)

राहुल! कुछ भूले तो नही।
बाडी गार्ड वेसलीन पेट्रोलियम जेली
त्वचा की सम्पूर्ण सुरक्षा

1,2,3,4 जनसचार और हिन्दी पत्रकारिता, पृष्ठ 44

(2) **निषेधात्मक विज्ञापन** –

फेराडाल, न लेगे तो

शरीर कमजोर होगा (1)

विधि की दृष्टि से विज्ञापन दो प्रकार के है –

(1) **तर्कयुक्त विज्ञापन** –

विज्ञापित वस्तु को अपनाने, खरीदने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से वस्तु के पक्ष मे तर्क दिया जाता है –

दाम मे है किफायती

पानी मे रहकर भी ये, कम गले

ढेरो कपडे धोए, और ज्यादा चले। (2)

(2) **निर्देशयुक्त विज्ञापन** –

ऐसे विज्ञापनो मे बौद्धिक पक्ष के स्थान पर हृदय पक्ष को प्रभावित करने का प्रयास किया जाता है। विभिन्न उपभोक्ता वस्तुए सौन्दर्य प्रसाधन, आदि उत्पादो के विज्ञापन इस श्रेणी मे आते है।

आकर्षक, प्रभावी और सक्षिप्तता के साथ–साथ विज्ञापन का स्थान, प्रकाशन विधि, ये सब कुछ महत्वपूर्ण तत्व है जिससे विज्ञापन अपना वाछित प्रभाव उत्पन्न करने मे सक्षम होता है।

1,2 जनसचार और हिन्दी पत्रकारिता पृष्ठ 44

विज्ञापन के कार्य –

विज्ञापन के प्रमुख कार्य निम्नलिखित है –

(1) नई वस्तुओ और सेवाओ की सूचना योग्य उपभोक्ताओ तक पहुचाना।
(2) उपभोक्ता को वस्तुओ की श्रेष्ठता तथा उपयोगिता बतलाकर ध्यान आकर्षित करना।
(3) वस्तु के मूल्य, गुणवत्ता आदि मे होने वाले परिवर्तनो की जानकारी देना।
(4) उपभोक्ता माग मे वृद्धि तथा विक्रेता को माल की बिक्री मे सहायता देना।

विज्ञापन और समाचार में अन्तर –

समाचार पत्र के प्रकाशन के प्रारम्भ से आज तक हिदी विज्ञापन की भाषा मे विभिन्न परिवर्तन होता रहा है। आज की पत्रकारिता में विज्ञापन अहम स्थान रखते है। समाचार पत्र पत्रिकाओ के विज्ञापन परिशिष्ट मे प्रकाशित विज्ञापन लेख और अन्य लेखो मे अन्तर करना मुश्किल हो जाता है। कभी–कभी अपने उत्पाद या विचार का प्रचार करने के लिए विज्ञापनदाता ऐसे विज्ञापन प्रकाशित करवाने मे सफल हो जाते है जो समाचार का भ्रम उत्पन्न करते है। ऐसा ही एक विज्ञापन फिल्म 'क्रिमिनल' का प्रकाशित हुआ था "मनीषा कोइराला की हत्या कर क्रिमिनल फरार" इस विज्ञापन को समाचार कालम मे प्रकाशित किया गया था। जिसे पाठकों ने समाचार की तरह पढा और 'मनीषा कोइराला' के प्रशसको मे बदहवासी सी छा गई। जिससे विज्ञापनदाता महेश भट्ट को स्पष्टीकरण प्रकाशित करवाना पडा।

यद्यपि यह सत्य है कि समाचार पत्र की अर्थ व्यवस्था का मूल आधार विज्ञापन होते हैं किन्तु समाचार और विज्ञापन को एक दूसरे से अलग बनाए रखना जनहित के लिए अति आवश्यक है। विज्ञापनो को समाचार से अलग रखने के लिए कुछ नियमो का पालन किया जाता है। कभी अपवाद स्वरूप इन नियमो को भग किया जाए तो इसकी सूचना पाठक को अवश्य देनी चाहिए, जिससे वह समाचार (तथ्य) और प्रचार (विज्ञापन) मे अन्तर कर सके।

हिदी विज्ञापनो और समाचार मे मुख्य अन्तर निम्नलिखित है –

(1) समाचार का मुख्य उद्देश्य पाठको को सूचना देना होता है। समाचार की विश्वसनीयता पर पाठक को विश्वास होता है। जिसके असत्य होने पर न्यायालय मे चुनौती दी जा सकती है।

विज्ञापन मे तथ्य के साथ अतिशयोक्तिपूर्ण दावे विशेष परिस्थितियो के आधार पर किए जाते है। जिनके आधार पर न्यायालय मे चुनौती नही दी जा सकती।

(2) समाचार और विज्ञापन के निर्धारित कालम होते है जिससे पाठक आसानी से समाचार और विज्ञापन मे अन्तर कर लेता है।

(3) समाचार पत्र खरीदने का मुख्य उद्देश्य समाचार (सूचना) प्राप्त करना होता है, साथ मे विज्ञापन पर अनायास ही दृष्टि चली जाती है। यद्यपि इसका अपवाद भी है जैसे कुछ पाठक वैवाहिक–विज्ञापन, रोजगार सम्बन्धी विज्ञापन के लिए समाचार पत्र पढते है।

(4) समाचार को प्रकाशित करने का मुख्य उद्देश्य जनहित होता है, जबकि विज्ञापन प्रकाशित करने का मुख्य उद्देश्य उत्पादक का हित होता है।

(5) समाचार प्रकाशित करने का कोई शुल्क नही लिया जाता, जबकि विज्ञापन का प्रति शब्द के दर से शुल्क लिया जाता है।

(6) सत्य और निष्पक्ष समाचार प्रकाशित करने के उद्देश्य से समाचार पत्र प्रकाशित किए जाते है, मात्र विज्ञापन प्रकाशित करने क उद्देश्य से समाचार पत्र नही छापे जाते है।

(7) समाचार पत्र मे अनावश्यक प्रतीत होने वाले विज्ञापन ही समाचार पत्र के जीवनदाता है। विज्ञापनो पर ही समाचार पत्रो का जीवन आश्रित होता है।

<u>हिंदी विज्ञापन और उनकी भाषा</u> –

विज्ञापन की भाषा का विश्लेषण करने से पूर्व हिदी समाचार पत्रो के प्राचीन और नवीन विज्ञापनो के उदाहरण –

'भारत मित्र' के प्रथम अक 17 मई 1878 ई0 मे प्रकाशित विज्ञापन –

"दाद की दवाई बहोत बीजा लगाकर देखने से हाल मालूम होगा, एक वति का दाम चार आना" (1)

"पुराने बुखार की दवाई बहोत बढिया, बुखार वाले को विगर खिलाए मालूम नही होगा, बहोत जलदि निरोग होगा।" (2)

1,2, हिदी पत्रकारिता, कृष्ण बिहारी मिश्र पृष्ठ 106

"कान की दवाई बहोत उपकारी, कान का शुलकर्ण स्फीतता, कान का फोडा, कान मे पीप, कान मे कीडा, कान मे धमका, कामाक्षि शुनना और कण्डु इत्यादि सब रकम कान के आराम होय है।

दाम एक शिशि एक रूपया (1)

प्रारम्भिक समाचार पत्रो मे प्रकाशित विज्ञापनो की भाषा अपने प्रारम्भिक स्वरूप के कारण अशुद्धियो से युक्त थी जैसा कि उपर्युक्त विज्ञापन है। व्याकरणिक त्रुटियो से युक्त बहोत (बहुत) तथा ग्राम्य प्रयुक्ति सहित है, जो तत्कालीन जनता की भाषा प्रचलित रूप रहा होगा।

दाद दवाई बहोत (बहुत) बीजा (बार) लगाकर देखने से हाल (प्रभाव) मालूम (ज्ञात) होगा। एक वति (टिकिया या डिबिया) दाम (मूल्य) चार आना।

पुराने बुखार की दवाई (दवा) बहोत (बहुत) बढिया बुखार वाले को बिगर (बगैर) खिलाए मालूम नहि (नहीं) होगा, बहोत (बहुत) जलदि (जल्दी) निरोग होगा।

उपर्युक्त विज्ञापन मे एक पक्ति भ्रमित करने वाली है कि बुखार वाले को बिगर (बगैर) खिलाए मालूम नहि होगा से क्या आशय है। बिना खाए दवा का प्रभाव नही हो सकता, कहने की जगह यदि यह कहा जाता कि एक बार खिलाने पर ही असर करता है तो विज्ञापन अपना सदेश देने मे अधिक सफल होता।

1, हिदी पत्रकारिता, कृष्ण बिहारी मिश्र पृष्ठ 106

हिंदी विज्ञापनों में भाषा के विविध रूप –

हिदी विज्ञापनो मे भाषा के विविध रूपो का प्रयोग होता रहा है। जिन्हे निम्नाकित शीर्षको के अन्तर्गत रखा जा सकता है –

(1) समानान्तरता

(2) अप्रस्तुत विधान

(3) तुक और पद्यात्मकता

(4) मुहावरा और लोकोक्ति

(5) अतिशयोक्ति तथा तुलनात्मकता

(6) सूत्रात्मकता

(7) भाषासकर

(8) लेखमिक प्रयोग

(9) रहस्यात्मक प्रयोग

(10) इनामी योजना

हिदी विज्ञापनो मे सप्रेषण को विशेष प्रभावी बनाने के लिए वक्रता पूर्ण भाषा–शैली का प्रयोग किया जाता है जिसमे एक है –

(1) **समानान्तरता** –

"समानान्तरता का अर्थ है किसी भाषिक लक्ष्य या विधान की पुनरावृति की नियमितता।" (1)

समानान्तरता मे समान भाषिक इकाइयो की एक या अधिक बार आवृति होती है, अथवा दो या अधिक विरोधी भाषिक इकाइया साथ–साथ आती हैं।

1, सरचनात्मक शैली विज्ञान, डा0 रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव पृष्ठ 58

इस प्रकार समानान्तरता के दो रूप है एक वह जहॉ कथन के किसी अश को महत्वपूर्ण बनाने (उभारने) के उद्देश्य से व्याकरण के नियमो का पालन किचित अतिशयता के साथ किया जाता है। दूसरा, जहॉ समान या विरोधी इकाइयो की पुनरावृति की जाती है। इन दोनो के आधार पर समानान्तरता का सक्षेप मे आशय है – वाहय और आन्तरिक आवृति। (1)

समानान्तरता के तीन भाग है–

(क) **ध्वनीय समानान्तरता** –

इसमे समान ध्वनियो की आवृति होती है। भारतीय आचार्यो द्वारा प्रयुक्त अनुप्रास और उसके विभिन्न भेदो मे यह भी है। हिदी विज्ञापन (की भाषा) मे ध्वनि (वर्ण) की आवृति के कारण अनायास उत्पन्न समानान्तरता देखी जा सकती है। समान वर्णो की (पुन–पुन) आवृति से मधुरता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। (2)

ध्वनीय समानान्तरता के कुछ उदाहरण –

1 " साफ सुथरी स्थिर और तीखी तस्वीरे "

2 " मधुर मुलायम मजेदार चाकलेट का मेल "

3 " अगर आप अपनो को ठड से बचाना चाहती है तो प्यारे न्यू बूल शिक स्पाटर्स हिदुस्तान की सर्वोत्तम उन से बुनो।" (3)

(ख) **शब्दीय समानान्तरता –**

आधुनिक शैली विज्ञान मे समान शब्दो की आवृत्ति को शब्दीय समानान्तरता कहा जाता है काव्यशास्त्रीय दृष्टि से इसे पुनरूक्ति कहा जाता है

1, भारतीय शैली विज्ञान, डा0 सत्यदेव चौधरी पृष्ठ 289

2,3, हिन्दी विज्ञापन की भाषा, आशा पाण्डेय, पृष्ठ 66

उदाहरण –

1 "डिजाइन ज्यादा, रग ज्यादा।
ढग ज्यादा, शानदार ज्यादा "

2 " कुदरती चमक! कुदरती दम! कुदरती ताजगी
ग्लीम नेचुरल टूथपेस्ट "

3 " सौन्दर्य श्रृगार – सौन्दर्य साबुन लक्स से " (1)

ग. <u>वाक्यीय समानान्तरता –</u>

समान सरचना परक वाक्य की आवृति अथवा विरोध परक वाक्यो की आवृति वाक्यीय समानान्तरता कहलाती है। समतुल्यता के आधार पर वाक्यीय समानान्तरता दो प्रकार की मानी गयी है। –

1 समता परक 2 विरोध परक

1 <u>समता परक वाक्यीय समानान्तरता</u> –

(1) " लो फिर आ गयी, लो फिर आ गई – प्योर बूल "

(2) " अपने विज्ञापन दिल्ली मे ही दिजिए।
अपने विज्ञापन हिन्दी मे ही दीजिए।
अपने विज्ञापन शाम के वक्त ही दीजिए ।

(3) "फ्लैश अपनाइए, मुस्कान फैलाइए।" (2)

1,2 हिन्दी विज्ञापन की भाषा, आशा पाण्डेय, पृष्ठ 66,67

(2) विरोध परक वाक्यीय समानान्तरता –

सरचना की दृष्टि से समान वाक्य होने पर भी जहॉ अर्थपरक वैषम्य होता है, वहॉ विरोधपरक वाक्यीय समानान्तरता होती है, विज्ञापन प्राय वस्तु के गुणो तथा लाभ को उभारते है अवगुणो और हानि का निषेध करते हैं ऐसी स्थिति के लिए विरोध परक उक्तियो का सहारा लिया जाता है।

(1) " सुपर लहर टिकिया———
ज्यादा चलती है क्यो कि कम गलती हैं।"

(2) " निरमा सुपर————
दाम मे कम, काम मे दम"

ज्यादा और कम, दाम मे कम, काम मे दोनो विशेषण विरोधी है, ध्वनीय, शब्दीय और वाक्यीय समानान्तरता विज्ञापन मे सगीतात्मकता की स्थिति उत्पन्न कर देती है जो सम्प्रेषण मे प्रभावशाली होती है। इस शैली का पाठक पर विशेष प्रभाव पडता है। (1)

अप्रस्तुत विधान –

विज्ञापनो मे साम्य या सादृश्य की प्रवृति अधिक दिखाई देती है। प्रस्तुत वस्तु (विज्ञापित वस्तु) का अप्रस्तुत वस्तु के साथ सादृश्य दिखाकर वस्तु के महत्व को बढाया जाता है, अप्रस्तुत का विधान केवल उपभोक्ता वस्तु के विज्ञापनो मे ही मिलता है। अन्य प्रकार के विज्ञापनो (सार्वजनिक सेवा, प्रतिष्ठा परक वर्गीकृत आदि) मे इसका नितान्त अभाव है। शब्द साम्य के आधार पर अप्रस्तुत विधान को दो भागो मे विभाजित किया जा सकता है।

1, हिन्दी विज्ञापन की भाषा, आशा पाण्डेय, पृष्ठ 68,69,70

(क) रचना परक अप्रस्तुत विधान

(ख) विशेषण रूप मे अप्रस्तुत विधान

(ग) बिम्बात्मक अप्रस्तुत विधान

(क) **रचनापरक अप्रस्तुत विधान** –

विज्ञापन की भाषा मे अप्रस्तुत का प्रयोग कई प्रकार से मिलता है, कही श्लिष्ट शब्दो के बल पर प्रस्तुत और अप्रस्तुत मे साम्यलक्षित किया जाता है, कही विशेषण के प्रयोग द्वारा। अप्रस्तुत विधान द्वारा विज्ञापनो मे नई प्राणवत्ता का सचार किया जाता है। जिससे भाषा स्मरणीय और आकर्षक बन जाती है जो व्यावसायिक भाषा का मुख्य उद्देश्य होता है।

" नील जगत मे अद्भुत नाम, जल ज्योति "

यहाँ नील–जगत श्लिष्ट शब्द है, एक अर्थ है, नील (कपडो मे लगाने वाली) दूसरा – ससार। नील जगत अर्थात सम्पूर्ण ससार मे जल ज्योति एक अद्भुत नाम है, नील के ससार मे जल ज्योति नील विशिष्ट है – नील (प्रस्तुत) के साथ नील जगत चराचर (नीला) ससार (अप्रस्तुत) का साम्य प्रस्तुत कर विज्ञापन के कथा को प्रभावशाली बनाया गया है।" (1)

विशेषण रूप में अप्रस्तुत विधान –

कुछ विशेषण ऐसे होते है, जो अपने मूल रूप मे अप्रस्तुत विधान के उदाहरण होते है, किन्तु बहुप्रयोग के कारण तथा एक शब्द बन जाने के कारण वे सामान्य विशेषण दिखाई पडते हैं।

(1) अब आ गई 'स्पिरित आफ मैन"
दुनिया की सबसे पहली हर्बल शेविग क्रीम
(या फिर हर सुबह पाए एक मुक्त फेशियल)

1, हिन्दी विज्ञापन की भाषा, आशा पाण्डेय, पृष्ठ 70,71

प्रस्तुत विज्ञापन मे " स्पिरित आफ मैन" विशेषण उत्पाद का नाम होने के साथ साथ वस्तु की विशेषता और पुरूष के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता के रूप मे किया गया है। जिसके बिना पुरूष अपूर्ण होता है, और कोई भी पुरूष इस विज्ञापन को चुनौती के रूप मे लेगा। " स्पिरित आफ मैन ' सज्ञा और विशेषण एक साथ होने के अतिरिक्त प्रस्तुत (उत्पाद) को (अप्रस्तुत) 'स्पिरित आफ मैन' के रूप मे प्रस्तुत किया गया है।

(ख) **बिम्बात्मक अप्रस्तुत विधान**–

बिम्बात्मक शैली का सबसे प्रमुख साधन है अप्रस्तुत। जहॉ प्रस्तुत और अप्रस्तुत पदार्थो मे किसी समान धर्म के आधार पर सादृश्य दिखाया जाता है। और फलस्वरूप किसी बिम्ब को उभारा जाता है, वहॉ बिम्बात्मक अप्रस्तुत विधान माना जा सकता है। (1)

बिम्बात्मक अप्रस्तुत विधान सादृश्य पर आधारित होता है, विज्ञापन मे मिलने वाले अप्रस्तुत विधान मे उपमा, रूपक का प्रयोग अधिक मिलता है। सादृश्य–उपमा के उदाहरण –

1 मसूडे मजबूत हो तो, दॉत भी मजबूत होगे।
उस पेड की तरह,
डाबर लाल दन्त मजन, जड से मजबूत दॉत।

प्रस्तुत विज्ञापन मे दॉत और मसूडे को मजबूती की उपमा मजबूत जड वाले पेड से दी गयी है।

2 दूध सी सफेदी निरमा से आये
सबकी पसन्द निरमा

1,भारतीय शैली विज्ञान, डा0 सत्यदेव चौधरी पृष्ठ 37

निरमा वाशिग पाउडर से होने वाली सफेदी की उपमा दूध सी सफेदी से दी गयी है जो अनूठी और मोहक होती है। (1)

विज्ञापन की भाषा मे अप्रस्तुत विधान बहुलता से प्राप्त होते है जो विज्ञापन की प्रभावात्मकता मे चार चॉद लगा देते हैं।

3 **तुक और पद्यात्मकता** –

हिंदी विज्ञापनो का एक महत्वपूर्ण तत्व है – तुकबन्दी तथा पद्यात्मकता। सचार के अन्य साधनो श्रृव्य (रेडियो), दृश्य और श्रृव्य (दूरदर्शन) से प्रसारित विज्ञापनो मे स्वरो के उतार चढाव और शारीरिक क्रिया – व्यापारो द्वारा सदेश की स्पष्ट किया जाता है, जो अधिक रोचक होता है। लिखित माध्यम मे शब्दो के छोटे बडे, आडे तिरछे, बाक्स, स्टार, दिल जैसे ले आउट द्वारा विज्ञापन को आकर्षक व प्रभावी बनाया जाता है इसके साथ सटीक आकर्षक तस्वीर होने के साथ साथ तुकबन्दी और पद्यात्मकता विज्ञापन को रोचक और स्मरणीय बना देता है " लाइफबाय" साबुन के विज्ञापन की यह तुकबन्दी पुरानी होते हुए भी प्रभावी है –

" लाइफबाय है, जहॉ तदरूस्ती है वहॉ,

लाइफबाए————"

कड्बरीज चाकलेट का विज्ञापन –

" क्या स्वाद है, जिन्दगी मे,

कुछ स्वाद है बात है, खास है, जिन्दगी मे।"

प्रस्तुत विज्ञापनो मे साधारण सी बात लयात्मक लहजे मे कहकर स्मरणीय और रोचक बना दिया गया है।

1, हिन्दी विज्ञापन की भाषा, आशा पाण्डेय, पृष्ठ 71, 72,

ब्रिटानिया विस्किट का विज्ञापन –

हैं! दूध है या पानी, फिफ्टी – फिफ्टी

खाओ ब्रिटानिया फिफ्टी – फिफ्टी

व्हेरी – व्हेरी, टेस्टी – टेस्टी

अकल चिप्स का विज्ञापन –

"बोले मेरे लिप्स, आई लव अकल चिप्स"

तुक और पद्यात्मक विज्ञापनो की सख्या बहुत अधिक है।

(4) **मुहावरा और लोकोक्ति** –

विज्ञापन मे प्रवाह और आकर्षण के लिए मुहावरे और लोकोक्ति युक्त भाषा का प्रयोग किया जाता है। जिससे विज्ञापन की सप्रेषण क्षमता मे कई गुना वृद्धि हो जाती है।

1 "सरसिल्क पहनिए और

अपनी शान बढाइए

आप जहॉ भी जायेगे

कामयाबी आपके कदम चूमेगी" (1)

2 "रीजेन्ट किग से अपनी खुशियो मे

चार चॉद लगाइये।" (2)

3 रग जमा दे, धूम मचा दे,

पान पराग, पान मसाला, पान पराग———— "

1, 2, हिदी विज्ञापन की भाषा – आशा पाण्डेय पृष्ठ 72, 73

(5) **अतिशयोक्ति तथा तुलनात्मकता –**

स्वतत्रता के पश्चात विज्ञापनो मे अतिशयोक्ति तथा समकक्ष उत्पादो से तुलना और अपने उत्पाद की श्रेष्ठता सिद्ध करने की प्रवृति बढती ही जा रही है। विज्ञापन मे कभी – कभी दूसरे उत्पाद को फेकते, उसका मजाक उडाते हुए प्रदर्शित किया जाता है, जो उन दर्शको और पाठको के अवचेतन मन मे हीन भावना जागृत करता है जो विज्ञापित उत्पाद का प्रयोग करने मे सक्षम नही हैं। ऐसे विज्ञापन ईर्ष्या की प्रवृति को बढावा देते हैं, जिससे सामाजिक सद्भाव मे कमी और फिजूलखर्ची को बढावा मिलता है। अतिशयोक्ति पूर्ण विज्ञापन का एक उदाहरण –

सफेदी की चमकार बार – बार

नये सुपर रिन से

इस विज्ञापन के कथानक मे प्रदर्शित किया है दो महिलाये शोरूम मे जाती है जो महिला रिन से घुली साडी पहने हुए है उसे दरवाजे पर खडा चौकीदार सलाम करता है और दूसरी महिला जो साधारण साडी पहने हैं उसके लिए दरवाजा नही खोलता, वही महिला जब " रिन" से धुली साडी पहनकर जाती है तो चौकीदार उसे भी सलाम करता है।

इस विज्ञापन तथा ऐसे अन्य विज्ञापनो को देखकर मन मे कई प्रश्न उभरते है कि दस–बीस रूपये के तमाम उत्पादो का सम्मान, उन अनमोल व्यक्तित्व के मालिक जीते–जागते इसानो से अधिक प्रदर्शित किया जाता है। व्यक्ति को महत्व न देकर उसके टूथपेस्ट, साबुन, क्रीम, पाउडर, नेल–पालिश, चप्पल, जूते, फर्नीचर, मोपेड स्कूटर आदि अधिक महत्वपूर्ण प्रदर्शित किये जाते हैं। अतिशयोक्ति पूर्ण विज्ञापन मे कही गई तमात बातो को सत्य सिद्ध करना मुश्किल होता है। विज्ञापन दावो मे कितनी सच्चाई होती है, कहना कठिन है

एक विज्ञापन –

" श्रेष्ठतम पदार्थो और आधुनिकतम तकनीक से बने बजाज बल्ब "

" दुनिया के सर्वोत्तम बल्बो की बराबरी करते हैं।"

(6) सूत्रात्मकता –

तुकबन्दी और पद्यात्मकता के अतिरिक्त विज्ञापन मे एक और प्रकार के वाक्य मिलते है जिन्हे सूत्र या स्लोगन कहा जाता है –

1 " स्वाद भरे, शक्ति भरे! पारले जी।"

2 " चटपटा स्वाद, झटपट आराम – ' डाबर का हाजमोला "

विज्ञापन मे ऐसे प्रयोग विज्ञापन को रोचक और जीवन्त बनाने के साथ कम शब्दो मे सदेश व्यक्त करने मे सक्षम होते हैं जो एक सफल विज्ञापन के लिए आवश्यक है।

(7) भाषा – संकर –

विज्ञापनो मे हिन्दी, सस्कृत, उर्दू, अग्रेजी के शब्दो का मिश्रित प्रयोग साहित्यक दृष्टि से भाषा को हास्यापद बनाता है, किन्तु विज्ञापन मे ऐसी भाषा रोचक तथा प्रभावी होती है। भाषा की इस प्रवृति को "भाषा सकर" की संज्ञा दी गई है, विज्ञापन मे ऐसी भाषा का प्रयोग अधिकाधिक हो रहा है।

उदाहरण –

1 'सबसे आगे———————— 120 बाबा जाफरानी जर्दा'

2 ' तीन लक्स के साथ एक लक्स मुफ्त'

3 " डिजाइनो का कोई कापी राइट नही है———"

लेकिन गुणवत्ता की नकल करना भी कोई सहज काम नहीं"

4 वाह! असली रत्ना छाप न0 300 का मजा ही कुछ और है।"

5 "रेड एण्ड व्हाइट" पीने वालो की बात ही कुछ और है।

अग्रेजी शब्दो का देवनागरी लिपि के साथ रोमन लिपि मे प्रयोग की प्रवृति विज्ञापनो मे तेजी से बढी है, इसका उददेश्य विज्ञापन के प्रति ध्यान आकर्षित करना, तथा विज्ञापन की अपनी विशेष पहचान बनाना है।

1 M R F लम्बी दूरी तय करने मे सबसे आगे

2 जी0 पी0 पेश करते हैं Shrink - scsist

8. <u>लेखमिक प्रयोग –</u>

दृश्य और श्रृव्य माध्यम के विज्ञापनो मे स्वरों के उतार – चढाव तथा आकर्षक दृश्यो के माध्यम से आकर्षण उत्पन्न किया जाता है। मुद्रित माध्यम मे आकर्षक रेखाचित्र, छोटे के इटैलिक तथा हस्तलिखित टाइप द्वारा विज्ञापन को आकर्षक बनाया जाता है।

9 <u>रहस्यात्मक प्रयोग –</u>

कुछ गोपनीय वस्तुओ के विज्ञापन मे रहस्यमय शब्दावली का प्रयोग किया जाता है जिसे ध्यान से पढने पर ही समझा जा सकता है। ऐसी वस्तुऐ है गर्भ निरोध के साधन, व्हिस्की तथा विभिन्न ब्रांड के अन्तर्वस्त्र आदि।

उदाहरण –

1 इक फव्वारे सा फूटे
प्रेमियो का जोश
जब हवा मे टकराए

वो यादो मे मदहोश

मॉगिए तो बस " के एस"

Kam Sutra
Preium Condoms

2 न0 1 मेरा न0 1 मैक्डोनल सोडा

ऐसे विज्ञापनो का उद्देश्य गोपनीय सदेश विशेष पाठको तक प्रेषित करना होता है, जिसमे वे सफल होते है और अश्लीलता के आरोप से मुक्त रहते है।

10 **<u>इनामी योजना</u>** –

विज्ञापनो को लोकप्रिय ओर आकर्षक बनाने के लिए समय–समय पर इनामी योजना, एक उत्पाद के मूल्य पर एक और फ्री या अन्य कोई इनाम के आकर्षक उपभोक्ता को आकर्षित करने के लिए दिया जाता है, इसका लाभ यह होता है कि अधिकाश उपभोक्ता आवश्यकता न होने पर भी वस्तु के लालच मे खरीद लाते है।

उदाहरण –

(1) " ये आराम का और गाडियो का मामला है"

(2) " बजाज सुपर "

करोडपति आफर – सबसे बडा रूपैया। "

हिन्दी विज्ञापनो की भाषा के विश्लेषण मे चुने हुए समाचार पत्र पत्रिकाओ के मात्र उपभोक्ता और राष्ट्रीय स्तर के उत्पादो के विज्ञापनो का चयन किया गया है अन्य विज्ञापन जैसे वैवाहिक विज्ञापन, अदालती सूचना, प्रशासन सम्बन्धी सूचना, रोजगार समाचार आदि विज्ञापनो को विषय विस्तार के कारण छोड दिया गया है। इसके साथ उपभोक्ता विज्ञापन मे सलग्न तस्वीरो के सम्बन्ध मे विश्लेषण नही किया गया है।

हिन्दी विज्ञापनो की भाषा समाचार की भाषा से कुछ भिन्न होते हुए भी पत्रकारिता का अनिवार्य अग है, जनहित को सर्वोपरि रखते हुए समाचार और विज्ञापन की भाषा मे अन्तर होना आवश्यक है।

पंचम अध्याय

स्वातंत्र्योत्तर भारत मे संचार माध्यम और भाषा –

(क) परम्परागत सचार माध्यम–

(1) मौखिक प्रचार

(2) लिखित प्रचार

(3) मेला

(4) नाटक (नुक्कड नाटक, नौटकी, तमाशा)

(5) कठपुतली

(ख) गैर परम्परागत (आधुनिक) सचार माध्यम

(1) समाचार पत्र

(2) रेडियो (आकाशवाणी)

(3) टी वी (दूरदर्शन)

(4) टेलीफोन (दूरभाष)

(5) कम्प्यूटर (इटरनेट, स्कैन सेवा)

(6) वीडियो पत्रिका

(7) फैक्स

(8) पुस्तके

(9) फिल्म

(10) वृत्तचित्र

(11) प्रदर्शनी

(12) विभिन्न माध्यमो द्वारा विज्ञापन

पंचम अध्याय

स्वातंत्र्योत्तर भारत में संचार माध्यम और भाषा

" मानवीय सवेदनाओ और अनुभूतियो के पारस्परिक आदान – प्रदान को " सचार " कहते हैं।" (1)

सुगमता के लिए व्यवहारिक रूप मे हम सचार को हिन्दी मे सवाद के अर्थ मे भी ग्रहण कर सकते है सचार या सवाद की प्रक्रिया कही अत्यन्त सूक्ष्म और कही अत्यन्त स्थूल होती है जब मानव मन स्वय को व्यक्त के लिए केवल सकेतो की भाषा मे बात करता है, तब यह अभिव्यक्ति सचार की सूक्ष्म स्थिति होती है, और जब भाषा का प्रयोग किया जाता है तो अभिव्यक्ति का भौतिक स्वरूप स्थूल हो जाता है।

मनुष्य के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक अथवा सास्कृतिक जीवन पर सचार का व्यापक प्रभाव पडता है, यदि यह कहा जाए कि मनुष्य के सामान्य ज्ञान का अधिकाश भाग सचार माध्यम की ही देन है तो अत्युक्ति नही।

विभिन्न सचार माध्यमो को मुख्यत दो भागो मे विभाजित किया जा सकता है –

1 परम्परागत सचार माध्यम –

2 गैर परम्परागत (आधुनिक) सचार माध्यम

1, जनमाध्यम और पत्रकारिता, प्रवीण दीक्षित भाग 1 पृष्ठ 1

परम्परागत सचार माध्यमो मे मुख्य है –

1 मौखिक प्रचार

2 लिखित प्रचार

3 मेला (तीर्थ स्थान)

4 नाटक (नुक्कड नाटक, नौटकी, तमाशा आदि)

5 कठपुतली।

1 **मौखिक प्रचार** –

सचार माध्यमो मे सबसे सीधा सस्ता और सरल माध्यम मौखिक प्रचार है यह भारत का ही नही, विश्व का सर्वाधिक प्राचीन परम्परागत सचार माध्यम रहा है, विभिन्न धर्माचार्यों ने अपने सदेश के प्रचार के लिए मौखिक प्रचार को अपना माध्यम बनाया। आज भी मौखिक प्रचार एक प्रभावशाली सचार माध्यम है।

2. **लिखित प्रचार** –

प्राचीन काल से सचार के लिए लिखित माध्यम का प्रयोग होता रहा है, भारत मे विभिन्न स्थानो से पाए गये अशोक तथा अन्य शासको के लेख, लिखित प्रचार का उदाहरण है, आज भी सचार साधनों मे सर्वाधिक प्रभावी लिखित माध्यम भी है।

3. **मेला (तीर्थ–स्थान आदि)** –

सम्पूर्ण भारत मे आज भी समय समय पर लगने वाले मेलो का मुख्य

उद्देश्य प्रचार करना होता है, दूरदराज के क्षेत्रो मे जहॉ आज भी आधुनिक सचार माध्यम उपलब्ध नही है, वहॉ ये मेले ग्रामीण, आदिवासी जनता को शिक्षित करने, उन्हे नई जानकारी देने तथा सदेश प्रेषित करने का एक सक्षम माध्यम बना हुआ है। इन मेलो मे जनता की भाषा मे जनता के द्वारा जनहित मे सूचनाओ का प्रसार किया जाता है, जिस क्षेत्र मे मेला लगता है, वहॉ की स्थानीय बोली या भाषा का प्रयोग किया जाता है।

4 **नाटक** –

देश के दूर दराज क्षेत्रो मे जहॉ आधुनिक सचार माध्यम आज भी अपनी पकड बनाने मे पूरी तरह सफल नही हो पाए हैं। वहीं ऐसे क्षेत्रो मे नाटक (नौटकी, राम लीला, तमाशा, नुक्कड–नाटक, विदेशिया) सचार का एक सशक्त माध्यम है। नाटक के माध्यम से जनहित मे सदेश दूरदराज के क्षेत्रो मे सफलता पूर्वक प्रेषित किए जा सकते हैं।

5 **कठपुतली** –

सचार माध्यमो मे 'कठपुतली' सचार का प्रभावी माध्यम है। धीरे धीरे लुप्त होते इस माध्यम को बचाने तथा इसके और अधिक प्रभावी उपयोग की आवश्कता है। कठपुतली प्रदर्शन के द्वारा ग्रामीण इलाको मे परिवार कल्याण, साक्षरता मिशन, समाज कल्याण जैसे कार्यक्रमो के सदेशों को सफलतापूर्वक प्रेषित किया जा सकता है।

सचार के आधुनिक माध्यमो का विकास होने के बावजूद परम्परागत

सचार माध्यमो का महत्व कम नही हुआ है इन माध्यमो का अब वैज्ञानिक ढग से प्रयोग कर सचार के क्षेत्र मे नई उपलब्धियॉ प्राप्त की जा सकती है।

गैर परम्परागत (आधुनिक) सचार माध्यम –

विज्ञान के नवीनतम आविष्कारो का सर्वाधिक लाभ सचार के क्षेत्र मे हुआ है, इन आविष्कारो के कारण आज पूरा विश्व एक गॉव जैसा लगता है, इन माध्यमो के कारण दूरियॉ घट गई है। आधुनिक सचार माध्यमो में प्रमुख हैं –

1 समाचार पत्र

2 रेडियो

3 टी0 वी0

4 टेलीफोन

5 कम्प्यूटर (इटरनेट, स्कैन सेवा)

6 वीडियो–पत्रिका

7 फैक्स

8 पुस्तके

9 फिल्म

10 वृत चित्र

11 प्रदर्शनी

12 विभिन्न माध्यमो द्वारा विज्ञापन

समाचार पत्र –

आधुनिक सचार माध्यमो मे समाचार पत्र प्रमुख सचार माध्यम है, इसके जन्म का

उद्देश्य ही प्रचार या जानकारी के प्रसार से था। भारत का सर्वप्रथम समाचार पत्र '' जेम्स आगस्टस हिक्की'' ने 1780 ई0 मे 'बगाल गजट' अथवा 'कलकत्ता जनरल एडवर्टाइजर' के नाम से निकाला। उसने ईस्ट इडिया' कम्पनी के उच्चतम अधिकारियो, न्यायाधीशो तक की करतूतो का पर्दाफाश किया था। यह सौदा उसे महगा पडा, उसे जेल जाना पडा। (1)

हिन्दी का प्रथम समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' था जो कलकत्ता से 1828 मे प्रकाशित हुआ, जिसके सपादक 'युगल किशोर शुक्ल 'थे। (2)

स्वतत्रता सघर्ष के दौरान भारतीय भाषाओ मे निकलने वाले समाचार पत्रो की लोकप्रियता सरकार के लिए चिता का विषय बनी रही, नये–नये कानून बनाकर वह इन पत्रो के प्रकाशन को बाधित करने का यथा सभव प्रयास करती रही।

सचार माध्यमो मे समाचार पत्र का महत्व अधिक है। रेडियो टी0वी0 पर जो सुना देखा जाता है उसकी लिखित रूप से पुष्टि नही होती है। किन्तु समाचार पत्र को तो कभी भी उठाकर देखा और पढा जा सकता है। छपे हुए समाचार को चाहे वह गलत ही क्यो न हो, जनता प्रमाणित मानती है, किसी भी घटना के प्रमाण रूप मे समाचार पत्र का उदाहारण दिया जाता है।

सचार माध्यम के रूप मे समाचार पत्रो की भाषा के विविध आयाम प्राप्त होते हैं, स्वतत्रता के पूर्व समाचार लेखन मे सौम्यता और भद्रभाषा के प्रयोग का पूरा ध्यान रखा जाता था, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के पास एक विद्वान लेखक का लेख '' सरस्वती '' मे प्रकाशित होने के लिए आया। जिसमे लिखा

1,2,, जनसम्पर्क ले0 मदन गोपाल पृष्ठ 14

था " काबुल मे गधे भी होते है।" द्विवेदी जी कई दिनो तक सोचते रहे कि कैसे इस अश को निकाले कि गधा शब्द न रहे और अर्थवक्ता मे अन्तर न आये। बहुत विचार के बाद उन्होने इस पक्ति को यो सुधार दिया " काबुल मे सब घोडे नही होते।" (1) समकालीन पत्रकारिता मे शायद ही थोडे पत्रकार ऐसा सपादन करते हो। अब तो बिना अर्थ समझे " चूना लगाया" लिखा जाता है। जिसे सुसस्कृत व्यक्ति कभी नही बोल सकता। (2)

किसी स्त्री खासकर अविवाहित लडकी की अस्मत लुट जाने के समाचार मे स्त्री या लडकी का नाम नही दिया जाता था, जिससे उसकी बदनामी न हो। पराडकर जी ने तो " बलात्कार" शब्द का प्रयोग प्रतिबन्धित कर दिया था उसकी जगह शीलभग, शीलहरण शब्द लिखे जाते थे। (3)

आज की पत्रकारिता मे बलात्कार शब्द ही केवल नही लिखा जाता बल्कि आततार्इ की हवस की शिकार महिला का नाम पता सचित्र प्रकाशित कर दिया जाता है। बिना यह सोचे समझे की इस प्रकार प्रचार हो जाने पर उस बेचारी महिला और उसके परिवार की क्या दशा होगी।

समाचार पत्रो का कार्य है सूचना देना, व्याख्या करना, शिक्षा देना और मनोरजन करना। चारो कार्य समकालीन पत्रकारिता पूरी जिम्मेदारी और ईमानदारी के साथ नही कर रही है या नही कर पा रही है शिक्षित करने का तो जैसे उनका कोई दायित्व ही नही रहा। पत्रकारिता के कारण भाषाई

1,2,3, समकालीन पत्रकारिता, स0 राजकिशोर पृष्ठ–26,27,28

सस्कार बिगड जाने का एक उदाहरण –

सस्कृत विश्वविद्यालय मे शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण एक लडकी ने पत्र मे हुई के बजाऐ हुयी लिखा। जब पूछा गया कि तुमने बडी ई के स्थान पर यी क्यो लिखा तो उसने उत्तर दिया की हिन्दी अखबारो मे तो ऐसा ही छपता है। (1)

समकालीन पत्रकारिता मे समाचार लेखन, सपादन मे एक दोष यह देखने मे आया है कि पत्रकार मूल को न पकड कर पत्ते गिनने मे लगा रहता है। एक उदाहरण – प्रधानमत्री या राष्ट्रपति या किसी अन्य ने बहुत बडे बॉध या अन्य परियोजना का उद्घाटन किया, तो पत्र लिखेगा – " प्रधानमत्री ने आज यहॉ घोषणा की कि दस वर्ष मे देश मे कोई भी गरीब नही रह जायेगा। उन्होने विरोधी दलो के गठबन्धन को अपवित्र कहा, और चेतावनी दी की जनता उसके चक्कर मे न आये" इसके बाद लिखा जायेगा, प्रधानमत्री ने जो डेढ अरब रूपये की लागत से निर्मित अमुक बॉध का उद्घाटन कर रहे थे, कहा कि———
"बडी बात प्रधानमत्री का प्रोपगेडा नही, अपितु यह है कि उन्होने डेढ अरब रूपये की लागत से बने बॉध का उद्घाटन किया। इसलिए रिर्पोट वस्तुत इस प्रकार शुरू होनी चाहिए, " प्रधानमत्री ने आज यहॉ डेढ अरब रूपये की लागत से निर्मित बॉध का उद्घाटन किया। शेष विवरण इसके बाद आना चाहिए था।" (2)

समकालीन पत्रकारिता मे भाषा मे अधिक प्रभावात्मकता लाने के लिए कभी कभी ऐसा भाषा का प्रयोग किया जाता है जो प्रभाव तो उत्पन्न करती है किन्तु उस शब्द विशेष से समाचार की शालीनता समाप्त हो जाती है।
एक उदाहरण – जैसे किसी सडक की खराबी का वर्णन करते हुए शीर्षक दिया गया " मुज्जफरपुर की गर्भ गिराऊ सडके " (3)

1,2,3 समकालीन पत्रकारिता, स0 राजकिशोर पृष्ठ–28,29

गर्भ गिराऊ शब्द शालीन नही का जा सकता।

अपनी कुछ सीमाओ के बावजूद समाचार पत्र सचार का एक सशक्त माध्यम है।

2. <u>रेडियो (आकाशवाणी)</u> –

भारत मे रेडियो का सर्वप्रथम प्रसारण सेवा का आरम्भ 23 जुलाई 1927 ई0 को इण्डियन ब्राड कास्टिग कपनी के नाम से 15 किलो वाट की क्षमता से हुआ। इस प्रथम भारतीय प्रसारण केन्द्र का उद्घाटन तत्तकालीन वॉयसरय "लार्ड इर्विन" ने किया था। (1)

भारत के 70 प्रतिशत ग्रामीण जो आज भी साक्षरता से कोसो दूर है जहॉ आज भी सडके नही पहुॅच पाई है, जहॉ चिठि्ठयॉ महीनो बाद पहुॅचती है और गरीबी का साम्राज्य है। ऐसे कठिनाइयो से भरे देश के दूर दराज इलाको मे रहने वाले ग्रामीणो के लिए रेडियो सचार का सबसे सुलभ, सरल और उपलब्ध माध्यम है। जो ग्रामीणो को शिक्षित करता है, सूचना देता है, व्याख्या करता है और मनोरजन करता है। आकाशवाणी द्वारा विभिन्न वर्गो के लिए प्रसारित कार्यक्रम जनता के सभी वर्ग की अपनी ओर आकर्षित करने मे सक्षम है। आकाशवाणी के विभिन्न कार्यक्रम जैसे – किसानो के लिए कार्यक्रम " चौपाल" ग्रामीण महिलाओ के लिए कार्यक्रम "पनघट" स्वास्थ्य चर्चा, रूपक (हवामहल), शैक्षिक कार्यक्रम विभिन्न कक्षाओ से सम्बन्धित कार्यक्रम, रोजगार समाचार, समाचार बुलेटिन, और आकाशवाणी का मनोरजन चैनल " विविध भारती" के विभिन्न मनोरजन के कार्यक्रम।

सचार के अन्य माध्यमो विशेषकर टी0वी0 का प्रसार ग्रामीण क्षेत्रो होने के बावजूद रेडियो आज भी सचार माध्यमो मे सर्वाधिक सुलभ और लोकप्रिय

1, जनमाध्यम और पत्रकारिता, प्रवीण दीक्षित पृष्ठ–82

माध्यम है, इसकी लोकप्रियता का एक कारण यह भी है कि इस माध्यम के द्वारा जनता की भाषा मे, जनता के मन को छू जाने वाली बात सरलता से कही जाती है, सचार की यही पहली शर्त है, जिसे रेडियो पूरा करता है, और एक सफल सचार माध्यम बना हुआ है।

3. टी0 वी (दूरदर्शन) –

भारत मे टेलीविजन की स्थापना का बीजारोपण नवम्बर 1956 ई0 मे दिल्ली मे हुए यूनेस्को सम्मेलन मे हुआ था। इस सम्मेलन मे ही शिक्षा, ग्राम सुधार और सामुदायिक कार्यक्रम प्रारम्भ करने का प्रस्ताव स्वीकार किया गया। (1)

टी0वी0 देश का नवीनतम सचार माध्यम होते हुए भी आज एक अत्याधिक प्रभावी सचार माध्यम है। इन्सेट श्रृखला के उपग्रहो के सफलता पूर्वक प्रक्षेपण से पूरे देश में टीवी0 का तेजी से विस्तार हुआ है। पूरे देश मे 500 से भी अधिक ट्रासमीटरो का जाल फैला है और अनुमान है कि देश की 76 प्रतिशत जनसख्या इस माध्यम के सपर्क मे है।

दूरदर्शन के विभिन्न कार्यक्रम धारावाहिक, फिल्मे, स्वास्थ्य, सस्कृति, समाचार , चित्रहार, आदि कार्यक्रम समाज के सभी आयु वर्ग के लोगो को आकर्षित करने मे सफल है। सचार क्राति के फलस्वरूप सैकडो चैनलो का जाल फैल गया है। टी0वी0 के राष्ट्रव्यापी विस्तार ने विज्ञापन कंपनियो के लिए विस्तृत बाजार उपलब्ध करा दिया है। टी0वी0 आज एक प्रभावी और लोकप्रिय सचार माध्यम है।

1, जनमाध्यम और पत्रकारिता, प्रवीण दीक्षित पृष्ठ–82

रेडियो (आकाशवाणी) समाचार और दूरदर्शन के समाचार का अलग –अलग स्वरूप होता है, टी0वी0 पर समाचार सुनने के साथ ही घटनाक्रम को देखा जा सकता है चित्रात्मकता दूरदर्शन का प्राणतत्व है, एक चित्र हजार शब्दो के बराबर होता है, अपने इस गुण के कारण टी0वी0 आज सचार का सशक्त और प्रभावी माध्यम बनने मे सफल रहा है।

4. टेलीफोन –

टेलीफोन के द्वारा हजारो किलोमीटर दूर भी सवाद सभव हो गया है । सूचना देने और सूचना लेने मे टेलीफोन का अविस्मरणीय योगदान है, आजकल तो जनमत सर्वेक्षण मे टेलीफोन को भी एक माध्यम बनाया जाता है, भारत सरकार की नई सचार–नीति के कारण देश मे टेलीफोन का आश्चर्य जनक प्रसार हुआ है। कल तक विलासिता का उपकरण टेलीफोन आज जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।

5. कम्प्यूटर –

आधुनिक समय मे सर्वत्र कम्प्यूटर का वर्चस्व होता जा रहा है। शिक्षा, उद्योग, यातायात, नियत्रण चिकित्सा सुविधा, चुनाव सबधी भविष्यवाणी, मौसम सम्बन्धी सूचनाए और प्रशासन व्यवस्था सूचना प्रौद्योगिकी आदि मे कम्प्यूटर सर्वाधिक सक्षम सचार माध्यम है, पत्रकारिता जगत में अभूतपूर्व क्रान्ति लाने मे इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है । कम्प्यूटर मानव मस्तिष्क का पूरक है, मानव श्रेष्ठ है, वह सोचता है विचार करता है उसमे अनुभूति की क्षमता है, वह आविष्कार करने मे सक्षम है, मानव अनुभूति रूचि ज्ञान सवेदना से प्रभावित होता है, परन्तु जटिल और लबी गणनाओ को शुद्ध और शीघ्रता के साथ पूरा करने में, उतना सक्षम नही है, जितना कम्प्यूटर।

कम्प्यूटर के कारण समाचार जगत मे क्राति हुई है, कम्प्यूटर के कारण अब समाचार तत्काल कार्यालय मे प्राप्त हो जाते हैं। टेलीप्रिंटर और वीडियो मानीटर स्क्रीन से सवाद प्रेषण मे क्षिप्रता आई है। कम्प्यूटर के कारण परम्परागत समाचार पत्र के कार्यालय का कायाकल्प हो गया है, कम्पोजिग बहुरगी चित्रो एव पृष्ठ सज्जा सम्बन्धी कार्यो मे शुद्धता शीघ्रता और सुदरता लाने मे कम्प्यूटरो का योगदान महत्वपूर्ण है, कम्प्यूटर के मानीटर पर इलेक्ट्रानिक ढग से पेस्टिग सभव हो गयी है। पूरा पृष्ठ कैमरा के लिए तैयार हो जाता है। कम खर्चे मे पत्रो के मनचाहे कई सस्करण शीघ्रता से प्रकाशित हो रहे है। (1)

6. स्क्रैन सेवा –

प्रेस ट्रस्ट की स्कैन सेवा अत्याधुनिक सचार सेवा है, जिसमे टी0वी0 सदृश्य सेट पर 15–15 पक्तियो के समाचार प्रत्येक डेढ मिनट पर आते–जाते रहतें हैं,, 1982 ई0 मे शुरू यह पद्धति अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई है। टी0वी0 से मिलते जुलते सग्राहक उपकरण अब तो होटलो, मत्रालयो, कार्यालयो, मे दिन–रात अद्यतन समाचारो को भेज रहे हैं। (2)

7. वीडियों पत्रिका –

आज वीडियो पत्रिकाओ की धूम मची है, इडियन बुक हाउस ने वीडियो कैसेट पर एक पत्रिका " मूवी वीडियो" का प्रकाशन सन् 1988 ई0 मार्च महीने मे प्रारम्भ किया।

'इनसाइट और न्यूजट्रैक' जैसी अग्रेजी समाचार पत्रिकाओ के बाद अब हिदी बाजार मे भी वीडियों पत्रकारिता का जन्म हो चुका है, "कालचक्र" नाम से यह इस प्रकार का प्रथम प्रयास है। (3)

1,2,3, आधुनिक पत्रकारिता, डा0 अर्जुन तिवारी, पृष्ठ– 127,128

सचार माध्यम के रूप मे वीडियो एलबम एक लोकप्रिय माध्यम सिद्ध हो रहा है, वर्तमान समय मे प्रकाशित अनगिनत वीडियो एलबमो की सख्या और इनकी लोकप्रियता से इस माध्यम के प्रभाव का अनुमान लगाया जा सकता है।

फैक्स –

सचार का आधुनिक और शीघ्र सदेश प्रेषित करने का माध्यम, इसमे लिखित सामग्री, फोटो आदि कुछ क्षणो मे हजारो मील दूर फैक्स मशीन पर प्राप्त किये जा सकते है।

8. **पुस्तकें** –

लिखित शब्द का युगो से मानव सम्यता लिए महत्वपूर्ण स्थान रहा है, किसी भी युग मे इस लिखित शब्द का प्रभाव कम नहीं हुआ, बल्कि क्रमश यह प्रभाव निरन्तर बढता ही जा रहा है, आज जबकि सचार क्रान्ति हो चुकी है, और अनेक प्रकार के जनसचार के माध्यम सुलभ है। तब भी मुद्रित शब्दो का अपना विशेष महत्व है, पुस्तके मानव के विचारो के संचार का माध्यम बनती है इस लिए उनका दूसरा कोई विकल्प नही है। (1)

" पुस्तको से अधिक स्थाई जनमाध्यम इस वैज्ञानिक युग मे भी अभी तक नही है, इसीलिए पुस्तको को अब भी जीवन पर गहरा प्रभाव डालने वाला जनसंचार माध्यम माना जाता है।" (2)

पुस्तके सचार का ऐसा माध्यम है, जिसमें समाज के सभी वर्गो अल्पशिक्षित से लेकर उच्च शिक्षित बच्चे बूढे स्त्री पुरूष बिना किसी भेदभाव के किसी भी समय ज्ञान, शिक्षा, आनन्द, मनोरजन, प्रेरणा प्राप्त कर सकते है।

1,2, जनमाध्यम और पत्रकारिता, प्रवीण दीक्षित पृष्ठ–19
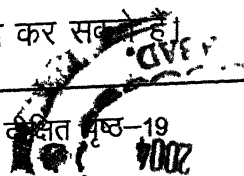
डा0 श्याम सिह शशि (प्रकाशन विभाग भारत सरकार) के अनुसार '6 अच्छी पुस्तक एक सगिनी है। उत्तम मित्र है, और जीवन मे आगे बढने का दिशा बोध कराती है, बाल्मिकी की रामायण हो या इलियड की ओडिसी हो या महाभारत, रामचरित मानस हो या सूरसागर सभी ने मानव चितन को एक नई दिशा दी है, किसी स्थान प्रजाति या प्रजाति विशेष तक ही इनका क्षेत्र सीमित नही रहा, बल्कि देश से परे हटकर इनकी उपलब्धियॉ रही है, पुस्तको के इसी प्रभाव के बारे मे इस विख्यात फासिसी साहित्यकार ने कहा था कि " अच्छी पुस्तके विश्व पर शासन करती है।" (1)

9. फिल्म (चलचित्र) –

लेनिन ने एक बार कहा था कि " जनसचार के माध्यमो मे फिल्म ही एक मात्र ऐसा माध्यम है, जो अधिक से अधिक लोगो को सरकार के लक्ष्यो और नीतियो के बारे मे अवगत करा सकता है। जिस देश मे साक्षरता की दर कम हो, वहॉ तो फिल्म का महत्व और भी बढ जाता है।" (2)

चलचित्र हमारे आधुनिक जीवन मे इतने सामान्य हो गये है कि यह कल्पना भी मुश्किल होती है कि आज सौ साल पहले उनका अस्तित्व ही नही था। चलचित्र आज मनोरंजन का एक प्रभावी माध्यम बन गये हैं, इतना ही नहीं चलचित्र आज एक कला विशेष तथा अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप मे आधुनिक समाज का एक आवश्यक तत्व बन गये है।

चलचित्रो मे दर्शको को प्रभावित करने की अद्‌भुत क्षमता है, प्रदर्शन के समय वे प्रत्यक्ष रूप से दर्शको की चेतना को इस तरह प्रभावित करते हैं, कि दर्शक अपने वास्तविक जीवन मे भी प्रभाव अनुभव करता है आज के युवा वर्ग

1,2, जर्नसम्पर्क – लेखक मदन गोपाल पृष्ठ 42

पर चलचित्रो का बहुत गहरा प्रभाव है अपने जादुई असर के कारण चलचित्र सचार का प्रभावशाली माध्यम है।

10 <u>वृतचित्र</u> –

वृतचित्र (Documentary) मे जीवन के यथार्थ का व्याख्यात्मक चित्रण किया जाता है, इसका उद्देश्य सामान्य चलचित्रों के समान "मनोरजन" प्रधान न होकर शिक्षा, सूचना तथा सदेश प्रधान होता है, इसी लिए वृतचित्र को विशुद्ध जनसचार माध्यम कहा जा सकता है। (1)

सन् 1929 ई0 मे एक अमरीकी कपनी द्वारा " एस्कीमो" लोगो के जीवन पर आधारित एक छोटी सी फिल्म देखने के पश्चात जान ग्रियर्सन ने न्यूयार्क "सन" पत्रिका मे इसके लिए " डाकूमेट्री" शब्द का प्रयोग किया था। (2)

मुद्रित माध्यम मे जिस प्रकार फीचर लिखे जाते है उसी प्रकार जनता को सूचित और शिक्षित करने के लिए वृतचित्रो का निर्माण किया जाता है, वृतचित्रो के अर्न्तगत विज्ञापन चित्र लघुचित्र, कार्टून चित्र और सूचना चित्र आदि का समावेश हो जाता है।

11. <u>प्रदर्शनी</u> –

प्रदर्शनी एक जाना माना सचार माध्यम है यह वस्तुओ का प्रदर्शन ही नही करता, अपितु सदेश पहुँचाने का भी एक साधन है, साप्ताहिक बाजार, मेला आदि के अवसरो पर विभिन्न सरकारी सगठन, स्वयसेवी सगठनो, उद्योगो द्वारा अपनी वस्तुओ और सेवाओ के सम्बन्ध मे जानकारी देने के लिए प्रदर्शनी लगाई

1,2, जनमाध्यम और पत्रकारिता, प्रवीण दीक्षित

जाती है प्रदर्शनी द्वार प्रचार और बिक्री एक साथ हो जाती है साथ ही जनता को प्रत्यक्ष सपर्क भी हो जाता है।

12. <u>विभिन्न माध्यमों द्वारा विज्ञापन</u> –

जनता तक अपनी बात पहुँचाने का सबसे सरल माध्यम विज्ञापन है आज के समय मे विज्ञापन के लिए अनगिनत माध्यम उपलब्ध हैं, जिसे विज्ञापन दाता अपनी सुविधानुसार प्रयुक्त करता है। माचिस की नन्ही सी डिब्बी से लेकर पूरी ट्रेन तक को विज्ञापन का माध्यम बना लिया जाता है, सुबह होने से लेकर रात सोने तक आम आदमी विज्ञापन मे ही रहता है,। सुबह का अखबार हो या टीवी रेडियो, घर से बाहर निकलने पर पूरे रास्ते, दिवारो, बसो, टैक्सियो और जगह –जगह लगे बडे–बडे होर्डिंग्स, सभी जगह विज्ञापन ही देखने को मिलता है। आज वस्तुओ के उत्पादन पर आने वाली लागत से अधिक विज्ञापन पर खर्च किया जाता है और उपभोक्ता भी उन्ही वस्तुओ के प्रति सम्मोहित होता है, जिनका विज्ञापन वह अधिक देखता या सुनता है, विज्ञापन के कुछ अन्य माध्यम है –

<u>पोस्टर (हैंडबिल, पैम्पलेट, फोल्डर)</u>–

वस्तु या सदेश के प्रचार के लिए पोस्टर, हैडबिल, पम्पलेट, फोल्डर का प्रयोग किया जाता है, पोस्टर अनेक रग और आकार के होते हैं, जिन्हे दिवारो आदि पर चिपका कर प्रचार किया जाता है।

पैम्फलेट एक छोटे आकार के कागज पर मुद्रित सदेश होता है, जिसे हजारो, लाखो की संख्या मे वितरित करवाया जाता है।

फोल्डर एक लघु पुस्तिका होती है, जिसमे सदेश सम्बन्धित सूचनाए मुद्रित होती है, राजनीतिक दल चुनाव प्रचार मे इस माध्यम का प्रयोग करते हैं।

2 **होर्डिग्सं** –

विज्ञापनदाता अपने सदेश के प्रचार के लिए होर्डिग्स को माध्यम बनाते हैं, शहर के चौराहो, रेलवे–स्टेशन, स्कूल–कालेज के आस–पास पुल, सिनेमाघर आदि स्थानो के निकट जहॉ से अधिकाश जनता प्रतिदित गुजरती है, लोहे या लकडी के बडे–बडे बोर्ड जिन पर सदेश अकित रहता है। होर्डिग्स सचार का प्रभावी माध्यम है।

3 **तस्वीरे** –

विज्ञापन को अधिक प्रभावी बनाने के लिए तस्वीरो को माध्यम बनाया जाता है ये तस्वीरे कैमरे द्वारा ली गई, हाथ से बनाई गयी तस्वीरे, कार्टून आदि हो सकते है, कभी–कभी विज्ञापन मे नयापन लाने के लिए मात्र तस्वीर का सहारा लिया जाता है, सदेश दर्शको की कल्पना पर छोड दिया जाता है।

समाचार , रेडियो टीवी0, फिल्म, कम्प्यूटर, आदि माध्यम से भी विज्ञापन प्रसारित किऐ जाते हैं।

स्वातत्र्योत्तर भारत मे सचार माध्यमो का तेजी से विस्तार हुआ है, नब्बे के दशक मे तो "सचार–क्राति" हो गई। " सचार–क्रांति" के कारण आज पूरा विश्व एक ग्राम बन गया है। हजारो किलोमीटर दूर मात्र कुछ सेकेड मे घर बैठे बात किया जाता सकता है, इटरनेट द्वारा अब घर बैठे एक साथ विश्व के विभिन्न भागो मे बैठे व्यक्तियो से सवाद किया जा सकता है। इतने प्रभावी

सचार माध्यम उपलब्ध होने के बावजूद स्थानीय महत्व के सचार माध्यमो का महत्व कम नही हुआ है। परम्परागत सचार माध्यमो ने समय के अनुसार स्वय को परिवर्तित कर समाज मे अपनी उपयोगिता सिद्ध कर दी है। साक्षरता के प्रसार मे जितना महत्व कम्प्यूटर का है तो कठपुतली का महत्व कम नही है, मौखिक प्रचार आज भी उतना ही प्रासगिक है, जितना पहले था।

सचार माध्यमो का प्रभाव उनकी भाषा पर निर्भर करता है, स्थान विशेष की भाषा मे अपना सदेश सही समय और ढग से देने पर वह प्रभावी होता है, विदेशी चैनल "स्टार प्लस" भारत मे अग्रेजी कार्यक्रमो के लिए जाना जाता था। जनता मे उसकी लोक प्रियता शून्य थी। इस चैनल के अधिकारियो ने इस कमी को महसूस किया और आम जनता की भाषा अर्थात हिंदी मे स्तरीय कार्यक्रम प्रसारित करने का निश्चय किया। जिसके परिणाम स्वरूप के0 बी0 सी0 तथा अन्य धारावाहिको का प्रसारण शुरू हुआ। आज 'स्टार–प्लस' लोकप्रियता मे हिन्दी के चैनलो जी0टी0वी0, सोनी, दूरदर्शन को कडी चुनौती दे रहा है। अत. सचार माध्यम भाषा के द्वारा ही सफलता प्राप्त करने मे सक्षम हो सकते हैं।

उपसंहार

हिन्दी पत्रकारिता अपने जन्म से ही अपने अस्तित्व और स्वतत्रता के लिए सघर्ष के लिए सघर्ष करती रही। अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए उसे स्वतत्रता की आवश्यकता थी और स्वतत्रता प्राप्त करने के लिए हिन्दी पत्रकारिता का जीवित रहना आवश्यक था, और ब्रिटिश सरकार आजादी की लडाई और भारतीय पत्रकारिता (विशेषकर हिन्दी पत्रकारिता) को अपने अस्तित्व के लिए खतरा समझती थी, यही कारण था कि सरकार भारतीय पत्रकारिता के जन्म से ही उसे हर प्रकार से प्रतिबन्धित करने का प्रयास करती रही। भारतीय स्वतत्रता सेनानी प्रेस की क्षमता से भली भॉति परिचित हो गये थे, इसीलिए हर प्रकार से प्रतिबन्धित किये जाने के बावजूद एक पत्र बन्द हो जाने पर दूसरा पत्र का प्रकाशित होने लगता था। इस तरह पत्रकारिता आजादी की दीपशिखा को जन–जन मे प्रज्ज्वलित करने का प्रभावी माध्यम बन गयी थी, लगभग सभी स्वतत्रता सेनानी, लोकमान्य तिलक, लाला लाजपतराय, महात्मा गॉधी, पण्डित नेहरू, भगत सिह, आदि किसी न किसी समाचार पत्र से अवश्य जुडे हुए थे। कुछ ऐसे पत्रकार, साहित्यकार भी थे जो प्रत्यक्ष रूप से आजादी की लडाई मे शामिल नही थे, किन्तु उनके पत्र ब्रिटिश हुकुमत को चुनौती देने को सदैव तत्पर रहते थे ऐसा एक पत्र था " भारत मित्र" बालमुकुन्द गुप्त अपनी ओजस्वी लेखनी से ब्रिटिश हुकूमत के अविवेकपूर्ण निर्णयो पर प्रश्नचिन्ह लगाते रहते थे, नृसिह, स्वदेश, कर्मयोगी, कर्मवीर, स्वदेश, आज, विप्लव, और प्रताप ऐसे पत्र थे जिनका प्रत्येक अक ब्रिटिश सरकार के प्रभाव को क्रमश नष्ट करने मे सहायक था, पत्रकारिता मे अपने दायित्वो का सफलता पूर्वक निर्वाह करने के लिए पत्रकारो ने अर्थदण्ड, कारावास देश–निर्वासन सभी दण्ड सहर्ष सहे, किन्तु देश–हित से समझौता

करना स्वीकार नही किया। लोकमान्य तिलक, लाला लाजपत राय, बाल मुकुन्द गुप्त, बाबूराव विष्णु पराडकर, गणेश शकर विद्यार्थी आदि ऐसे पत्रकार थे जिन्होने अपने लेखो द्वारा ब्रिटिश हुकूमत की नीव हिला दी। आजादी का सघर्ष अस्तित्व का सघर्ष बन गया और इस सघर्ष मे पत्रकारिता बिजयी रही। दीर्घ सघर्ष और बलिदान के बाद आजादी का सूर्य उदित हुआ, किन्तु विभाजन का ग्रहण लेकर।

विभाजन के साथ ही सही आजादी जो कल तक स्वप्न थी आज जनता के द्वार पर खडी थी और भारतीय जनमानस कुछ समय तक आजादी के स्वर्णिम कल्पनाओ मे खोया रहा, तभी उसे 1962 मे चीन के आक्रमण का गहरा झटका लगा। आजादी का सर्वाधिक लाभ मिला हिन्दी पत्रकारिता को जो अब तक ब्रिटिश सरकार के दोहरे मापदण्डो का शिकार होती रही, सरकारी प्रतिबन्धो के खत्म होने के कारण पूरे देश मे हिन्दी पत्रिकाओ की सख्या मे अप्रत्याशित वृद्धि हुई। हिन्दी पत्रकारिता का केन्द्र बनी दिल्ली, जहॉ से दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक आदि विविध काल अवधि के पत्र–पत्रिकाए प्रकाशित होती है, दिल्ली के साथ–साथ मुम्बई, कलकत्ता, इलाहाबाद, पटना भी हिन्दी पत्रकारिता के गढ बन गये। काल अवधि के अन्तराल होने के साथ ही विषय वस्तु मे भी विविधता आने लगी, दैनिक समाचार पत्र अपने मे सम्पूर्णता लाने के प्रयास मे है। कुछ महत्वपूर्ण हिन्दी पत्र सप्ताह के सात दिन अलग – अलग विशेषाक प्रकाशित करते है। इतनी विविधता के बावजूद समाचार पत्र के साथ पत्रिकाओ का महत्व कम नही हुआ है, शहरी मध्यवर्गीय परिवार दैनिक समाचार पत्र के साथ बच्चो की पत्रिका (नन्दन, चपक आदि) महिलाओ की पत्रिका (मनोरमा, वामा आदि), फिल्मी–पत्रिका (मायापुरी फिल्म फेयर) और सामाजिक पत्रिका (सरिता, मुक्ता आदि) के

पाठक है, वही परिवार के बुजुर्ग सदस्य धार्मिक पत्रिकाओ (कल्याण, अखण्ड, ज्योति) के पाठक है इसके साथ ही परिवार मे स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के कारण स्वास्थ्य पत्रिका निरोगधाम आदि के प्रति रूचि बढ रही हे। खेल के प्रति बढते रूझान के कारण खेल पत्रिकाओ की सख्या और लोक प्रियता मे वृद्धि हो रही है।

शिक्षा का प्रसार और रोजगार की समस्या और तीव्र प्रतियोगिता के कारण शिक्षा रोजगार और प्रतियोगिता शिक्षापरक पत्रिकाओ की लोक प्रियता मे तीव्र वृद्धि हुयी है। विज्ञान–पत्रिका (विज्ञान प्रगति) और प्रतियोगिता दर्पण जैसी पत्रिकाओ की प्रसार सख्या मे अप्रत्याशित वृद्धि है। प्रतियोगिता परीक्षाओ मे अपनी उपयोगिता के कारण योजना, कुरूक्षेत्र जैसी सरकारी पत्रिकाए अपनी लोकप्रियता बढाने मे सफल हुयी है।

अपराध विषयक पत्रिकाए (मनोहर कहानियॉ, नूतन कहानियॉ) अपनी सनसनीखेज विषयवस्तु के कारण समाज मे विशेष उपयोगिता न होने के बावजूद लोकप्रियता बनाने मे सफल रही है।

अन्य पत्रिकाए व्यापार, उद्योग, कृषि, शिक्षा, शोध आदि पत्रिकाए समाज के कुछ विशिष्ट वर्ग के लिए उपयोगी होने के कारण विशेष वर्गो मे लोकप्रिय है।

साप्ताहिक, पाक्षिक पत्रिकाए (धर्मयुग, साप्ताहिक, हिन्दुस्तान, दिनमान, रविवार, माया) सत्तर और अस्सी के दशक मे अत्याधिक लोकप्रिय थी। अपनी विषयवस्तु, आकर्षक साज–सज्जा के कारण हिन्दी पत्रकारिता मे ये अपना

महत्वपूर्ण स्थान बनाने मे सफल रही, किन्तु कुछ विशिष्ट कारणो से एक–एक कर सभी पत्रिकाए बन्द हो गयी और स्थित यह हो गयी कि राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी पत्रिकाओ का अकाल सा पड गया इस कमी अतिशीघ्रता से पूरा किया, पत्रिका ''इण्डिया टुडे'' ने जो अब पाक्षिक से साप्ताहिक हो गयी ।

हिन्दी पत्रकारिता मे लघु पत्रिकाए सख्या मे अधिक होने के बावजूद व्यावसायिकता से अलग रहने के सकल्प से बधी होने के कारण आर्थिक सकट से जूझती रहती है और ये पत्रिकाए जनता की बात कहने का दावा करने के बावजूद स्वय को जन सामान्य से जोडने मे असफल रही है, इनका प्रसार विश्वविद्यालय के प्रोफेसरो शोध छात्रो और पुस्तकालयो तक ही सीमित है'' हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता के लिए यह शुभ सकेत नही है।

आर्थिक सकट और सरकारी उपेक्षा के बावजूद हिन्दी पत्रकारिता की स्थिति सतोष जनक है। सभी हिन्दी पत्र–पत्रिकाए अपना एक राष्ट्रीय लक्ष्य रखती है, जो विविध भाषा–भाषी भारत के लिए एक कठिन लक्ष्य होते हुए भी असभव नही है, इस असभव लक्ष्य के निकट पहुँचने मे हिन्दी पत्रकारिता सफल रही है।

हिन्दी पत्रकारिता मे भाषा का अध्ययन करने पर हिन्दी पत्रकारिता मे भाषा के विविध रूप सामने आते है। भाषा को प्रभावित करने मे दैनिक समाचार पत्रो की भूमिका महत्वपूर्ण है। कम समय मे अधिक से अधिक सूचना पाठको तक प्रेषित करना इनका दायित्व होता है, इस दायित्व को निभाने के लिए पत्रकार अपने विशेषाधिकार का प्रयोग कर यथावसर नये शब्दो की रचना कर लेते है यही कारण है कि दैनिक पत्रो की भाषा सर्वाधिक

परिवर्तनशील और विविधता पूर्ण होती है, समाचारो की भाषा मे शब्द, वाक्य पद के स्तर पर विविधता और नवीनता होती है। समाचारो की भाषा की विविधता का रूप राजनीतिक, सामाजिक, खेल–जगत, बाजार भाव, सपादकीय लेख, कार्टूनो, पाठको की पत्रो की भाषा साप्ताहिक विशेषाक साहित्यिक खड, फिल्म जगत लेखो (फीचर), समीक्षा और साप्ताहिक भविष्य फल आदि वर्गीकरण मे प्राप्त होता है। इन सभी विविध भाषा रूपो मे नवीनता रोचकता और सम्प्रेषणीयता का गुण पाया जाता है। समाचारो मे शीर्षक के आधार पर विविधता प्राप्त होती है, प्रमुख शीर्षक है प्रासगिक, मुख्य, गौण और मध्यस्थ, शीर्षक समाचार का आकर्षण बढाने मे सक्षम होते है, क्योकि वर्तमान समय मे समय की अभाव के कारण पाठक मुख्यत समाचार की अपेक्षा शीर्षक पर ही अधिक ध्यान देते है, यही कारण है कि शीर्षको की रचना, प्वाइट साइज और साज सज्जा की ओर ध्यान दियाजाता है। विविध भाषा रूपो मे दोषो के विविध रूप भी प्राप्त होते है, जो शब्द, वाक्य, लिग, वचन, और क्रिया के स्तर पर होती है। स्वातत्र्योत्तर हिन्दी पत्रकारिता मे विशुद्ध, जन्मोमुख प्रयोगधमी अनुदित, शिथिल और विविध भाषा रूप आदि विशेषताए पाई जाती है जो भाषा को जीवन्त बनाती है।

पत्रकारिता का अध्ययन करते समय एक शब्द बार–बार प्रयुक्त होता है, और उसका प्रभाव बार–बार दिखाई पडता है वह है "विज्ञापन"। पत्रकारिता मे विज्ञापन का वही महत्व है, जो मानव जीवन मे रक्त सचार प्रणाली का होता है पत्रकारिता और विज्ञापन एक दूसरे पूरक हैं। बिना विज्ञापन के पत्रकारिता सभव नही है, उसी प्रकार स्वतत्र विज्ञापन भी एक कठिन कार्य है, आजकल विज्ञापन के अनगिनत स्त्रोत खुल गये है, किन्तु विज्ञापन के उचित प्रभाव के लिए किसी न किसी माध्यम का सहारा लेना पडता है, चाहे वह

फिल्म हो, धारावाहिक हो या समाचार पत्र–पत्रिकाए। माध्यमो की विवधता के कारण विज्ञापन की शैली, विषयवस्तु मे अन्तर प्राप्त होता है, किन्तु इसका मुख्य उद्देश्य यही होता है कि विज्ञापन को अधिक से अधिक लोगो तक प्रेषित किया जा सके। यही कारण है कि विज्ञापन की भाषा मे जनोन्मुख्ता बढती जा रही है, जनोन्मुख भाषा के कारण विज्ञापन मे साहित्यिकता, माधुर्य, अनुप्रासमयता, के साथ अग्रेजी शब्दो की बहुलता और अनौपचारिक भाषा के प्रयोग मे वृद्धि हुई है।

पत्रकारिता एक "मिशन" "व्यवसाय" होने के साथ साथ जनसचार का माध्यम भी है। स्वातत्र्योत्तर भारत मे सचार माध्यमो मे आश्चर्यजनक वृद्धि हुयी है, आधुनिक सचार माध्यमो के महत्व मे वृद्धि हुयी है किन्तु परम्परागत सचार माध्यमो का महत्व कम नही हुआ है। सभी जनसचार माध्यम एक दूसरे से जुडे हुये है स्थान और स्थिति के अनुसार किसी का महत्व बढ जाता है और किसी का घट जाता है, किन्तु सभी का लक्ष्य यही होता है जन सामान्य को सूचना सम्प्रेषित करना। लोकतत्र मे सूचना प्राप्त करने अधिकार महत्वपूर्ण है। सचार माध्यमो की सफलता इसी से प्रमाणित होती है, कि स्वतंत्रता के बाद भारत की सत्तर प्रतिशत अशिक्षित जनता अपने मताधिकार का प्रयोग कर सत्ता परिवर्तन करने मे सफल रही, सचार माध्यमो के इस प्रभाव के कारण शासक वर्ग " येन केन प्रकारेण" जनता के सूचना प्राप्त करने के अधिकार को सीमित करने के प्रयास मे लगा रहता है। स्थिति बहुत अच्छी न होते हुए निराशा जनक नही है, भारत का लोकतत्र और पत्रकारिता, प्रगति की राह पर है और यह पत्रकारिता की विजय यात्रा है।

संदर्भ ग्रंथ – सूची

1 **आधुनिक पत्रकारिता** – डा0 अर्जुन तिवारी विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी 1994

2. **आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास** – डा0 बच्चन सिह सशोधित सस्करण 1997 लोकभारती प्रकाशन

3. **जनमाध्यम और पत्रकारिता** – प्रवीण दीक्षित भाग–1,2 प्रथम सस्करण प्र0 विश्वनाथ अग्रवाल कानपुर 208001 1980

4. **जनसम्पर्क** – मदन गोपाल, प्रथम सस्करण 1991–प्रकाशक–प्रकाशन विभाग, सूचना एव प्रसारण मत्रालय, भारत सरकार

5. **जनसचार के विविध आयाम** – बृजमोहन गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम सस्करण

6. **जनसचार और हिंदी पत्रकारिता** – डा0 अर्जुन तिवारी– जयभारती प्रकाशन, लालजी मार्केट, माया प्रेस रोड, प्रथम संस्करण

7 **पत्रकारिता के अनुभव** – इन्द्र विद्या वाचस्पति, दिल्ली नेशनल पब्लिसिग हाउस 1960

8 **पराड़ कर जी और हिंदी पत्रकारिता** – लक्ष्मी शकर व्यास, काशी भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन 1960

9 **भारतीय शैली–विज्ञान** – डा0 सत्यदेव चौधरी, अलकार प्रकाशन दिल्ली 1979

10 **भारतेन्दु हरिश्चन्द** – डा0 राम विलास शर्मा– प्रथम सस्करण, प्रकाशक दिल्ली विद्याधाम 1955

11 **लोकराज वार्षिकी** – स्वतत्रता के पत्रकारिता का माहौल– मन्मथ नाथ गुप्त प्रथम सस्करण 1977

12 **समाचार पत्रो की भाषा** – डा0 माणिक मृगेश– प्रथम सस्करण 1999 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 110002

13 **समकालीन पत्रकारिता** – स0 राजकिशोर– प्रथम सस्करण 1994 वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 110002

14 **सरचनात्मक शैली विज्ञान** – डा0 रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव आलेख प्रकाशन दिल्ली 1979

15 **स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास में मानव मूल्य और उपलब्धियां** – डा0 भगीरथ बडोले, प्रथम सस्करण, प्रकाशक स्मृति प्रकाशन, 124 शहरारा बाग इलाहाबाद 211003

16 **स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी का विकास** – डा0 सूबेदार राय प्रथम सस्करण जुलाई 1981 प्रकाशक अनुभव प्रकाशन, श्री नगर कानपुर–1

17. **साहित्यिक पत्रकारिता** – डा0 राम मोहन पाठक प्रथम सस्करण 1989 प्रकाशक, ज्ञानमण्डल लिमिटेड विक्रम भवन लका, वाराणसी 221005

18. **हिंदी पत्रकारिता:विविध आयाम** – स0 डा0 वेद प्रताप वैदिक, प्रथम सस्करण 1979 प्रकाशक नेशनल पब्लिसिग हाउस, नई दिल्ली

19. **हिंदी पत्रकारिता,विविध परिदृश्य** – सजीव भानावत रचना प्रकाशन, जयपुर प्रथम सस्करण 1992

20. **हिंदी पत्रकारिता** – डा0 कृष्ण बिहारी मिश्र प्रथम सस्करण दिल्ली, भारतीय ज्ञान पीठ प्रकाशन 1969

21. **हिंदी साहित्य का इतिहास** – आचार्य राम चन्द्र शुक्ल, प्रथम सस्करण

22. **हिंदी साहित्य का इतिहास** – डा0 नगेन्द्र, परिवर्द्धित सस्करण 1991, प्रकाशक, मयूर पेपर बैक्स, विश्व विद्यालय स्तरीय, 23 दरियागज, नयी दिल्ली 110002

23. **हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास** – डा0 राम स्वरूप चतुर्वेदी सस्करण 1991, लोक भारती प्रकाशन, 15 ए महात्मा गाधी मार्ग

24. **हिंदी विज्ञापनों की भाषा** – आशा पाण्डेय, प्रथम सस्करण 1986 प्रकाशक ब्लेकी एड सस पब्लिशर्स प्रा0 लि0

पत्र–पत्रिकाओं की सूची –

1 नवभारत टाइम्स

2 स्वतत्र भारत

3 जनसत्ता

4 पजाब केसरी

5 हिन्दुस्तान

6 अमर उजाला

7 दैनिक जागरण

पत्रिकाएं

1 धर्मयुग

2 इडिया टुडे (साहित्य वार्षिकी 1994)

3 आजकल–स्वर्ण जयती अक 1994

4 हस